𑒏𑒫𑒱𑒫𑒩 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒗𑒰
𑒩𑒔𑒢𑒰𑒫𑒪𑒲

कविवर जीवन झा
रचनावली

सम्पादक

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
डॉ. रामदेव झा

मैथिली अकादमी, पटना

Scanned by CamScanner

कविवर जीवनझा रचनावली

(सामवती-पुनर्जन्म, सुन्दर-संयोग, नर्मदा-सागर
ओ स्फुट गीत)

सम्पादक
पण्डित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
डॉ० रामदेव झा

Dr. Ramdeo jha

मैथिली अकादमी
पटना

Scanned by CamScanner

मैथिली अकादमी प्रकाशन —४६

प्रकाशक :

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णपुरी, पटना : 800001

(C) मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-८०००१

प्रथम संस्करण : १९८०

द्वितीय संस्करण : १९८५

प्रति : ११००

तृतीय संस्करण : १९८९

प्रति : ११००

मूल्य : अजिल्द ~~: १४.००~~ (चौदह टाका) मात्र।

28

मुद्रक :

श्रीजानकी प्रिंटिंग प्रेस

भिखनापहाड़ी, पटना-4

प्रकाशकीय

अकादमीक योजना अछि जे उत्कृष्ट कोटिक स्वर्गीय साहित्यकार लोकनिक ग्रन्थावली प्रकाशित कयल जाय। एही योजनाक अन्तर्गत प्रस्तुत पुस्तक मैथिलीक अर्चनामे समर्पित अछि। एहिमे कविवर जीवन झाक अद्यपर्यन्त उपलब्ध समस्त रचना—सामवती-पुनर्जन्म, सुन्दर-संयोग, नर्मदासागर ओ छिटफुट गीत—एकत्र संगृहीत अछि। ऐहिमे सामवती-पुनर्जन्म नाटकक पूर्वमे चारि-चारि संस्करण निकलि चुकल अछि, जाहिसँ लेखकक लोकप्रियता प्रमाणित अछि। सुन्दर-संयोग सेहो एक वेर प्रकाशित भेल छल। किन्तु नर्मदासागर ओ स्फुट गीत सभ पहिल बेर पुस्तकाकार प्रकाशित भ' रहल अछि, जकर उद्धार विद्वान् सम्पादकद्वय अति प्राचीन पत्रिका 'मैथिल-हित-साधन'क जीर्ण-शीर्ण पात सभसँ कयलनि अछि। एहि हेतु सम्पादक-द्वय धन्यवादार्ह थिकाह। खेदक विषय जे एहन उत्कृष्ट साहित्यकारक रचना चिर कालसँ बजारमे अनुपलब्ध छल। एहि प्रकाशनसँ एक चिरानुभूत अभावक अन्त भेल अछि। आशा अछि जे मैथिली जगत् एकर हार्दिक स्वागत करत।

एहिमे ऐतिहासिकताक रक्षाक हेतु मूलक वर्तनी ओ पाठ अक्षरशः यथावत् रखबाक प्रयास कयल गेल अछि ओ पाठोद्धारहुक कोनो प्रयत्न नहि कयल गेल अछि। एहिसँ स्पष्ट लक्षित होयत जे मैथिलीमे वर्तनीक बिकास कोन क्रमेँ होइत गेल अछि।

एहि प्रकाशनक एक महत्वपूर्ण वस्तु अछि एकर विशालकाय भूमिका। एहिमे विद्वान् सम्पादक परम श्रम ओ निष्ठासँ गहन ओ व्यापक खोज क' कविवर जीवन झाक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक सम्बन्धमे प्रचुर सामग्री प्रामाणिक रीतिसँ प्रस्तुत कयलनि अछि, जाहिसँ मैथिली-साहित्यक इतिहास पर बहुत रास नव प्रकाश पड़ैत अछि। विशिष्ट साहित्यकार लोकनिक छोट-छोट परिचय-पुस्तिका प्रकाशित करबाक योजना सेहो मैथिली अकादमी चलओलक अछि जकर अन्तर्गत उमापति ओ म० म० मुरलीधर झाक जीवनी छपि चुकल अछि। प्रस्तुत भूमिकामे जे सामग्री देल गेल अछि से वस्तुतः एही प्रकारक परिचय-पुस्तिकाक अनुरूप अछि, तेँ उचित छल जे ई एक परिचय-पुस्तिकाक रूपमे पृथक् छपैत। परन्तु जेँ ई भूमिकाक रूपमे लिखल गेल तेँ रचनावलीक संगहि छापल गेल अछि ओ एकहि संग दून् योजनाक काज सिद्ध भेल अछि।

प्रसंगवश इहो उल्लेखनीय अछि जे ग्रन्थावली प्रकाशन योजनाक अन्तर्गत चन्दा झा, रामकृष्ण झा 'किसुन', राजकमल, प्रो० हरिमोहन झा आदि साहित्यकारक रचनावलीक प्रकाशनमे सेहो हाथ लागल अछि। आशा अछि जे मैथिली जगत् एहि प्रकाशन सभक स्वागत करत।

पटना
३१ जनवरी, १९८०

श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार
भूतपूर्व अध्यक्ष, मैथिली अकादमी

Scanned by CamScanner

दोसर संस्करणक प्रसंग

'कविवर जीवन झा रचनावली'क द्वितीय संस्करण प्रकाशित करैत अकादमी प्रसन्नताक अनुभव क' रहल अछि। एकर प्रथम संस्करण १९८० ई० मे प्रकाशित भेल छल। प्रकाशित भेलाक बाद ई बिहारक अनेक विश्व-विद्यालयक बी० ए० तथा ऐम० ए०क पाठ्य पुस्तकक रूपमे स्वीकृत कयल गेल। एहि हेतु एहि विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम समितिक सदस्यलोकनिक प्रति अकादमी कृतज्ञता ज्ञापित करैत अछि।

एहि पुस्तकमे कविवर जीवन झाक—सामवतीपुनर्जन्म, सुन्दर संयोग, नर्मदा सागर सट्टक एवं स्फुटगीत सभ संगृहीत अछि। एहिमे पाठकगणकें कविवर जीवन झाक यावतो उपलब्ध—रचना एक ठाम उपलब्ध होयतनि। एहि पुस्तकक विस्तृत भूमिका सँ, जाहिमे गहन खोजक' कविवर जीवन झाक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक सम्बन्धमे प्रचुर सामग्री प्रस्तुत कयल गेल अछि, पाठकगणकें बहुत लाभ होयतनि से विश्वास अछि।

आशा अछि, एहि संस्करणक सेहो प्रथमे संस्करणक समान व्यापक स्वागत कयल जायत।

मदनेश्वर मिश्र
भूतपूर्व अध्यक्ष,
मैथिली अकादमी, पटना

पटना,
दिनांक ६ अक्तूबर, १९८५

बड़ हर्षक बात थिक जे कविवर जीवन झा रचनावलीक दोसर संस्करण प्रकाशित भ' रहल अछि। पं० जीवन झा आधुनिक मैथिली नाटकक प्रथम नाटकार छथि। एहि संग्रहमे हिनक समस्त रचना संग्रहीत अछि। एकर भूमिका जीवन झाक जीवन आ रचना पर गवेषणा कयनिहारक हेतु अत्यन्त प्रेरणादायक अछि। एहि गवेषणापूर्ण भूमिकाक हेतु सम्पादकद्वय धन्यवादार्ह थिकाह।

हम पूर्ण आशान्वित छी जे मैथिलीक सुधी पाठकगण एहि पुस्तक कें पढ़ि प्रसन्न होयताह।

इन्द्रकान्त झा
भूतपूर्व निदेशक-सह-सचिव
मैथिली अकादमी, पटना।

Scanned by CamScanner

पूर्वरंग

कविवर जीवन झा यज्वालय आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम नाटककार थिकाह। अपन नाट्यकृतिमे मैथिलीक पारम्परिक नाट्य-पद्धतिसँ भिन्न, अभिनव नाट्यवस्तु नाट्यशिल्प, भाव, भाषा इत्यादिक प्रयोग द्वारा नवीनताक श्रीगणेश कयलनि। केवल नाटके नहि, नाटकक माध्यमसँ मैथिली गद्य ओ गीतकें गीतक भाव ओ भाषाकें नव स्वरूप प्रदान कयलनि। कविवर जीवन झा मैथिलीक एक भावुक ओ कल्पनाशील कवि एवं गीतकार छलाह। हुनक रचनामे एहन माधुर्य ओ तरलता छनि जे सहजहि सहृदयक अन्तः-करणमे प्रवेश क' मुग्ध क' देबाक क्षमता रखैत अछि। वस्तुतः मैथिली गीत-कारमे जँ दुइ-चारि व्यक्तिक नाम लेल जाय तँ ओहिमे जीवन झाक नाम अवश्य अओतनि।

हम मानैत छी जे आधुनिक मैथिली साहित्यक शीर्षस्थ निर्मातृगणमे कविवर जीवन झाक स्थान अक्षुण्ण छनि। कवीश्वर चन्दा झा आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक थिकाह। परन्तु हुनक पश्चात् मैथिली साहित्यकें सर्जनात्मक दिशा प्रदान कयनिहार कविवर जीवने झा भेलाह।

वस्तुतः वर्त्तमान शताब्दीक प्रथम दुइ दशक धरि मैथिली साहित्यक वृहत्त्रयीमे एक टा नाम कविवर जीवने झाक अबैत छलनि। अन्य दुइ व्यक्ति छलाह कवीश्वर चन्दा झा ओ म० म० वैयाकरणकेसरी पं० परमेश्वर झा। १९१३ ई० मे मिथिला-मोदमे म० म० मुरलीधर झा म० म० परमेश्वर झाक 'मिथिला-तत्त्वविमर्श'क समीक्षा कयने छलाह। समीक्षा म० म० परमेश्वर झाकें सम्बोधित क' लिखल गेल छल। ओहि समीक्षाक आरम्भिक अंशसँ कविवर जीवन झाक प्रति ओहि कालक अक्षर-जगतक मान्यतापर प्रकाश पड़ैत अछि। मिथिला-मोदक ओहि अंशकें उद्धृत क' देब अधिक समीचीन होयत—

'इतः पूर्व ५० वर्षमध्य मिथिलाभाषाक अनुरागी मैथिल ३ मात्र प्रथम पं० चन्दा झा (चन्द्र कवि), दोसर पं० जीवन झा यज्वालय, (तेसर) अपनहि। एहि तीनू गोटा मध्य प्रथम महाशयक गद्यलेख

तथा द्वितीय जनक उभय अर्थात् गद्य ओ पद्य दुनू सर्व रोचक अपनेक गद्यात्मक लेख बहुत तथा संस्कृत-विद्याक आधिक्यो अपनेमे के नहि कहि सकैछ…।"[1]

एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे द्वितीय दशक धरि म० म० मुरलीधर झा 'मिथिलामोद ओ अन्य मैथिली प्रेमी जनक दृष्टिमे तीनिए गोट स्थापित साहित्यकार परिगणित छलाह जाहिमे जीवनो झाक स्थान छलनि।

आधुनिक कालक आरम्भिक चरणमे मैथिली भाषा ओ साहित्यक पुनरुत्थानक जे प्रयत्न, जे आन्दोलन आरम्भ भेल छल ताहिमे कविवर जीवन झाक योगदान ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि। एहि आन्दोलनसँ अधिकांश शिक्षित वर्ग सर्वथा निरपेक्ष छलाह। संस्कृत विद्वान् मैथिलीकेँ 'भाखा' ओ मैथिली साहित्यकेँ 'रजनी-सजनी' मानि तिरस्कृत कयने छलाह। दोसर दिस आधुनिक शिक्षित वर्ग एहि भाषाकेँ भर्नाक्युलर अर्थात् गमारक भाषाक रूपने हेय दृष्टिसँ देखैत छलाह। एहन परिस्थितिमे जे महानुभाव मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ प्रतिष्ठित ओ समृद्ध बनयबाक लेल प्रयत्नशील भेलाह से तँ पूज्य छथि, वरेण्य छथि।

ओहि कालमे मातृभाषाकेँ समृद्ध करबाक हेतु प्रबुद्ध वर्गक आह्वान कयल जाइत छल। लेखकक अभाव छल, परन्तु जे व्यक्ति मैथिली-लेखन क्षेत्रमे पदार्पण करैत छलाह से अन्यो व्यक्तिकेँ प्रोत्साहन दैत छलाह। एहि प्रकारक प्रयत्न एहि हेतु आवश्यक छल जे मैथिली लेखनसँ अर्थ प्राप्तिक तँ संभावना नहिएँ छल, यशहुक लाभ नहि, अपितु ओहि बदलामे अहम्मन्य विद्वन्मण्डलीमे उपहासे होइत छलैक। एहन समकालिक परिस्थितिमे काशी-नरेशक दानाध्यक्षक प्रतिष्ठित पदपर रहैत कविवर जीवन झा सन संस्कृत विद्वानक मैथिली लेखनक क्षेत्रमे अवतरण ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य मानल जायत। यदि जीवन झा किछु गीत, कवित्त वा किछु लेख लिखि दितथि तँ तकर ओतेक महत्त्व नहि होइत। हुनक लेखनक महत्त्व एहि बात ल' क' अछि जे ओ सुनिश्चित योजना बना क' मिथिला भाषामे रचना प्रारम्भ कयने छलाह।

मैथिली ओ मिथिलाक रंगमंचक अतीत अत्यन्त गौरवमय रहलैक अछि। परन्तु उन्नैसम शताब्दी धरि अबैत-अबैत ओकर स्वरूप छिन्न-भिन्न भ'

---

१. मिथिलामोद, वर्ष-८, भाद्रपद, उद्‌गार-८३, १३२१ साल।

गेलैक। मिथिलाक अभिनेता वर्ग रामलीला-अभिनयकें अपन व्यवसाय बनाब' लागल। दोसर दिस पारसी थियेटर समस्त उत्तरमे जोर पकड़ि लेलक। मिथिलाक दर्शक पारसी थियेटरक नकलमे अभिनीत होम' वाला घटिया हिन्दी उर्दू नाटक दिस विशेष आकृष्ट भेल। एहिसँ मैथिल रंगमंचक केहन शोचनीय स्थिति भ' गेल तकर परिचय म० म० मुरलीधर झाक एक टा टिप्पणीसँ भेटैत अछि —

"पूर्वक नर्तक मिथिलामे 'किरतनियाँ' (कीर्त्तनक) अद्यावधि प्रसिद्ध अछि ओ किरतनियाँक नाँच जे क्यो देखने होएब ओ लोकनि स्मरण करू जे मिथिला में कोन रूपें स्त्रीक परिधान छलैक। ओ सब पण्डितहि लोकनिक बनावल 'पारिजात-हरण' प्रभृति नाटकक अभिनय करैत छल ओ गोटेक आवहु करैत हो किन्तु दिनानुदिन 'शौकीन इशकबाज' बिहारी जन कारणें रासधारी, छोकड़बाजी ओ गोअर-नटुआ इत्यादि अनेक होइत २ सम्प्रति जहाँ देखू तहाँ गाँम २ क भलमानुसक नेना सँ लै छोटका जातिधरि "रोहित कुमार को काट लिया है साँप ने तारा" "हट्टो २ चल्लो…" विलक्षण स्वर ओ भाव करैत 'आह! की ठेठर होइत अछि', येह समाचार देखना आएल, जाहिसँ निश्चय होइत अछि जे जँ ई झाँक स्थिर रहल तँ ओ समय आबि गेल! जे थोड़केहि दिन में कैक गोटाक कान्यहु कें देखब जे 'थियेटर' मे सम्मिलित छथि तथा ओ तिरहुत बड़ सुन्दर गवैत छथि किन्तु अनेक प्राचीन पण्डित लोकनिक बनावल की अपूर्व २ बटगमनी, लगनी, उचिती, योग इत्यादि मिथिलाक कीर्त्ति नष्ट होमै पर अछि…।"[1]

एहि पृष्ठभूमिमे कविबर जीवन झाक नाट्य-रचनाक कतेक महत्त्व अछि, से सहज अनुमेय। अत: विश्वास कयल जयबाक चाही जे कविवर जीवनझाक रचनाक उद्देश्य छल योजनाबद्ध रूपसँ युगानुरूप नाटकक रचना ओ तकर अभिनव द्वारा मिथिलाक म्रियमाण नाट्य-परम्पराकें, रंगमंचकें पुनरुज्जीवित क' ओकरा नवीन युगक अनुरूप बनाय जनजीवनक सन्निकट आनब। ओही योजनाक अनुसार लोक प्रचलित भाषामे, गद्य-पद्यमे बेरा-बेरी चारि गोट नाट्यकृतिक रचना कयलनि। ओहि नाट्यकृतिक माध्यमसँ अपन सर्जनात्मक

१. मिथिलामोद, वर्ष ४, ज्येष्ठ, उद्गार ४४, सन १३१७ साल।

प्रतिभाक परिचय देलनि। भावी साहित्यकारक पथ प्रशस्त कयलनि।

कविवर जीवन झा संस्कृत ओ मैथिलीक निविष्ट विद्वान् एवं प्रतिभाशाली ओ सहृदय कविक रूपमे विशिष्ट स्थान रखैत छथि। परन्तु दुर्भाग्ये कहक चाही जे एखन धरि हुनक कोनो प्रामाणिक जीवनी प्रस्तुत नहि भ' सकल अछि। हुनक आरम्भिक जीवनवृत्त की छलनि, शिक्षा-दीक्षा कोना भेलनि, ककरा-ककरासँ कोन-कोन शास्त्रक अध्ययन कयलनि, कहिया एवं कोन रूपेँ रामनगरमे काशीनरेशक दानाध्यक्षक पदपर नियुक्ति भेलनि, ओहि पदपर रहैत हुनक जीवनक की गतिविधि रहलनि--एहि सभ विषयपर कोनो आधिकारिक सूचना उपलब्ध नहि अछि। एतेक धरि जे हुनक जन्म ओ मृत्युहुक समयक सम्बन्धमे एकवाक्यता नहि देखल जाइत अछि।

स्व० रमानाथ झा स्वसम्पादित मैथिली पद्य-संग्रहमे जीवनझाक परिचय दैत हुनक जीवनकालक सम्बन्धमे मौन रहि गेलाह[1] परन्तु प्राचीन गीतमे हुनक जीवनकाल १८५६ ई०सँ १९२० ई० धरि सूचित कयलनि।[2] ई कोन आधार पर सूचना देलनि से नहि कहि मुदा हिनके प्रमाण मानि लेल गेल माध्यमिक वर्गक पाठ्यग्रन्थ 'मैथिली गद्य-पद्य संग्रहमे।[3] डॉ० जयकान्त मिश्र १९४८-१९१२ ई० स्थितिकाल मानने छथि।[4] वस्तुत: इएह स्थितिकाल प्रमाण ओ तर्क सम्मत अछि।

कविवर जीवनझाक मृत्यु १९१२ ई०, सन् १३१९ सालमे वैशाख शुक्ल सप्तमी मंगलकेँ काशीमे भेल छलनि। ई सूचना मिथिलामोदमे छपल एक समाचारसँ भेटल अछि। मिथिलामोद जीवनझाक देहावसानक सूचना दैत शोक-समाचारमे जाहि रूपेँ श्रद्धाञ्जलि अर्पण कयने छल तकरा यथावत् उद्धृत क' देब अनुसन्धित्सुए लोकनिक लेल उपयोगी नहि होयत अपितु कविक जीवनकाल सेहो सुनिश्चित भ' जायत। १३१९ सालक वैशाख मासक अंकमे ई समाचार छल जे १९१२ ई० होयत—

१. मैथिली पद्य-संग्रह, सम्पा० रमानाथ झा; मैथिली साहित्य परिषद्, दड़िभंगा; १९४१, पृ० ६९।
२. प्राचीन गीत—सम्पा० रमानाथ झा; अनन्त-प्रकाशन, दड़िभंगा; पुनर्मुद्रण १९६८, पृ० २७५।
३. मैथिली गद्य-पद्य संग्रह—सं० जयदेव मिश्र, आनन्द मिश्र तथा उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'; बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना—१, पृ० १५३।
४. History of Maithili Literature, vol. II, p 135

Scanned by CamScanner

"वैशाख शु० ७ मंगल दिन 'हरिपुरवा'क यज्वालय पं० जीवनझा कें काशीलाभ भै गेलन्हि। ई सत्पुरुष साहित्यक बड़ मर्मवेत्ता छलाह, जाहिसँ महारोग ग्रस्तहु सन्तौं श्री १०८ मान् विद्यमान काशीराजक बड़ प्रेम पात्र छलाह। हिन्दीक तँ कोनो कथै नहि मिथिला भाषामे हिनक सन सरस ओ प्रसाद गुण युक्त प्रबन्धक रचयिता अपना समयमे एके छलाह। हिनक बनावल 'सुन्दर-संयोग' 'नर्मदासागर' (खण्डित) तथा 'मैथिलीसट्टक (खण्डित) अपूर्व छन्हि। आब ओकर पूर्ति के कै सकैछ। यद्यपि ओ २-३ वर्ष लैं गमनागमनादि सँ अक्षम छलाह किन्तु छलाह तँ, अस्तु की कैल जाय, समय एहने थिक। आशा करैत छी जे श्री १०८ विश्वनाथ हुनक आत्माकें शान्ति दै उक्त पण्डितजीक राज-जीविकापन्न सत्पुत्र कें दिनानुदिन तादृशे सुयोग्य बनौथिन्हि।"[1]

सुन्दर-संयोगक तेसर संस्करण मे 'ग्रन्थकारक संक्षिप्त परिचय' मे दामोदरझा सूचित कयने छथि जे—अन्तमे ६४ वर्षक अवस्था मे काशी लाभ कएलन्हि।' ई निश्चित भ' गेल जे हुनक मृत्यु १९१२ ई०मे भेलनि। एहि सँ ६४ वर्ष पूर्व भेल १८४८ ई०। यैह वर्ष कविवरक जन्म-वर्ष छलनि से निश्चित होइछ। अतः कविवर जन्म १८४८ ई० मे ओ मृत्यु १९१२ ई० मे भेलनि से निर्विवाद।

कविवरक यथार्थ नाम जीवनाथ झा छलनि परन्तु विख्यात भेलाह जीवन झा नामसँ।[2] ई यज्वालय मूलक ब्राह्मण, समस्तीपुरक निकट हरिपुरवा ग्रामक वासी छलाह। पिताक नाम वनमाली झा छलनि परन्तु प्रसिद्धि छलनि उपनाम घोंघायि झा नाम सँ। घोंघायि झा उपनामक उल्लेख स्वयं कविवरे शृंगार-सागरमे कयने छथि।[3] कहल जाइछ जे घोंघायि झा उपनामक

१. मिथिलामोद, वर्ष ६ वैशाख, उद्गार ६७, सन् १३१९ साल पृ० २५।
२. मिथिलामिहिर, २० मइ, १९६२ मे ज्यो० बलदेव मिश्र द्वारा लिखित संस्मरणमे प्रदत्त सूचना।
३. शृंङ्गारसागर, पं० जीवन झा, भारत जीवन यन्त्रालय, वाराणसी, १९०२, ग्रन्थक आवरण पर ओ ग्रन्थक अन्तमे कहल गेल अछि—'श्री ५ मन्महाराजाधिराज काशिराज प्रभुनारायण सिंह G. C. I. E वीरपुङ्गवानां दानाध्यक्षेण दरभङ्गाप्रान्त हरिपुर ग्राम वास्तव्येन यज्वालयसंज्ञक घोंघायि झेत्युपनामक श्री वनमालीशर्म्मात्मजेन सुधिया श्री जीवनशर्म्मणा विरचितः।'

Scanned by CamScanner

वनमालीझाक विदाह हरिपुरबाक चिलका मिसरक कन्यामे भेलनि। घोंघाधि झा यद्यपि माण्डरक वासी छलाह परन्तु जीवन झा अपन मातृकेक निवासी भ' गेलाह्। जयकान्त बाबू सूचना देने छथि जे हुनक शिक्षा पहिने नवगाम ओ पश्चात् बनारसमे भेलनि। मातामहक उत्तराधिकारी रूपमे महाराज प्रभु नारायण सिंहक दानाध्यक्षक पद पर नियुक्त भेलाह्। बिना परोक्षहिकें म० म० चित्रधर मिश्र द्वारा श्रौतपरीक्षामे सम्मलित कयल गेलाह्।[1]

कविवर जीवनझाक पुत्रवंशक वृद्धि नहि भ' सकलनि। एकमात्र पुत्र पं० हरिकान्त झा कविवरक पश्चात् पिताक पद पर नियुक्त भेलाह्। परन्तु छत्तीसहि वर्षक वयसमे हुनक देहावसान भ' गेलनि। पं० हरिकान्तझाक एक मात्र पुत्र छलथिन शंकर झा। दुर्भाग्यवश ओहो अल्पायु भेलाह् आ तइसे वर्षक वयसमे १३४५ सालमे दिवंगत भ' गेलाह्। कविवरकें एक गोट कन्या छलथिन महामाया देवी, जाहि पक्षक वंशवृद्धि खूब भेल तथा ओहि पक्षक अनेकानेक सन्तान सभमे कतेको विद्वान् ओ पण्डित भेलाह् अछि।

परन्तु ई स्वीकार कर' पड़त जे कविवर जीवनझाक परिवार विघटित भ' गेलनि। एकर परिणाम इ भेल जे हुनक अप्रकाशित कृति सभ सुरक्षित नहि रहि सकल। हुनक मृत्युक पश्चात् 'सामवती-पुनर्जन्म'क प्रकाशन ओ 'सुन्दरसंयोग'क तेसर संस्करण अवश्य भेल किन्तु 'मैथिली-सट्टक' ओ 'नर्मदा सागर सट्टक' अनुपलब्ध रहल। अन्यो रचना सभ छलनि अथवा छल होयतनि, से की भेल कत' अछि किंवा नष्ट भ' गेल, ताहि विषयमे कोनो तथ्य ज्ञात नहि अछि। एहि दिशामे ने हुनक सन्तति वर्गक कियो प्रयत्नशील भेलाह् अछि, ने कोनो गवेषके सचेष्ट भेलाह् अछि। यदि प्रयास कयल जाय तँ अवश्यें हुनक अप्रकाशित कृति सभमे सँ बहुतोक उद्धार संभव भ' सकत।

सामवती-पुनर्जन्म नाटकक १९२० ई० मे मुद्रित प्रथम संस्करण तथा सुन्दरसंयोग नाटकक तेसर संस्करणक अन्तमे कविवर जीवनझाक संस्कृत ओ मैथिली कृति सभक सूची एहि सूचनाक संग देल गेल अछि—

> 'श्रीमन्महाराजाधिराज द्विजराज काशिराज श्रीमत्प्रभुनारायण सिंह बहादुर रक्षित ओ कृपापात्र स्वर्गवासी मैथिल पण्डितवर यज्वालय जीवनशर्म्मविरचित निम्नलिखित ग्रन्थ उपलब्ध अछि।'

---

१. History of Maithili Literature, vol. II, p. 135

संस्कृतमे चारिगोट ग्रन्थ प्रकाशित छनि—म०म० गोकुलनाथ कृत शिव-स्तोत्रक व्याख्या, अक्षमाला नाम सूर्यपूजा, प्रभुचरित महाकाव्यक पूर्वार्द्ध तथा शृङ्गारसागर। तीन गोट ग्रन्थ अप्रकाशित रहलनि--मानसमय गद्य-काव्यम्, समीरशतकस्तोत्र, तथा अर्जुन नाटक।

मिथिलामोदमे प्रकाशित शोकसमाचार (जे पहिनहि अविकल उद्धृत अछि) मे देल उक्ति जे—'हिन्दी तँ कोनो कथै नहिं'सँ आभास भेटैत अछि जे हिन्दियोमे ओ अनवरत रचना करैत रहैत छलाह। परन्तु ओ रचना सभ कोन प्रकारक होइत छल, ओकर परिमाण की छल, एहि सम्बन्धमे कोनो सूचना नहि अछि। ओकर सभक अन्वेषण अपेक्षित अछि।

मैथिलीमे चारिगोट कृतिक सूचना देल गेल अछि—'सुन्दर संयोग' नाटक ओ 'सामवती-पुनर्जन्म' नाटक प्रकाशित कृतिमे तथा 'नर्मदा सट्टक' ओ 'मिथिला भाषा व्याकरण' (खण्डित) अप्रकाशित कृतिमे। 'नर्मदा सट्टक'क सम्बन्धमे सूचना देल गेल अछि 'जकर किछु अंश मि० मोदमे प्रकाशित भेल अछि।

एहि सूचनाकेँ पूर्ण नहि मानल जा सकैत अछि। एहिमे देल गेल ग्रन्थ-नामावलीसँ अतिरिक्तो हिनक रचना सभ छलनि। "मैथिली सट्टक' नामक नाट्यकृति 'मैथिल-हित-साधन'मे प्रकाशित भेल छलनि। स्फुट गीत सभ 'मैथिल-हित-साधन' ओ मिथिला-मोदमे प्रकाशित भेल छलनि। आओरो अप्रकाशित गीत सभ अवश्य छल होयतनि मुदा ओ सभ कत' अछि अथवा नष्ट भ' गेल ताहि सम्बन्धमे किछु ने कहल जा सकैत अछि।

सम्प्रति कविवरक उपलब्ध कृतिमे अछि—

१. मैथिली सट्टक केर किंचित् अंश। २. सामवती-पुनर्जन्म नाटक।

३. सुन्दर संयोग नाटक। ४. नर्मदा-सागर सट्टक।

५. कतिपय स्फुट पद्य ओ गीत।

'मैथिली सट्टक' मैथिल-हित-साधन'मे प्रकाशित भेल छल। एहि नाटकक पूर्णरूप अथवा आंशिक रूप ओहि पत्रमे प्रकाशित भेल छल से नहि जानि। इहो ज्ञात नहि जे कोन वर्षक कोन-कोन अंकमे प्रकाशित भेल छल। अतः एहि सट्टक केर कथावस्तु, नाट्य-शिल्प एवं अन्य विशेषताक सम्बन्धमे कोनो

Scanned by CamScanner

विशेष विचार-चर्चा नहि होयब स्वाभाविक अछि। यैह स्थिति नर्मदा-सागर सट्टकक सम्बन्धमे अछि। इहो नाटक मिथिला-मोदमे क्रमश: छपैत छल परन्तु पूर्ण भेल वा नहि से साहित्य जगतमे पूर्ण ज्ञात नहि। परिणामत: कविवर जीवन झाक दुइए कृति सामवती पुनर्जन्म ओ सुन्दर संयोग नाटक स्वतंत्र पुस्तक रूपमे उपलब्ध रहबाक कारणें समालोचित होइत रहल अछि। १९१४ ई० मे भागलपुर-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन पारित मैथिली विरोधी प्रस्ताव ओ विश्वविद्यालयमे मैथिली पाठ्यक्रम तैयार करबाक हेतु मिथिला-मिहिरमे प्रकाशित मैथिल महासभाक मन्त्रीक वक्तव्यक प्रतिक्रियामे पं० जीवछ मिश्रक एक गोट लेख प्रकाशित भेल छलनि। एहि लेखमे मैथिली ग्रन्थ सभक सूचना देबाक क्रममे जीवनझाक 'पुनर्जन्म' नाटकक उल्लेख अछि। एहि पर संपादकीय टिप्पणीमे कहल गेल अछि—"उक्त यज्वालयक कैल 'सुन्दर-संयोग' दोसर 'एडिशन' पृथक् छपल, 'नर्मदा-सागर' मिथिलामोद में..."[1]

परन्तु एहि टिप्पणीमे कोनो संकेत नहि अछि जे 'नर्मदा-सागर सट्टक' पूर्ण छपल वा अपूर्ण।

ओही वर्ष यदुनाथ झा 'यदुवर'क एकटा वृहत् लेख मैथिली (भाषा) -साहित्यक दिग्दर्शन' अनेक किस्तमे मिथिला-मोदमे छपल छलनि। ओहिमे यदुवर जी कविवर जीवन झाक चारू नाटकक उल्लेख नाटक-प्रकरणमे कयने छथि—

> "पं० जीवन झाक रचित ४ नाटक शुद्ध ओ सरल 'मि० भाषा'मे अछि, (१) ल 'सुन्दर संयोग' जे सम्पूर्ण छपल अछि, (२) सर पुनर्जन्म जे हमर नहिँ देखल अछि, (३) सर नर्मदासागर सट्टक, (४) म मैथिली सट्टक जे 'मि० मोद' ओ 'मै० हितसाधन'मे क्रमश: छपैत छल किन्तु पूर्ण नहि भै सकल। खेद जे एकर पूर्ति करैवला क्यो नहिँ।[2]

कविवर जीवन झाक मुक्तक पद्य ओ गीतक क्वचिते उल्लेख कयल गेल अछि, यद्यपि मैथिल-हित-साधन ओ मिथिलामोदक आरम्भिक वर्षक अनेक अंकमे हुनक एहि प्रकारक रचना सभ छपल छनि। मिथिलामोदक आरम्भिक कालमे समस्या-पूर्त्तिक परिपाटी छल। कोनो समस्या द' देल जाइत छल आ कवि द्वारा कयल गेल पूर्त्ति सभ मुद्रित होइत छल। समस्या-दाता ओ समस्या

१. मिथिलामोद उद्गार ८८, वर्ष ८, १३२१ साल
२. मिथिलामोद; उद्गार ७३, वर्ष ८, १३२१ साल।

Scanned by CamScanner

पूर्त्तिकर्ता गणमे विशिष्टकविलोकनि रहैत छलाह। ओहिमे जीवनझाक स्थान महत्त्वपूर्ण छलनि। दुर्भाग्यवश मैथिल-हित-साधन ओ मिथिलामोदक प्रथम दुइ वर्षक अधिक अंक सर्वथा अप्राप्य होयबाक कारणे कविवर जीवन झाक एहि प्रकारक गीत ओ पद्य सभ सर्वथा दुष्प्राप्य अछि। जे किछु संकलित कयल जा सकल अछि से मैथिल-हित-साधनक छिटफुट पत्र, मिथिलामोदक कतिपय अंक ओ गीत संग्रहक पोथी सभसँ। हुनक अप्रकाशित गीत ओ पद्यक अन्वेषणक नितान्त अपेक्षा अछिहे।

कविवरक 'मैथिली सट्टक' कोन रूपक रचना थिक ताहि सम्बन्धमे विचार करबाक हेतु एखन धरि कोनो आधार-सामग्री उपलब्ध नहि छल। संयोगवश मैथिल-हित-साधनक छिन्न पत्र सभमेसँ एहि सट्टकक किछु अंश उपलब्ध भेल अछि। ई अंश मैथिल-हित-साधनक कोनो अंकक १९-२०म पृष्ठ पर मुद्रित अछि। मैथिली सट्टककेर ओ उपलब्ध अंश एहिठाम यथावत् उद्धृत क' देब अनुसन्धान ओ आलोचना, उभय दृष्टिएँ उपयोगी होयत—

मैथिली सट्टक (खण्डित अंश)

विश्वा०—रामभद्र ! जनक महाराजक इच्छा जे--'शिवधनुष उठाके रामचन्द्र हमर मनोरथ ओ प्रतिज्ञाकें सफल करथु।

राम—महाराज ! अपनेक इच्छा हो तऽ सिद्धे बुझल जाय।

विश्वा०—हम आज्ञा दै छी।

जन०—हम उठाय भुज कयलहुँ पण दय हाक।
से सीता-वर जकरा उठत पिनाक॥
(जवनिका-क्षेपे धनुष देखि पड़ै अछि)

राम—(धनुष उठा कऽ) ओ लक्ष्मण ! जँ क्यो अनुचित नहि कहय तँ एकरा सज्य करी।

लक्ष्मण—महानुभाव ! लोक अनुचित बुझो, वा उचित, ई अवश्य अधिज्य करक थिक।

(पुष्पवृष्टिक अभिनय, रामचन्द्र धनुष चढ़बै छथि ओ धनुष मध्यमे भग्न होइए)

Scanned by CamScanner

[नेपथ्यमे नरवा]

रामचन्द्र जँ करितथि सज्ज पिनाक।
तँ पुनि होइत जगत्रय प्रलय विपाक॥
(जनक विश्वामित्रकेँ प्रणाम करैत छथि)

(नेपथ्यमे गीत)

राग कजरी

टूटल कठिन महेशक चाप । ध्रु० ।
रामउठाय धनुष परिकरषै ।
उत्कंठित पुरवासी परखै ।
सुर मन्दार सुमन लय बरखै ।
सखि मिलि करु संलाप ॥ टूटल कठिन० ॥

कौखन सोचथि परम सभीता ।
कौखन मनमे होथि विनीता ।
धनुष राम कर देखथि सीता ।
कय शिव मन्त्रक जाप । टूटल कठिन० ॥

धनुष तडित सभ चमकय जगमग ।
मिथिला-पति मानस छल दगमग ।
सगवग शेष धराधर डगमग ।
भूमि सहित सिय काप ॥ टूटल कठिन० ॥

अति लाघव रघुनाथ उठाओल ।
अनायास सिंजिनी चढ़ाओल ।
शम्भु-शराशन चढ़हु न पाओल ।
बीचहि पड़ि गेल दाप ॥ टूटल कठिन० ॥

(दोसर धुनि)

कठिन जनक पन ठानि देल ।
सेहो विधि मानि लेल ना ।
बड़-बड़ भूप उठा नहि सकला ।
से पुनि बालक तानि देल ॥ सेहो विधि० ॥

Scanned by CamScanner

अघटित घटना निपुण विधाता।
कहँ सँ उचित कर आनि देल॥ सेहो विधि०॥
इष्टदेव जे कारण पूजल।
एत दिन तुलसीमे पानि देल॥ सेहो विधि०॥

मैथिली सट्टकक एहि अंशसँ अनुमान होइत अछि जे एकर विषयवस्तु प्राय: जनकक प्रतिज्ञासँ आरम्भ क' सीताक विवाह धरि रहल होयत। एहि ठाम जे गीत उद्धृत अछि, ताहिसँ एतबा स्पष्ट होइत अछि जे कविवर जीवन झा कवीश्वर चन्दा झाक वैषयिक अनुसरण कयने छलाह। मैथिली साहित्यमे राम ओ सीता जेना बहिष्कृत बूझल जाइत छलाह। जाहि सीताक जन्मभूमि मिथिला छलनि, तनिका विषयमे मिथिलाक भाषामे काव्य-रचना नहि हो, से एकटा विचारणीय प्रश्न साहित्येतिहासक अध्येता लोकनिक समक्ष उठैत रहैछ। कवीश्वर चन्दा झा राम ओ सीताक कथाकेँ प्रबन्धकाव्यक विषयवस्तुक रूपमे अवतारित कयलनि। धनुर्यज्ञ ओ सीता-परिणयक घटना कवीश्वरक बहुतो गीतक सेहो वर्ण्यवस्तु बनलनि। कविवर लालदास चन्दा झाक प्रबन्धपरम्पराकेँ पुष्ट कयलनि। किन्तु कविवर जीवनझा सीताकेँ नाटकक विषयवस्तु बनओलनि, जाहिमे चन्दा झाक सीता-स्वयंवरक गीतक अनुसरण-परक गीतक समावेश कयलनि। कवीश्वर चन्दा झाक गीतसँ जीवन झाक मैथिली सट्टकक गीतक तुलना करबाक लेल चन्दा झाक एकटा गीत प्रस्तुत क' देब उपयुक्त होयत—

शिवक धनुष नहि टूटयित पण छुटयित।
जनकक जग उपहास कुजन घन रटयित॥
हरषि हरषि परिछनि करु सुखैँ हिय भरु।
कन्यारत्न प्रसाद सकल विधि गृह धरु॥
धन्य नृपति दशरथ सुत सभ गुण युत।
सुखइत जहन ब्रीह अवृष्टि जीमुत॥
जत दिश तत जय जय ध्वनि हरषित मुनि।
रामचन्द्र परमेश मुदित प्रिय धुनि सुनि॥

मैथिलीमे सीता-विषयक नाट्य-रचना करबाक जे दिशा-संकेत जीवनझा कयलनि तकरा पल्लवित कयलनि हुनक कनिष्ठ समकालिक, हसनपुर निकटस्थ पटसा ग्राम बासी पं० सूर्यनारायण मिश्र। सूर्यनारायण मिश्रक जानकी

नाटकक रचना ओ प्रकाशन १३२६ साल अर्थात् १९१९-२० ई०क परिसरमे भेल छल। जानकी नाटक आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासमे सर्वथा अचर्चित रहल अछि। एहि जानकी नाटटक विस्तृत परिचय ओ समीक्षा एहि ठाम अपेक्षित नहि अछि। एहि ठाम ओकर दुइ गोट उद्धरणमात्र दऽ रहल छी। सूत्रधारक वाक्य अछि--

कयलनि सुन्दर जानकी नाटक अति रमणीय।
सूर्य्य मिश्र निज देश हित देखय जन कमनीय।।

नटीक वाक्य अछि—

'हे प्राणेश्वर! जगत सुन्दर हम तँ श्री सूर्य्यनारायण मिश्र कृत जानकी नाटकक ध्यानमे छलहुँ।'[1]

हमर धारणा अछि जे जीवन झाक मैथिली सट्टकसँ सीता-विषयक नाट्य रचनाक एकटा परम्पराक निर्माण भेल जाहिमे उपर्युक्त जानकी नाटक, आनन्द झा न्यायाचार्यक सीतास्वयंवर नाटक, एवं ठाकुर प्रसाद झाक सीता-परिणय नाटकक रचना भेल।

सीताक प्रसंग ल' प्रन्धकाव्यक रचना नहि क' जीवन झा नाटकक रचना किएक कयलनि, एकर व्याख्याक हेतु ओहि कालक उत्तरभारतीय रंगमंचक स्थितिक अवलोकन आवश्यक अछि।

अठारहम-उनैसम शताब्दीमे मिथिलाक किरतनियाँ नाटकक आकर्षण कम होम' लगलैक। किरतनियाँ मण्डली सभ वृहत्तर जनसमुदायक आश्रय प्राप्त करबाक उद्देश्यसँ रामलीलाक अभिनयकेँ व्यवसाय रूपमे अंगीकार क' समस्त उत्तर भारतक यात्रा कर' लागल। एहन सैकड़ों रामलीला-मण्डली सभ छल (आ एखनो अछि)। रामलीलामे जनकपुर-लीला, विशेषत: सीता स्वयंवर अत्यन्त मधुर ओ मनोहर प्रसंग मानल जाइत अछि। मिथिलावासी मैथिलीभाषी रामलीला-मण्डली सभ रामलीला-अभिनयमे जनकपुर-लीलाक प्रकरणमे मिथिलावासी पात्रक कथ्यभाषाक रूपमे मैथिली भाषाक प्रयोग करैत छल। विशेषत: सीताक मुखसँ उच्चरित मैथिलीक माधुर्यसँ अमैथिली-भाषी दर्शकगण विभोर भ' जाइत छलाह। अनेक ठाम समस्त लीलामे सेहो सीताक कथ्यभाषा मैथिली रहैत छल।

---

१. मिथिलामिहिर, १५ अगस्त, १९७६।

रामलीलाक एकटा प्रधान केन्द्र छल बनारस राज्यक राजधानी रामनगर। रामनगरमे रामलीलाक जे केन्द्र विकसित भेल से स्थायी रूप धारण क' अद्यावधि विद्यमान अछि। अठारहम शताब्दीक उत्तरकालमे महाराज बलवन्त सिंह रामनगरक रामलीलाकेँ प्रतिष्ठापित कयलनि एवं क्रमश: उदित नारायण सिंह ओ ईश्वरीनारायण सिंह विकसित कयलनि। रामनगरोक एहि लीलामे संवादमे मैथिलीकेँ स्थान रहैत छलैक किन्तु बादमे आबि ओकरा स्थानमे हिन्दीक प्रयोग होम' लगलैक।[1]

जीवन झा रामनगर राज्यमे छलाह। ओहि ठामक रामलीलामे मैथिली संवादयुक्त जनकपुर-लीला देखबाक बेर-बेर अवसर भेटैत रहलनि। ओहिसँ प्रेरित भ' क' सीता-चरित्रकेँ विशेषत: सीता-परिणयक कथाकेँ अपन नाट्यवस्तु बनओलनि।

कविवर जीवनझाक दोसर नाटक थिकनि 'सामवती-पुनर्जन्म'। ई नाटक हुनक मृत्युक पश्चात् १९२० ई० मे प्रकाशित भेल। सर्वप्रथम, एकर नामे शंकास्पद अछि। प्रकाशनसँ पूर्व एहि नाटकक नाम पुनर्जन्म' कहल जाइत छल। पं० जीवछ मिश्र ओ यदुनाथ झा 'यदुवर' एहि नामक उल्लेख कयने छथि। नाटकक अन्तमे स्वयं नाटककार द्वारा प्रदत्त पुष्पिकामे 'पुनर्जन्म' नामक उल्लेख कयल गेल अछि, यथा—

'इति यज्वालय कविवर पण्डितवर झोपाह्व जीवनशर्म्म रचितं पुनर्जन्म नाम नाटकं समाप्तम्।'

सामवती-पुनर्जन्मक मुद्रित प्रतिक प्रत्येक समसंख्यक (वाम भागक) पृष्ठ पर शीर्ष भागमे नाटकक नाम 'पुनर्जन्म' अंकित अछि। विषमसंख्यक (दहिन भागक) पृष्ठ पर अंकक क्रमसंख्या अंकित अछि। परन्तु आवरणपृष्ट, पर, अन्तमे हरिकान्त झाक वक्तव्यमे[2] तथा लक्ष्मण झा द्वारा देल गेल ग्रन्थ

---

१. दिनमान (साप्ताहिक), १५ अक्टूबर, १९७२

'पहले इन संवादोंमे मैथिली का समावेश हुआ करता था किन्तु अब इस लीला से मैथिली का प्रयोग हटा दिया गया है और खड़ी बोली में उसे एकरूपता दे दी है।

२. 'आइ हमरा अत्यन्त हर्ष होइछ जे बहुतो मिथिला भाषाक रसिकजनक आग्रहें स्वर्गवासी पूज्यपाद पिताक रचित 'सामवती-पुनर्जन्म' नाटक विद्वान् मैथिली समाजक कर-कमलमे अर्पित भेल।

Scanned by CamScanner

सुचनामे 'सामवती-पुनर्जन्म' नाटक नाम अंकित अछि। एहि प्रकारक भिन्नताक की कारण ? नाटकक यथार्थ नाम की ? ई सभ प्रश्न उठब सहज एवं स्वाभाविक अछि।

हमरा बुझने एहि नाटकक यथार्थ नाम 'पुनर्जन्मे' थिक जकर पुष्टि प्रथम संस्करण पृष्ठ सभ पर अंकित नाम, पुष्पिका-वाक्यमे देल गेल नाम तथा समकालिक उल्लेख सभसँ होइत अछि। यदि मुद्रणमे अशुद्धि भेल रहैत तँ आरम्भक 'त्रुटि परिशोधन' मे एहि दिश संकेत क' देल जाइत जाहिमे कहल गेल अछि जे—

> 'किछु संशोधन दोषें ओ किछु मूल पुस्तकक गड़बड़ें (जे पश्चात् भेटल) शोधनपत्रक आवश्यकता भेल। पाठक गण प्रथम शोधन कैं पढ़थि तँ उत्तम।'

निश्चिते एहि नाटकक मुद्रणक, विशेषतः आवरण पृष्ठक मुद्रणक आयोजन-कर्त्ता द्वारा 'सामवती-पुनर्जन्म' नाम देल गेल अछि आ से देल गेल प्रस्तावनाकेर सूत्रधारोक्त वाक्यक आधार पर जे—ई कयल तँ हँसी परन्तु सामवतीक पुनर्जन्म मन पड़ि आयल।' परन्तु एहिमे नाटकक नामक नहि अपितु नाटटक वस्तुक निर्देश अछि तकरा लक्ष्य नहि कयल गेल आ आवरण-मुद्रण-कालमे भ्रमसँ 'सामवती-पुनर्जन्म' नाम द' देल गेल। मुद्रणक आयोजक छलाह हरिकान्त झा ओ लक्ष्मण झा, तेँ हुनकहु वक्तव्यमे यैह नाम स्थान पओलक।

परन्तु ई नाटक 'सामवती-पुनर्जन्म' नामे आब ततबा प्रख्यात भ' गेल अछि जे सहजहि ओकरा बदलल नहि जा सकैत अछि। ओहुना 'पुनर्जन्म' ओ 'सामवती-पुनर्जन्म' मे कोनो विशेष अन्तर नहि देखि पड़ैछ। तेँ वर्त्तमान संस्करणक पुष्पिका-वाक्यमे 'पुनर्जन्म'क पूर्व 'सामवती' शब्द जोड़ि देब उचित बूझल गेल।

दोसर प्रश्न उठैत अछि जे ई नाटक मौलिक कृति थिक वा अनुवाद ? एहि विषयवस्तुकेँ ल' क' पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जीवन झासँ पूर्व संस्कृतमे सामवतम् (नाटकम्) रचने छलाह। पण्डित जीवछ मिश्र पुनर्जन्म नाटक पर टिप्पणी कयने छलाह जे—'गोलोकवासी मित्रवर पं० अम्बिकादत्त

व्यासक 'सामवत' नाटकक अनुवाद छन्हि।'[1]

पण्डित अम्बिकादत्तव्यास महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक प्रार्थ्यर्थ 'सामवतम्' नाटकक रचना कयने छलाह।[2] नाटकक कथा-वस्तु पौराणिक थिक। स्कन्द-पुराणक ब्रह्मोत्तर खण्डक सोमव्रत प्रकरणमे 'सामवान्'क पुरुषसँ स्त्री भ' जयबाक कथा आयल अछि। लेखक मूलस्रोतक संकेत दैत कहने छथि—

'स्कन्दपुराणीयब्रह्मोत्तरखण्डे सोमव्रतप्रकरणे सीमन्तिन्या पार्वतीधिया पूजितः पुरुषोऽपि सामवांस्तद्भक्तिमहिम्ना स्त्रीत्वं लेभे इति संक्षिप्ताख्यायिका सैव समूलेति, पवित्रेति, मनोहरेति, अद्भुतेति, शिक्षा-भिक्षादायिनीति, भक्तिपर्यवसायिनीति च मया तामेवाश्रित्य बहूनि सहायकानि, रसंजृम्भकाणि, कौतुकोत्पादनकानि, कार्यनिर्वहणक्षमाणि विन्दुप्रकरी पताकास्थानकादिसंघटकाणि पात्राणि प्रकल्य्य, विषयममुमङ्कषट्के विभज्य नाटकमिदं घटितम्।'[3]

मूलकथा अत्यन्त संक्षिप्त अछि। दुइ गोट ब्राह्मण वटुक सुमेधा ओ सामवान् सकल शास्त्रमे निष्णात भ' जीवन-यापनक हेतु अर्थानुसन्धानमे विदा होइत छथि। दुहू मित्रके ज्ञात होइत छनि जे निषेध देशक महारानी सीमन्तिनी सोमव्रतक सामवर्तनक अवसर पर द्विज-दम्पतीक पूजनक' दक्षिणामे प्रचुर धन दैत छथिन। दुहू मित्र द्विज-दम्पतीक रूप धारण करैत छथि। सुमेधा पति बनैत छथि एवं सामवान् हुनक पत्नी बनैत छथिन। एही रूपमे ओ सीमन्तिनीक ओत' जाइत छथि। सीमन्तिनीके कनेको सन्देह नहि होइत छनि। ओ हुनका लोकनिक पूजन दम्पतीक रूपमे करैत छथिन। सीमन्तिनी केर भक्ति ततेक प्रगाढ़ छलनि जे दुहू मित्र यथार्थ दम्पति बनि जाइत छथि। सामवान् पुनः पुरुष नहि भ' क' स्त्रीए रहि सामवती भ' जाइत छथि।

---

१. मिथिलामोद, वर्ष ८, उद्गार ८८, सन १३२१ साल।
ई उक्ति जीवछ मिश्र द्वारा प्रदत्त ग्रन्थक सूचीमे 'पुनर्जन्म' नामक अव्यवहित पश्चात् आयल नाटकक नाम 'कलिधर्मप्रकाशिका'क बाद कोष्ठकमे देल गेल अछि। परन्तु वस्तुतः 'पुनर्जन्म'क प्रसंगमे ई सूचना देब इष्ट छलनि।

२. सामवतम् (नाटकम्) अम्बिकादत्त व्यास, खड्गविलास यन्त्रालय, पाटलिपुत्र, १८८८।

३. तत्रैव, उपोद्घातः, पृ० ५।

इयैह कथावस्तु 'सामवत' नाटक ओ 'सामवती-पुनर्जन्म' नाटकक आधार थिक। व्यास जी एहि वस्तुकें छओ अंकमे प्रस्तुत कयने छथि जाहिमे बहुतो पात्र एवं घटनाक कल्पना कयल गेल अछि। सामवत नाटकक अंकशः कथा-वस्तु ओ पात्रयोजनाक अवलोकन क' लेने सामवती-पुनर्जन्मक समालोचनामे अधिक सौविध्य होयत।

सामवत नाटकक आरम्भमे नान्दी ओ प्रस्तावना अछि। प्रस्तावना अत्यन्त बृहत् अछि। नान्दीक अन्तमे सूत्रधार प्रवेश क' अभिनयक प्रतावपूर्वक सामवत नाटकक कथावस्तुक मुक्त कंठसँ प्रशंसा करैत अछि। पुनः नाटकक प्रशंसा करैत अछि। ततः पर नटीकें बजाय संस्कृतक अन्य नाटकक संग सामवत नाटकक तुलना क' एकरा उत्कृष्टतर सिद्ध करैत अछि। पुनः विस्तार 'सँ मिथिला, मिथिलेश, मिथिलेशक वंश ओ दरभंगाक प्रशंसा करैत अछि।

प्रथम अंकमे बन्धुजीव प्रवेश कऽ क्रीड़ा बुद्धिएँ सामवान्क अयला पर बलात् छिकबाक निश्चय क' नुका रहैत अछि। तखन आश्रमस्थ सामवान्क पिता सारस्वत ओ सुमेधाक पिता वेदमित्र परस्पर वार्त्तालाप करैत छथि। दुहू अपन-अपन बालकक विवाह कर्त्तव्य बूझि तदर्थ धनक चिन्ता करैत छथि। तखने असगुन भ' जाइत छनि। विघ्नशान्त्यर्थ गणेशक स्मरण क' दुहू वटुक कें विदर्भराज धर्मसिन्धुक ओतऽ जाय विद्यासँ सन्तुष्ट क' धन अनबाक हेतु पठयबाक निश्चय करैत छथि। तखन सुमेधा-सामवान् अबैत छथि। दुहू मुनि अपन निश्चयसँ हुनका लोकनिकें अवगत करबैत छथिन। शुभ लग्नमे वटुक विदा होइत छथि कि बन्धुजीव आबि टोकि दैत छनि। सारस्वत ओ वेदमित्र यज्ञभूमिमे दुहूकें ल' जाय विघ्न-शान्ति क' रक्षानिमित्त विल्वपत्र द' विदा करैत छथिन। तखन धर्मसँ भयभीत कलि प्रवेश करैत अछि। तपोवनक यज्ञधूमसँ पीड़ित होइत अछि। तखने नेपथ्यसँ ओकरा केयो डँटैत छैक। तखन ओ ओही तपोवनमे दुर्वासाक संग रहैत अपन मन्त्री क्रोधक ओत' चल जाइत अछि। तखन विदर्भदेशमे यात्रापथमे चलैत सुमेधा-सामवान् अबैत छथि। ओहिठाम प्रकृतिशोभाक विस्तारें अवलोकन करैत स्वर्गक अप्सरा मदालसा ओ इन्दुवदनाक गान सुनैत छथि। गानसँ आकृष्ट भ' दुहू अप्सरा कें देखि ओकर रूप पर मुग्ध भ' जाइत छथि। तखने दुर्वासा सामवान्कें सोर करैत छथिन। सामवान् वा सुमेधा नहि सुनैत छथि। क्रुद्ध दुर्वासा क्रोधसँ सामवानकें शाप द' दैत छथिन—

'अरे त्वं मन्मित्रस्य सारस्वतस्य पुत्रः त्वां सच्चिकीर्षुं रासम्

स्त्रियं विलोकयन् यस्त्वं मामवज्ञातवानसि ।
स्त्रीरूपमचिरादेव तस्मात् त्वं कलयिष्यसि ।।"[1]

सुमेधा-सामवान् एहि शापसँ अनभिज्ञ रहैत छथि, तखने मत्त हाथीक उपद्रवक सूचना देल जाइछ आ सभ पड़ा जाइछ।

द्वितीय अंकमे विदर्भ नगरमे होलिकोत्सवक दृश्य अछि। रंग-अबीरक प्रयोग ओ होरीक हुड़दंग मचल अछि। जटिल नामक वृद्ध बधिर ब्राह्मण अबरख, अबीर, रंगसँ बोरल क्रोधावेशमे प्रवेश करैत अछि। क्रोधसँ ओकरा बोल लगैत रहैत छैक। राजभट आबि ओकरासँ जिज्ञासा करैत छैक। मुदा बहीर होयबाक कारणे जटिलके भिन्ने अर्थ लगैत छैक। अमात्य आबि कोलाहलक जिज्ञासा करैत छथि। होरीक उधम मचओनिहार बालकके डँटैत छथिन जे मुनिपुत्री लोकनिसँ भय नहि ? सामवान्-सुमेधा तेजस्वी मुनि सारस्वत ओ वेदमित्रक पुत्र थिकाह तेँ कथमपि अवहेलनाक पात्र नहि थिकाह। राजभटके आदेश दैत छथिन घोषणा करबाक हेतु जे वन्द्य विप्र, मुनि, ब्रह्मचारी, कुलवधु, पण्डित, योगी, शोकोद्विग्न, रंग-अबीरक अनिच्छुक ओ वणिक्के तंग नहि कयल जाय। आदेशक उल्लंघन कयनिहार राजदण्डक भागी होयत एवं निर्वासित कयल जायत। अमात्य जटिलके प्रबोधैत लऽ जाइत छथि। राजभट घोषणा करैत अछि। तखन रंगक पिचकारी लेने वसन्तक अबैत अछि। मुनिपुत्रके अबैत जानि रंग देबाक हेतु तैयार होइत अछि। राजभट घोषणा करैत अबैत अछि जे ई दुनू मुनिपुत्र वन्दनीय थिकाह उपहास-पात्र नहि। तखने वसन्तक ओकरा रंग ढारि दैत छैक। राजभट आदेशक उल्लंघन करबाक अपराधमे ओकरा बान्हि कऽ लऽ जाइत अछि। तत्पश्चात् सुमेधा-सामवान् देवशर्मा पुरोहितक संग अबैत छथि। राजभवन दिस जाइत नगरक शोभा ओ होलिकोत्सवक विकृत रूप देखैत जाइत छथि। सूर्यास्त भऽ जाइत छैक, चन्द्रोदय होइत छैक। सभ सायंकृत्य हेतु निवृत्त होइत छथि। वसन्तक राजभटक हाथसँ छूटि पड़ायल अबैत अछि। ओकर बड़ दुर्दशा भेल रहैत छैक। राजभटके गारि पढ़ैत दुहू मुनिपुत्रक यथेच्छ दुर्दशा करबाक निश्चय करैत अछि। तत्पश्चात् राजसभाक दृश्य अबैछ।

१. तत्रैव, पृ० २७।

चारण विरुदावली वाचन करैछ। राजसभा मदमत्त भेल रहैछ। अमात्य ई सभ देखि खिन्न भऽ जाइछ। ततः भावकलावती नर्तकीक नृत्य गीत होइत छैक। एही अवसर पर वसन्तक अबैत अछि आ अनन्वित संवाद बजैत अछि। राजा ओ अमात्यसँ उतरा चोरी करैत अछि। एतबहिमे अर्द्धरात्रि सूचक घंटा बजैत छैक। सभा विसर्जित होइत अछि।

तेसर अंकमे सहर्ष दण्ड लेने कलि अबैत अछि। अपन स्वभाव, गुण-क्रिया ओ पौरुषक विस्तृत बखान करैत निश्चय करैत अछि—'एतैर्मुनिमण्डलैरहं चिराय खेदितोऽस्मि, कथमेतान् ग्लापयामि ? (गम्भीर विचार्य) अथवा स्मृतं सामवत्सुमेधसाविमौ राजदर्शनार्थं समायातौ (सहास्यम्) अहो सम्यक् समये समायातौ, तत्तावद राजानं प्रथममेव वसंन्तोत्सवप्रमादवशंवदं करोमि, तद्द्वारैव च एनयोः सम्यक् सत्कारं कारयिष्यामि तत् तत्रैव गच्छामि।'[1]

एहि विष्कम्भकक पश्चात् नगर वीथीमे सीमन्तिनीक उद्यानमे उपद्रवी बालककेँ डटैत उद्यान-रक्षक देखि पड़ैछ। ओतहि सीमन्तिनीक पुरोहित अबैत छथि। पुरोहितक वार्त्तालापसँ ज्ञात होइत अछि जे होलिकोत्सव दिन सीमन्तिनी द्वारा आयोजित भगवानक दोलोत्सव छल, दोसर दिन सोमवासर केँ सीमन्तनी पार्वती-परमेश्वरक अर्चना क' द्विजदम्पति समुदायकेँ भोजन कराय दक्षिणा देथिन। तेँ पुरोहितक आदेश होइत अछि जे एहन लोक रोकल नहि जाथि। तखन वसन्तक अबैत अछि आ पुरोहितकेँ अपन परिचय विदर्भराजक पुरोहित कहि कऽ दैत अछि। पुरोहित ओकरा देवशर्मा बुझैत छथि। तखन ओ अपनाकेँ देवशर्माक अनुज कहैत अछि। परन्तु भोजनक हेतु अत्यन्त आग्रहशील देखि तथा राजपुरोहितक हेतु अनुपयुक्त व्यवहार देखि पुरोहित बूझि जाइत छथिन जे ई कोनो धूर्त्त ब्राह्मण थिक, तेँ ओकरा धूसैत छथिन। वसन्तक निश्चय करैत अछि जे एहन काज करब जाहिसँ सामवान्-सुमेधा जकरा कारण राजभट हमर दुर्दशा कयल तथा ई दुष्ट पुरोहित—दुहुक सत्कार होइक। एतबहिमे स्नान कयने देवशर्मा अबैत छथि। वसन्तकक जिज्ञासामे देवशर्मा कहैत छथिन जे आइ वार्षिक योगिनी महोत्सव छैक। राजसभामे नृत्यसंगीत आरम्भ छैक। ओतहि सामवान्-सुमेधाकेँ संग लऽ जयबाक अछि। देवशर्मा चल जाइत छथि। तखन नढ़ियाँक स्वरेँ कोलाहल

१. तत्रैव, पृ० ४७।

करैत भूतप्रेत प्रवेश करैत अछि। ओ सभ सीमन्तिनीक आवासमे निवास नहि पाबि मदमत्त राजकुलमे 'प्रवेश' करऽ जाइछ। वसन्तक डरेँ पड़ा जाइत अछि।

ततःपर देवशर्मीक संग सामवान्-सुमेधा अबैत छथि। नगरक विविध दर्शनीय वस्तु, महल इत्यादि देखैत वर्णन करैत राजसभा धरि पहुँचैत छथि। राजसभामे राजा, वसन्तक, अमात्य विद्यमान छथि। वसन्तक राजाकेँ कहैत अछि जे सामवान् सुन्दरी स्त्री जकाँ सुन्दर छथि। राजा वारण करैत छथि जे मुनिपुत्र वन्दनीय छथि, हसनीय नहि। देवशर्मीक संग सामवान् सुमेधा अबैत छथि, अभिवादन, आशीर्वाद, प्रशस्ति होइत अछि। सभामे वसन्तक नचैत-गबैत अछि। फेर नटुआ नचैत छैक। एही मध्य वसन्तक मुनिपुत्रक संग असभ्य व्यवहार सभ करैत छनि।

सामवान-सुमेधा अत्यन्त कुपित होइत छथि परन्तु वसन्तक पर एकर कोनो प्रभाव नहि पड़ैछ। ओ दुहूक उपहास करितहि रहैत छनि। प्रत्युत राजा सेहो संग देबऽ लगैत छथि। अमात्यकेँ ई अशोभन व्यबहार अरुचिकर लगैत छनि तेँ ओ राजसभासँ चल जाइत छथि। वसन्तक राजाक कानमे कोनो रहस्य-कथा कहैत छनि। राजा विचारैत छथि—अस्ति महाराजा चन्द्राङ्गदेन सह मे भ्रातृभावः इति तत्पत्नी तत्र भवती सीमन्तिनी मे हास्य-पात्रम् (हसन्) अस्तु, तया सह इयमेव वसन्तक्रीड़ा स्यात्। तखन वसन्तकक कानमे किछु कहैत छथिन। वसन्तक तदनुसार घोषणा करैत अछि जे राजाक आज्ञा अछि जे महराज चन्द्राङ्गदक महिषी सीमिन्तनी परिमलोद्यानक अपन निवासमे टिकल छथि। ओ प्रति सोमवासरकेँ सपत्नीक ब्राह्मणकेँ भोजनादि कराय बहुविध ओ आभूषणसँ परितुष्ट करैत छथि, से सामवान् वनिता ओ सुमेधा तनिक पति बनि दम्पति रूपमे काल्हि ओतऽ जाथु, भोजन-धन प्राप्त क' एहू ठामसँ परितोषिक लऽ कऽ अपन आवास जाथु। सभ चकित भऽ जाइछ। सामवान्केँ भय एवं आश्चर्य होइत छनि। सामवान्-सुमेधा एहि कपट व्यापारक प्रस्ताव ओ अश्लील व्यवहारक विरोध करैत छथि। परन्तु राजाज्ञा ओ राजदण्डक भय देखाय दुहू गोटेसँ प्रस्ताव स्वीकार करा लेल जाइत छनि।

चारिम अंकक आरम्भमे विष्कम्भक अछि। भूख-पियाससँ आकुल भिक्षुक भीख मङैत अबैत अछि परन्तु विदर्भ नगर ओ प्रान्तमे कतहु भीख नहि भेटैत छैक। कोनो उपद्रवक कारणे सर्वत्र जनमून्यता भेटैत छैक। तखन एकटा

ब्रह्मचारीसँ भेट होइत छैक जे ओकर भूख प्यासकेँ योगबलसँ शान्त करैछ। ब्रह्मचारिऐं सुमेधा-सामवान्क कथा कहैत छैक जे कोगा सुमेधा ओ सामवान्केँ सीमन्तिनी द्विज-दम्पतीक रूपमे पूजा कयलथिन आ हुनक भक्तिक प्रभावसँ सामवान्मे स्त्रीत्व आबि गेलनि। ओ दुनू नगर पथ छोड़ि वन-वीथिकाक पथसँ बिदा भ' गेलाह। कलिक उपद्रवसँ सौंसे विदर्भ ध्वस्त भ' गेल राजाक सर्वत्र अनिष्ट भेलनि। तखन कलि सुमेधा-सामवान्केँ प्रभाव-ग्रस्त करबाक लेल चलि देने रहैछ। ई कथा कहि ब्रह्मचारी सुमेधा-सामवान्क रक्षा हेतु पाछाँ-पाछाँ जाय चाहैछ। भिक्षुक सेहो ब्रह्मचारीक संग जाय चाहैछ। दुनू गोटे एकटा जड़ी खा क', ओकरे प्रभावेँ आकाशमार्गसँ गमन करैत अछि। विष्कम्भक समाप्त होइछ।

तखन वन्य-पथेँ जाइत सुमेधा ओ (सामवान् स्त्री रूपमे) सामवती अबैत छथि। सुमेधामित्र सामवान्केँ सम्बोधित क' अपन मनक आतंक ओ राजाक अविचारक वर्णन करैत छथि। परन्तु सामवान् मुदा आब सामवती कामशर-विद्ध-युवती जकाँ व्यवहार करैत सुमेधाकेँ अपना संग रमण करबाक आग्रह करैत छथि। सुमेधाकेँ आश्चर्य होइत छनि हुनका विश्वासे ने होइत छनि जे सकलशास्त्रनिष्णात मित्र सामवान् आब सामवती भ' गेलथिन। सामवती सुमेधाकेँ अपने स्त्रीत्वक प्रतीति करयबाक लेल अपन स्त्रीचिह्न पर्यन्त साक्षात् देखयबाक प्रस्ताव करैत छथिन। सुमेधा संकोचपूर्वक ई बात मानि लैत छथि। एकटा कुञ्जमे जा क' सामवतीक परीक्षण करैत छथि। सामवतीक अवगुण्ठन हटाय देखैत छथि, स्वर, आकृति केश, गाल सभ किछु सुन्दरीक छलनि। फेर आँचर हटाय वक्ष प्रदेश देखैत छथिन। एहू सँ आगाँ सामवती कंचुकी सेहो हटा क' निर्वस्त्र उरोज देखैत छथिन। सुमेधा एहि क्रियाक कनेको प्रतिरोध नहि करैत छथिन, प्रत्युत पुरुषक स्पर्श सुखद लगैत छनि। सुमेधा सेहो एहि अनिद्य कामसुन्दरीक अनावृत अंगक दर्शन ओ स्पर्शसँ किंचित विचलित भ' जाइत छथि। मुदा फेर अपनाकेँ सम्हारैत छथि। सामवती कहैत छथिन जे आब जखन हमर स्त्रीत्वक प्रतीत भऽ गेल तखन हमरा संग रमण करू। सामवान् तत्पर नहि होइत छथि। सामवती काम-पीड़ासँ विकल भ' छाती पीटि मूच्छित भ' जाइत छथि। सुमेधा बड़ प्रयत्नसँ हुनका होसमे अनैत छथिन। सामवतीकेँ परतारक विचारसँ कहैत छथिन जे ओहि अगिला निकुंजमे गान्धर्व विधिसँ अहाँक परिणय करब।

Scanned by CamScanner

दुनू बिदा होइत छथि आ अनेक कुंजके विभिन्न बहाना बना क' सुमेधा पार कऽ जाइत छथि। सामवती अपन दुनू बाहु सुमेधाके कण्ठार्पित क' दैत छथि जे आब इहो कुञ्ज आबि गेल। सुमेधा सामवतीके परतारैत प्रत्येक बेर अगिला निकुंजक आशा दैत बढ़ैत जाइत छथि। एक ठाम अकस्मात सामवती सुमेधा आलिंगन कऽ चुम्बन करऽ चाहैत छथिन। सुमेधा सामवतीके रोकैत कहैत छथिन जे हमरा लोकनि भोतिया गेलहुँ अछि। लगैत अछि जेना एहि स्थान पर बाघ, भालु, साँप इत्यादिक बास अछि, तें जल्दी पड़ाउ। दुनू चल जाइत छथि।

भिक्षुक ओ ब्रह्मचारी प्रवेश करैत अछि। सुमेधाक धैर्य ओ प्रत्युत्पन्न मतित्वक प्रशंसा करैत अछि। ओहिठाम बिल्वबनमे सुमेधा-सामवतीक आश्रम जानि दुहूक साक्षात्कार पितासँ कोना होइत छनि, से देखबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत अछि।

आश्रम प्रान्तमे बेलपात बीछैत सारस्वत ओ वेदमित्र वार्तालाप करैत छथि। सारस्वत भोरुकी रातिमे देखल स्वप्नक वृत्तान्त कहैत छथिन जाहिमे कोनो पुरुष स्त्रीमे परिणत भ' गेल छल। अपशकुनसँ ओ आतंकित भऽ जाइत छथि। भिक्षुक ओ ब्रह्मचारी अबैत अछि। दुहू मुनि द्वारा आतिथ्य-सत्कार ओ परस्पर अनुनय-विनयक पश्चात् ब्रह्मचारीके विदर्भसँ आयल जानि दुहू मुनि अपन पुत्रक कुशल-क्षेमक जिज्ञासा करैत छथिन। ब्रह्मचारी सकल वृत्तान्त कहैत छनि सारस्वत क्रोधित भ' जाइत छथि आ राजा धर्मसिन्धुसँ अग्रिम दिन प्रतिशोध लेबाक निश्चय करैत छथि। तखने सामवती सुमेधा आश्रममे अबैत छथि।

पञ्चम अंकमे सबसँ पहिने, भोरक समयमे भिक्षुवेशमे अमात्य नौकापर स्थित अछि। खञ्जणक ओ झञ्झणक नामक नाविक नौका खेबैत अछि। सहसा अन्हड़-बिहारि उठैत छैक। सवार सहित नौका डूबि जाइत छैक।

नदीमे भसियाइत अर्द्धमूर्च्छित अमात्यके आकाशमार्गसँ ब्रह्मचारी आबि क' खीचि क' बाहर करैछ तथा कोनो पातक रस सुँघा क' होसमे अनैत छैक। अमात्य जिज्ञासा करैत छथिन जे धर्मसिन्धुओक राज्यमे एहन उपद्रव सभ किएक भ' रहल अछि ? ब्रह्मचारीक गप्पसँ आभास लगैत छनि जे सुमेधा-सामवान्सँ सम्बद्ध कोनो कारण अछि। ओ पूछैत छथिन जे कोनो विप्र कुपित छथि की ? एहि पर ब्रह्मचारी संक्षेपमे सुमेधा-सामवतीक वृत्तान्त

Scanned by CamScanner

कहि सूचित करैत छनि जे सारस्वत ओ वेदमित्र सहित सहस्रो ऋषि तथा सकल तपोवनवासी क्रुद्ध भ' शापसँ विदर्भनरेशाकेँ दग्ध करब आरम्भ क' देने छथि आ आइए क्रुद्ध सारस्वत मुनि राजाक साक्षात्कार करताह। ब्रह्मचारी अमात्यक स्वामिभक्तिक परीक्षा लैत छनि। सन्तुष्ट भेला पर अपन जटासँ एकटा फूल बाहर क' दैत छनि जे ई फूल अपना शिखामे लगाइए क' राजा सारस्वत मुनिक समक्ष जाथि। ब्रह्मचारी योगबलसँ आकाशमार्गेँ अमात्यकेँ विदर्भ नगर पठा दैत छनि।

भोरमे राजा धर्मसिन्धु रातुक स्वप्नक चिन्तन करैत, उठैत छथि जे केहन घोर स्वप्न छल ? अथवा यथार्थे कोनो क्रुद्ध मुनि शाप देबा लेल आयल छथि ? मालतिका दासी किछु पत्र आनि क' दैत छनि। राजाक आदेश पर मालतिका पुरोहित देवशर्माकेँ बजा अनैत छनि। राजा स्वप्न वृत्तान्त सुनि देवशर्मा कहैत छथिन जे ई सत्य थिक आ संक्षेपमे सामवान्क स्त्रीभाववृत्तान्त सुना दैत छथिन। राजा आतंकित भ' जाइत छथि देवशर्मा देवीक अनुष्ठानक विचार दैत छथिन जाहिसँ देवी साक्षात् दर्शन देथिन। देवशर्मा अनुष्ठानक व्यवस्था हेतु जाइत छथि। राजा सेनापति तथा अमात्य द्वारा प्रेषित पत्र पढ़ैत छथि जाहिसँ सेनाक पराजय ओ विनाश तथा अमात्यक भिक्षु वेशमे पड़ा क' प्राण बचयबाक सूचना भेटैछ। राजा अमात्यक खोज करबबैत छथि। अमात्य अबैत छथि देवशर्मा अबैत छथि। देवशर्मा अमात्यकेँ उपद्रव-शात्यर्थ कर्तव्य अनुष्ठानक सम्बन्धमे कहैत छथिन। महाराज स्नान कऽ अबैत छथि आ देवशर्मा द्वारा प्रदत मन्त्र द्वारा देवीक समाराधन हेतु बैसैत छथि।

तखनहि क्रोधाविष्ट सारस्वत मुनि समुपस्थित होइत छथि। सभ लोक भयाक्रान्त भ' जाइत अछि। देवशर्मा ओ अमात्यहुनकासँ क्षमायाचनापूर्वक धैर्यधारण हेतु कहैत छथिन। राजा साञ्जलि निवेदन करैत छथिन जे अहाँक पुत्रक पुनः पुम्भावार्थ देवीक आराधन करैत छियनि, किछु काल धैर्य धरू। राजा विहित विधिसँ देवीक पूजा करैत छथि। भगवती साक्षात् प्रकट होइत छथिन। परन्तु सामवतीकेँ पुनः पुरुष बनयबामे अपन असमर्थता देखबैत छथिन तथापि अभय वरदान दैत छथिन। पुनः सारस्वतकेँ बुझबैत छथिन जे एहि घटनामे राजाक ओतेक दोष नहि छनि। की अहाँकेँ नहि स्मरण अछि जे सामवान्क जन्मसमयमे ज्योतिषी की कहने छलनि ? योगबलसँ नहि

बूझल जे दुर्वासा शाप देने छलथिन ? सामवान्क यात्राकालमे अपशकुन भेल छलनि से नहि स्मरण अछि ? की अहाँ नहि बूझल जे ओहि दिन कलिक सेना ओ भूत-प्रेतादिसँ राजसभा व्याप्त छल ? ई कथा सूनि सभ चकित होइत अछि। भगवती सारस्वतकेँ अपूर्व गुणशाली अपर पुत्र-प्राप्तिक वरदान द' सुमेधा-सामवतीक पाणिग्रहण करयबाक उपदेश दैत छथिन। भगवतीक अन्तर्धान भेला पर सारस्वत राजाकेँ क्षमा क' दैत छथिन। उपदेशपूर्वक आशीर्वाद दैत छथिन। सारस्वत अपन कन्यादानक चिन्ता व्यक्त करैत छथि तँ राजा राजकोषसँ सकल विवाह-सामग्री प्रेषित करबाक वचन दैत छथिन। सारस्वत प्रसन्नतापूर्वक जाइत छथि। सभ उपद्रव शान्त होइछ।

षष्ट अंकक विष्कम्भकमे चूलिका द्वारा ओ तत:पर भिक्षुक द्वारा सारस्वत केर कोपसँ ल' क' भगवतीक वरदान धरिक वृत्तान्तक संक्षिप्त सूचना देल जाइछ। भिक्षुकेँ आगाँ सूचना दैत अछि जे सारस्वत आश्रम आबि कन्यादानक व्यवस्थामे छथि ओ सुमेधा एवं सामवती प्रेम ओ विरह-पीड़ासँ विलन्न छथि। दुहू, दिनराति परस्पर एक-दोसराक सम्बन्धमे ध्यान-चिन्तन करैत मिलनक हेतु आतुर छथि।

पुष्पचयन करैत सुमेधा बन्धुजीवनक संग अबैत छथि। पारस्परिक वर्ता-लापसँ सुमेधाक विरहदशाक परिचय भेटैत छथि। तखने एकटा सारिका सामवती ओ मधुरवचना सखीक मुहसँ सूनल वार्त्तालापक दू-एकटा विरह ओ आश्वासन वला वाक्य रटैत अछि। सुमेधा से सूनि आओर विकल भ' जाइत छथि। बन्धुजीव विकलताक कारण सारिकाकेँ बूझि डाँटि क' उड़ा दैत अछि। सुमेधाक ई कहला पर जे अन्तरङ्गिणी सची जकाँ बजैत एहि सारिकाकेँ किएक उड़ओलह, बन्धुजीव होहकारी दैत सारिकाकेँ बजबैत छैक। सारिका दोसरो डारि परसँ उड़ि जाइछ। सुमेधा आओर विकल भ' जाइत छथि जे कहिया प्रियाक पाणिग्रहण करब। तखनहि नेपथ्यसँ यज्ञदत्त सूचना दैत अछि जे विवाहक सकल सामग्री ओरियायल अछि। तात बेदमित्र प्रतीक्षा करैत छथि। अहाँ बिलम्ब किएक करैत छी ?' सुमेधा बन्धुजीवक संग चल जाइत छथि।

आवासकुंजमे विरहिणी सामवती ओ सखी मधुरवचनाक वार्त्तालाप होइत अछि। सामवती अपन स्वप्नक वर्णन विस्तारसँ करैत छथिन। सामवती सखी

केँ कहैत छथिन जे स्वप्नमे बड़ समारोहपूर्वक सुमेधाक संग हमर विवाह भेल छल मुदा ओ सुख स्थायी नहि भेल किएक तँ पिजराक निष्ठुर सारिका निद्रा भंग क' देलक। तखने दुहूक दृष्टि पिजरा पर जाइछ जाहिमेसँ सारिका उड़ि गेल रहैछ। तखने सामवती विरहेँ अचेत भ' जाइत छथि। मधुरवचना केराक बीड़सँ हौँकैत छनि। मधुरवचना कहैत छनि जे अहाँक स्वप्न सफल भेल। ईप्सिते वरसँ आइ विवाह होयत। सामवती प्रसन्नतासँ अपन हार उतारि क' द' दैत छथिन। मधुरवचना फेर कहैत छनि जे तात सारस्वत कहलनि अछि जे सामवतीक शृंगार क' क' मण्डप पर लेने अबियौन। ओ सामवतीक प्रसाधन क' रूपक प्रशंशा करैत हुनका आगाँ दर्पण द' दैछ। सामवती रूपगर्विताक आचरण करैत दर्पणस्थ अपन प्रतिबिम्बक रूपक प्रशंसा करैत छथि। बन्धुजीवक स्वर सूनि पड़ैछ जे एखन धरि सामवतीकेँ ल' क' मधुरवचना नहि आयल अछि। पुनः आबि क' विवाहमण्डपक वर्णन करैत कहैछ जे सभ किछु तैयार अछि। मधुरवचना सामवतीकेँ ल' क' विवाह मण्डप पर जाइत अछि। एहि महोत्सवक प्रसन्नतामे बन्धुजीव नाँच-गाब' लगैछ। विष्टर-विष्टर, मधुपर्क-मधुपर्क शब्द सूनि बन्धुजीव अनुमान करैछ जे गोदानक समय भ' गेल तेँ दक्षिणा लेबाक लेल चल जाइत अछि। दोसर दिससँ भिक्षुक गबैत अबैत अछि। बन्धुजीव पोटरी लेने धड़फड़ायल अबैत अछि। भिक्षुक ओकरा स्थिर होयबा लेल कहैत छैक तँ ओ झाड़ि दैत छैक जे हम तौरा जकाँ भिखारि नहि छी जे घरे-घरे भीख माङैत अछि। तोँ स्थिर भ' भीख माङह। हम तँ पण्डित ब्राह्मण छी आ एखन धनिक सेहो तेँ गाछ जकाँ स्थिर नहि भ' पायब।' नेपथ्यमे वर सुमेधाक प्रति आशीर्वचनक पाठ, वाद्य-वादन, स्त्रीकण्ठसँ मंगलगीत होइछ।

सामवतीक संग सुमेधा, सारस्वत, वेदमित्र एवं परिवारक सदस्यगण अबैत छथि। वेदमित्र ओ सारस्वत परस्पर उचिती-मिनती करैत छथि। सामवती नोरायल आँखिएँ पिताकेँ देखैत छथि सारस्वत सामवतीक नोर पोछैत कहैत छथिन—

'पुत्रि अलमौन्मनस्येन, सर्वा अपि स्त्रिय एवमेव कियत्कालं कोमलभाषणैर्मातापितरौ विमोह्य परतः पतिगेहं सनाथयन्ति, तन्नाऽकोऽपि नवीनो व्यापारः। अयं चाऽस्मासु विशेषो यत् साधारण-

गृहिणां वियोगव्याकुलतया धैर्यमुत्सार्यते अस्माकं तु धैर्येण व्याकुलतैव निगृह्यते । तद् गम्यतां श्वशुरालयम्' ।[1]

बन्धुजीव तखने जयजयकार करैछ । सारस्वत बन्धुजीवसहित विप्रलोकनिकें धन-वस्त्रादि दान दैत छथिन । बन्धुजीव 'विपुल धन अर्जित कयल' ई बाजि कूदि उठैत अछि । उपस्थित पात्र सभ मंगल-कामना करैत अछि।

सामवत नाटक एहि कथावस्तुक संग सामवती-पुनर्जन्म नाटक कथा-वस्तुक तुलना कयला पर भेटत जे मुख्य कथाक्रममे समता अछि, किछु प्रमुख पात्र सामने अछि, परन्तु सूक्ष्मतासँ विश्लेषण कयने साम्यसँ अधिक वैषम्ये भेटैत अछि। अतः एहि नाटककें सर्वथा अनुवादे मानि लेब समीचीन नहि होयत । सामवत नाटक छओ अंकक अछि, सामवती नाटकमे सात अंक अछि एहीसँ अनुमान भ' सकैत अछि जे जीवन झा अपन कथावस्तुमे परि-वर्त्तन अनलनि अछि। आरम्भक प्रस्तावनाकें जीवन झा अत्यन्त संक्षिप्त ओ रोचक बना देलनि अछि। मुख्य कथाक-वस्तुओक अनेक घटना ओ संवादक परित्याग क' देल गेल अछि। अनेक घटनाक सूचना संवादहिमे द' देल गेल अछि, अनेक संवाद संक्षिप्त वा परिवर्त्तित क' देल गेल अछि । प्रथम अंकमे सुमेधा-सामवानक विदा होयबाक प्रक्रिया संक्षिप्त अछि । स्वर्गक अप्सरा एहि नाटकमे मंचपर नहि आबि नेपथ्ये सँ गबैत अछि। दुर्वासाक शाप साम-वत नाटकमे सुमेधा-सामवान् नहि सुनैत छथि । सामवती-पुनर्जन्ममे दुहू गोटा ई शाप सुनैत छथि । सामवत नाटकक द्वितीय ओ तृतीय अंकक अधि-कांश कथाकें हटा क' सामवती पुनर्जन्ममे दोसरहि अंकमे दुहूक मुख्य घटनाकें नव प्रकारें संघटित क' समाहित क' देल गेल अछि । सामवत नाटकक चारिम अंकक सुमेधाक प्रति सामवतीक रमणेच्छा ओ तदर्थ उत्कट संवाद ओ व्यवहारकें जीवन झा एके वाक्यमे सम्पन्न क' देलनि जे—'आब हमरा साध्यायन कहितहि रहब ? हमरा आहाँक सङ्ग कथुक डर नहि होइए ।' सामवतमे ब्रह्मचारी ओ भिक्षुकक वार्तालापसँ सामवान्क स्त्रीभावक घटनाक सूचना भेटैत अछि । सामवतीपुनर्जन्मक तेसर अंकमे भिक्षुक ओ बन्धुजीवक वार्त्तालापसँ सूचना देल गेल अछि । सामवत नाटकक पाँचम अंकक घटना एकदमसँ छोड़ि देल गेल अछि । केवल देवीक वरदान-कथा तेसरहि अंकमे

१. तत्रैव, पृ० १३७ ।

सारस्वतक स्वप्न-दर्शन वर्णनक माध्यमे कहा देल गेल अछि तथा षष्ठ अंकमे मन्त्रीक आकाश-भाषित द्वारा राजाक देव्याराधनक सूचना देल गेल अछि। सामवत नाटकक छठम अंकमे सुमेधाक ओ सामवतीक विरहदशा, दुहूक विवाहक सूचना तथा नव दम्पतीक विदा देखाओल गेल अछि। जीवन झा विदाइ समारोहके छाँटि देलनि अछि तथा शेष कथाके नवीन घटनाक सम्मिश्रणपूर्वक पाँचम, छठम ओ सातम अंकमे पल्लवित कयलनि अछि। सामवत नाटकमे बिरहक अवस्थामे सुमेधा ओ सामवतीके प्रत्यक्ष भेँट नहि होइत छनि। परन्तु सामवती-पुनर्जन्ममे दुहूके उद्यानप्रदेशमे साक्षात्कार होइत छनि। एतबे नहि, बन्धुजीव ओ सामवतीक सखी चपलामे उतरा-चोरी सेहो होइछ।

एहिना सामवती-पुनर्जन्मक पात्रयोजनामे परिवर्तन देखल जाइत अछि। सामवत नाटकक अनेक पात्रके विलुप्त क' देल गेल अछि। किछु पात्रक योगदान संक्षिप्त क' देल गेल अछि। ब्रह्मचारी, सीमन्तिनीक पुरोहित उद्यान रक्षक, राजभट, भूत-प्रेत, नाविक, भगवती इत्यादि पात्र हटा देल गेल अछि। कलि, अमात्य, देवशर्मा वसन्तक, राजा धर्मसिन्धु इत्यादिक भूमिका संक्षिप्त क' देल अछि। सामवत नाटकमे सीमन्तिनी चन्द्राङ्गदक पत्नी कहलि गेल छथि जनिका संग धर्मसिन्धुक भ्रातृभाव छलनि। परन्तु सीमन्तिनी ओहि नाटकमे प्रत्यक्ष नहि होइत छथि। दम्पती-पूजनक सूचना मात्र देल जाइछ। सामबती पुनर्जन्ममे हुनका धर्मसिन्धुक पत्नी बना देल गेल छनि तथा ओ मंच पर प्रत्यक्षतः राजाक संग बैसि क' दम्पती-पूजन करैत छथि। सामवत नाटकक द्वितीय अंकमे होलिकोत्सवक अवसर पर जटिल नामक पात्र अबैत अछि ओहि उत्सवक उत्कटता सूचित करबाक लेल। सामवती पुनर्जन्ममे सारस्वत मुनिक शिष्यक नाम जटिल देल गेल अछि जकरा विदर्भसँ कोनो सम्पर्क नहि। राजाक व्यजनहस्ता चेटीक नाम थिकैक मालतिका। जीवन झा ई नाम सामवतीक सखीके देलनि अछि।

सामवती-पुनर्जन्मक जटिल, सारस्वत मुनिक चाकर गोनड़ा, घटक, सारस्वत मुनिक पत्नी गौतमी, सामवतीक भाउजि मनोरमा, बन्धुजीवक माय मरहन्न दाइ, बन्धुजीवक स्त्री बधू, सामवतीक सखी चपला ओ मालती कविवर जीवनझाक अपन सृष्टि थिकनि।

सभसँ महत्त्वपूर्ण विभिन्न पात्रक चरित्र-चित्रण अछि। सामवत नाटकक पात्रक जेहन चरित्र अछि ओहन चरित्र सामवती-पुनर्जन्ममे नहि भेटत। दुहूक

Scanned by CamScanner

पात्रक चरित्रमे आकाश-पातालक अन्तर देखना जाइत अछि। अम्बिकादत्त व्यासक सामवती तँ अपन कामपीड़ाक अभिव्यक्तिमे जेना समस्त मर्यादाक अतिक्रमण क' गेलि छथि। ओ निस्संकोच भावसँ सुमेधाकेँ अपन अंगक निरीक्षण करबाक आग्रह करैत छथिन आ अपन निरावृत स्त्री-चिह्न पर्यन्त सुमेधाकेँ देख' दैत छथिन। ततेक कामार्त्त भ' जाइत छथि जे स्पष्ट शब्दमे सुमेधाकेँ कहैत छथिन—

नव्यामपि भाव्यामपि, तापविशेषाद् विशर्णवरवर्णाम्।
त्वं मां विद्धि प्रियवर, कलिकामिव बहुशिलीमुखैर्विद्धाम्॥

तस्मात्

कुरु परिरम्भं गाढ़ं, चुम्बनदानस्तृषां शमय।
मादृशरमणीरमणैरघरीकुरु सुरनिवाससुखम्॥

अथवा—

कालः कान्तो वसन्तः पिकरव रुचिरो मञ्जुलश्चैष कुञ्जः,
कन्दर्पोदञ्चदाशाऽहमपि च युवतिर्निर्जनश्च प्रदेशः।
मा भूत् ते हन्त मोहो रमय रमण मां रन्तुकामां रसज्ञः
भूयो भूयोऽनुकूल न भवति निखिलं वाञ्छितं कार्यजातम्।[1]

एतबे नहि, सुमेधाक आलिंगन क' क' चुम्बन कर' लगैत छथि सुमेधाक गरदनिमे अपन दुनू बाँहि द' दैत छथि।

यैह कारण अछि जे डॉ० रत्नमयी देवी दीक्षित अम्बिकादत्त व्यासक कठोर आलोचना कयने छथिन।[2]

---

१. तत्रैव, अंक ४, पृ० ८२। २. तत्रैव, अंक ४, पृ० ८३।

Women in Sanskrit Gramas—by Ratnamayi Devi Dikshit···"the picture of Samavati, as portrayed in this play is taken as a typical example of womanhood, one can only hang one's head in shame at the shamelessness, wickedness, and irrepressable amorous desires attributed to women." Page 375-76.

Scanned by CamScanner

परन्तु येह कथा सामवती पुनर्जन्मक नायिकाक प्रसंग नहि कहल जा सकैछ। जीवनझाक सामबती पूर्ण शालीन, मर्यादित लज्जावती, कोमल ओ मसृण मनोवृत्तिक छथिन। हुनक वर्णन करैत उचिते गौतमी कहने छथि जे—

> 'जतेक पढ़लन्हि से सब ओहिना छैन्हि……एहनि सुन्दरि कन्या संसारमे कतहु ने देखले वा सुनलहुँ छलौं हैं, तनिका ओहन विद्या स्वभाव संऽ हर्षक मूर्त्ति ए बूझि पड़ै छथि।'

व्यासक सामवतीक प्रेम वासनात्मक ओ औद्धत्यपूर्ण छनि, जीवन झाक सामवतीक प्रेम नैसर्गिक छनि। एहिना अनकहु चरित्रमे कविवर जीवनझाक अपन विशेषता सभ सन्निहित अछि। व्यासजीक नाटकक विशद वर्णन-बाहुल्यसँ निरन्तर बचवाक चेष्ठा जीवन झा करैत रहलाह अछि। दोसर दिस सामवत नाटकमे एगारह गोट गीतक समायोजन अछि परन्तु ओहिमे सब प्रसंगानुकूल नहि कहल जा सकैत अछि। जीवन झाक नाटकमे द्विगुण संख्यामे

'………The scenes between Samavati and Sumedha as a whole, is a proof to the contrary. The open requests of Samavati to Sumedha to save her from the attack of Cupid is unworthy of even a courtesan.' Page 370.

'Samavan, the boy, was well versed in all the Vedas and the Shastras, but the moment he became a woman, all that knowledge seems to have disappeared as if by magic. The character, behaviour, mode of talk, everything seems to have undergone a change for the worse. Samavan was a Poetic minded, simple, and straight-forward boy who found great pleasure in observing everything beautiful in nature, human beings, situation etc. But, when the change came, the new creature as a woman, had nothing else but love and love alone to talk about, Samavati seems to be a tempter and an unrefined soul, quite contrary to the character that was in the form of the man. This character, as presented by Vyasa, is no credit to any society whatever, and much less so to the Indian womanhood.

Page—378.

Scanned by CamScanner

गीतक सन्निवेश अछि। नाटकक मैथिल वातावरण सर्वथा नवीन उद्भावना कहल जा सकैत अछि। सामवत नाटकमे वर्णनशीलताक प्रधानता अछि तँ सामवती-पुनर्जन्ममे घटनाशीलताक। सामवत पाठ्यधर्मी काव्य थिक, सामवती पुनर्जन्म अभिनयधर्मी दृश्यकाव्य।

ई सभ कविवर जीवन झा द्वारा कयल गेल परिवर्त्तन-परिवर्धनक स्थूल रूप-रेखा मात्र थिक। सूक्ष्म रीतिसँ विश्लेषण कयने कविवर जीवन झाक नाट्यकुशलताक विशिष्ट परिचय प्राप्त कयल जा सकैत अछि। एहि सभ तथ्यकेँ देखला उत्तर, केवल मूल कथावस्तुक सूत्र, किछु पात्र, किछु घटना, किछु संवादक साम्यक आधारपर सामवती-पुनर्जन्म नाटककेँ सामवत नाटकक अनुवाद मानि लेब अनुचित होयत। हमर तँ मन्तव्य अछि जे एहि नाटकक प्रेरणास्रोत अम्बिकादत्त व्यास कृत सामवत नाटक होइतो ई मौलिक कृति थिक। एहि तथ्यकेँ नाटककार स्वयं प्रस्तावनामे कहलनि अछि जे सामवतक कथाक अनुरूप ई दृश्य काव्य थिक जकर रचना (अनुवाद नहि) जीवनशर्मा कयलनि—

> मिथिला-भाषा सरस विचाड़ि, परभाषा-सम्मेलन छाड़ि।
> विरचल यज्वा जीवनशर्म, जे जानथि सब कवितामर्म।
> बुध सदस्य गुणग्राही भूप, दृश्य सामवत कथाऽनुरूप।

सुन्दर संयोग नाटक कविवरक सामाजिक नाटक थिकनि। सामाजिक जीवनसँ ग्रहण कयल गेल कथावस्तुक आधार पर एहि नाटकक रचना भेल अछि। एकर रचना ओ प्रथम मुद्रणक निश्चित तिथिक कोनो सूचना उपलब्ध नहि अछि। डाँ० जयकान्त मिश्र जीवन झाक नाटकक समीक्षाक प्रकरणमे सुन्दर संयोग नाटकक आगाँ १९०४ ई० क सूचना देने छथि। परन्तु ई साल नाटकक रचनाकालक सूचक थिक किंवा प्रथम संकरणक वर्षक द्योतक, से स्पष्ट नहि अछि। परन्तु सामाजिक परिवेश, दाम्पत्य-प्रेम, रोचक संवाद, कोमल गीतावली एवं अभिनेयताक कारणेँ ततबा लोक-प्रिय भ' गेल जे १९१४ई० सँ पूर्वो एकर दोसर संस्करण सेहो मुद्रित भ'गेल छल। परन्तु संयोगवश एखन धरि ओ दुनू संस्करण दृष्टिपथ पर नहि आबि सकल अछि। आरम्भेसँ ई नाटक विभिन्न विश्वविद्यालय मैथिली-पाठ्यक्रममे स्वीकृत ग्रन्थ रहल अछि आ औखन अछि। अत: एकर तेसर जो चारिम संस्करणक सेहो आवश्यकता भेल। १९३८ मे प्रकाशित तेसर संस्करणमे

मैथिली ओ अंगरेजीमे नाटक ओ नाटकारक सम्बन्धमे विविध प्रकारक सूचनात्मक सामग्री सेहो देल गेल अछि, यथा—कवि-परिचय, कविक वंशलता नाटकक संक्षिप्त कथावस्तु ओ संक्षिप्त समीक्षा इत्यादि। एहि संस्करणमे कविक एकटा अप्रकाशित नवोपलब्ध बारहमासा सेहो सम्मिलित क' देल गेल अछि। एहि ठाम ऐही संस्करणक आधार पर पाठ प्रस्तुत कयल गेल अछि।

विगत दशकमे दरभंगा सँ सुन्दर संयोगक चारिम संस्करण प्रकाशित भेल छल। परन्तु एकरा तेसर संस्करण केर पुनरावृत्ति मात्र कहल जा सकैत अछि, कारण एहिमे नाटक ओ नाटककारक प्रसंग कोनो अतिरिक्त नवीन सामग्री नहि देल गेल अछि।

१९०४ ई० सुन्दर संयोगक रचनाकाल रहल हो अथवा प्रथम संस्करणक वर्ष, दुहू स्थितिमे ई नाटक ऐतिहासिक महत्त्वक सिद्ध होइत अछि। ज्यौतिषी बलदेव मिश्र उचिते कहने छथि जे—

"संभवत: पण्डित चन्दा झाक मिथिलाभाषारामायणक अनन्तर मिथिला भाषामे मुद्रित यैह पुस्तक देखबामे आयल। ई पुस्तक जेहने सरस विद्वानक द्वारा लिखल देल गेल अछि तेहने सरस अछि। लेखकक दृष्टिमे अद्यावधि एकर समकक्ष मिथिलाभाषामे अन्य नाटक दृष्टिगोचर नहि भेल अछि।"

कविवर जीवनझाक चारिम नाटक थिकनि नर्मदा-सागर सट्टक। ई नाटक खण्डित कहि क' उल्लिखित होइत रहल अछि। पुस्तकाकार मुद्रण नहि होयबाक कारणे मैथिली साहित्यक अध्येता लोकनिक हेतु सर्वथा अप्राप्य छल। परन्तु सर्वत्र ई कहल जाइत रहल अछि जे मिथिलामोदमे ई नाटक क्रमश; प्रकाशित भेल छल। मिथिलामोदक आद्यन्त व्यवस्थित फाइल कतहु-सुरक्षित नहि अछि। जत' कतहु' छिट-फुट अंकक संकलन अछिहो तँ सर्वजन सुलभ नहि। तखन कोन वर्षक कोन-कोन उद्गारमे नर्मदा-सागर-सट्टक प्रकाशित भेल छल से निश्चित करबाक कोनो आधार नहि अछि। जयकान्त बाबू १९०६ ई० मे एकर प्रकाशन मानैत छथि।

विभिन्न व्यक्तिक संग सुरक्षित मिथिला-मोदक जे अंक सभ देखबाक अवसर भेटल अछि ताहिमे नर्मदा-सागर सट्टकक-कोनो अंश देखबामे नहि

१. मिथिला-मिहिर, २० मई, १९६२।

आयल अछि। मोदक जे अंक कतहु नहि भेटि सकल से अछि—२ सँ १६ उद्गार धरि, २० सँ २४ उद्गार धरि, ११४ सँ ११६ उद्गार धरि १२० सँ १२३ उद्गार धरि, उद्गार १५४, १५५, १५६, १६०, १६१, १६३, एवं १६५ सँ १७० उद्गार पर्यन्त। मिथिलामोदमे ई नाटक हुनक जीवने कालमे छपल छल। मृत्यु भेल छलनि १९१२ ई० केर वैशाखमे जकर समाचार ६७म उद्गारमे छपल छल। ओहि समाचार मे नर्मदा-सागरकें खण्डित कृति कहल गेल अछि। अतः एहिसँ पूर्वहिक उद्गारमे एकर मुद्रण भेल होयत। २५म उद्गार सँ ६६म उद्गार धरि मोदक सभ अंक देखबाक सुयोग भेल अछि। प्रथम दुइ वर्षक पहिल ओ सतरह-उन्नैसम अंक मात्र देखल अछि। तेँ अनुमान होइत अछि जे उद्गार २ सँ १६ ओ २० सँ २४ पर्यन्तमे किछु अंकमे ई नाटक प्रकाशित भेल होयत।

जहिना मैथिल-हित-साधनक छिन्न पत्र सभसँ मैथिली सट्टकक कियदंशक उद्धार भ' सकल अछि तहिना ओहि छिन्न पत्र सभमे मिथिला-मोदक पत्र सभ सेहो भेटल। मोद मे उद्गार, मास, वर्ष सन् संवत् केवल आवरण पर देल रहैत छलैक। भीतर केर पृष्ठ पर एहन कोनो सूचना नहि रहैत छलैक तेँ आवरण पृष्ठ फाटि गेला पर ई पता लगायब असंभव जे भीतर वाला पन्ना कोन उद्गार, मास, वर्ष वा संवत्क थिक। ओही पत्र सभमे नर्मदा-सागरक अधिकांश भाग मुद्रित भेटि गेल अछि। आरम्भमे शीर्षक दल छैक—

'मिथिलाभाषामय नर्मदा-सागर (सट्टक)

मिथिला-मोदक प्रायः चारि गोट अंकमे मुद्रित अंश हमरा उपलब्ध भ' सकल अछि। मोदक पृष्ठ संख्या २-१६, १०७-११०, २१-२३, २४-३४ पर नर्मदा-सागर मुद्रित अछि। पृष्ठ ११० पर प्रथम अंक समाप्त होइत छैक। अंक-समाप्तिक पश्चात् पं० मुरलीधरझाक नामे लिखित कविवर जीवनझाक एकटा प्रेषित पत्र मुद्रित छनि। एहि पत्रमे वर्ष इत्यादि नहि देल छैक। केवल मास-तिथि-वारक सूचना अछि। मुरलीधर झाकें कोनो दुखद घटना भ' गेल छलनि जकर आभास पत्रसँ भेटैत अछि। एहि पत्रमे मोदमे मुद्रित सट्टकक महेशवाणीमे जे अशुद्धि भ' गेल छलैक ताही दिस ध्यान आकृष्ट कयल गेल अछि। पर निम्न रूपक अछि—

प्रेषित पत्र

स्वस्ति अत्याराध्य विद्वद्वर ओझाश्री मुरलीधर झाजी कोँ नमस्कार अपने काँ बड़ शोक हयत परन्तु "विकार-हेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीरा:"। अत: निश्चिय अछि जे प्रकृतोद्यममे सावधाने हयव, प्राय: अपने नहिँ छलहु ँ ते ँ हमरा 'सट्टक' मे ँ कतिपय अशुद्धि छपलैक यथा 'महेशवाणी'क ३ चरणमे गुमगायक' 'गुननायक ४ चरण मे ँ 'अभिषेक'क ठाम अविवेक भ' गेलैक[1] तदुद्धार दुर्घट होइक त सक्क कोन, आओर जे हमरा सह्य भार दी से शिरोधार्य अलंबहुना इति पौ० शुक्ल १ भौम :

यज्वालय श्री जीवन झा

अठाइसम पृष्ठ पर 'द्वितीय-चैत 'कहि भेलहुँ शरण विनीत' सँ आरब्ध गीतक अन्त भेला पर, पृष्ठक अधोभागमे कृष्णाभिसारिका विषयक लगनी गीत देल छैक ! गीतक नीचाँ मे देल छैक 'पं० श्री चक्रधर झा'। ई गीत पं० चक्रधर झाक रचित थिकनि अथवा हुनक द्वारा प्रेषित ककरो अनकर, से स्पष्ट नहि होइत अछि। गीत देखला उत्तर स्पष्ट भ' जायत जे एहि नाटकक प्रसंगसँ कोनो सम्बन्ध नहि छैक। मुदा कविवर जीवन झाक गीत-शैलीक छाप पूर्ण रूपे ँ अछि। गीत निम्न रूपक अछि—

गीत लगनी (कृष्णाभिसारिका)

सरस कमल किसलय मृदु चरणा रे,
कनक रुचिर छवि मनसिज शरणा रे,
दामिनि द्युति पथ हेरि देरि नहि लाबथि रे की।
उरु रुचि कबिवर-कर-अनुकरणा रे,
नील वसन घन सन मनहरणा रे,
रति-पति-नारि-समान आन नहि लागथि रे की।

---

1. दूनू अशुद्धि के ँ यथानिर्दिष्ट सुधारि देल गेल अछि।

Scanned by CamScanner

गगन निकट हुवतट परिचरणा रे,
युवजन मानस कवल न करणा रे.
उर गिनि कनक महीधर शुभ गजनिक घर रे की।
चिकुर निकर-जित तमतति रजनी रे,
चढ़लि मनोरथ रथपथि सजनी रे,
देखति प्रियतम गेह नेह वश नित डर रे की।

प्रथम अंकक समाप्तिक पश्चात् जे अंश उपलब्ध अछि ताहिमे अग्रिम अंकक आरम्भ वा समाप्तिक सूचना नहि देल अछि। जतबा अंश सम्प्रति उपलब्ध अछि ताहिमे पूर्वापर क्रमसँ बिचार कयने कोनो व्यतिक्रम नहि बूझि पड़ैत अछि। कोनो ठाम कथावस्तु खण्डितो नहि लगैत अछि। अन्तिम अंशमे गीतक संख्या बेसी अछि। जीवन झाक सामवती-पुनर्जन्म ओ सुन्दर संयोगक अन्त सेहो एहिना गीतमय अछि। एहिसँ निश्चय होइत अछि जे इहो नाटक एतबेमे सम्पन्न भेल अछि। नर्मदा ओ सागरक विवाहक कथा निश्चय भ' गेलाक पश्चात केवल दुहूक विवाह-विधि सम्पन्न करायब शेष रहि गेल अछि। परन्तु नाटककार विवाह-विधिक चित्रण सामवती-पुनर्जन्ममे क' चुकल छलाह तेँ एत' ओकर पुनः चित्रण पुनरुक्ति भ' जयतनि, अतः ओहि अंशकेँ छोड़िए देब लेखकके अभीष्ट छलनि। नर्मदा-सागर सट्टकक कथावस्तुक प्रसंग एकटा रोचक विशेषताक उल्लेख क' देब' चाहैत छी। सुन्दर-संयोग नाटकक नायक थिकाह देवनगरवासी पण्डित सुन्दर मिश्र आओर नायिका थिकीह सरला। सुन्दर संयोगमे नवविवाहित दम्पतीक प्रेम, विरह ओ मिलनक कथा देल गेल अछि। नर्मदा-सागर सट्टकक नायिका थिकीह नर्मदा जे ओही देवनगरवासी पण्डित सुन्दर मिश्र ओ सरलाक कन्या थिकीह। एहि नाटकमे दूनू व्यक्ति प्रौढ़ ओ उत्तरदायित्वसँ पूर्ण पति-पत्नीक रूपमे चित्रित भेल छथि। सुन्दर संयोगमे परिणयोत्तर प्रादुर्भूत प्रेमकथा अछि। नर्मदा-सागरमे परिणयपूर्वक प्रेमकथा चित्रित भेल अछि। सुन्दर संयोगक प्रेम परिणयक परिणाम थिक। नर्मदा-सागरमे प्रेमक परिणाम थिक परिणय।

सुन्दर संयोगक सुन्दर ओ सरला प्रेमरस-सिक्त युवा दम्पति छथि। हुनक नर्मदा-सागरमे नायिकाक माता-पिताक रूपमे अवतारित करबाक पाछाँ नाटककारक की उद्देश्य छलनि, तकर व्याख्या कयल जयबाक चाही। मुदा से भार आलोचके लोकनि पर छोड़ि दैत छियनि।

कविवर जीवनझाक नाटकक समीचीन मूल्यांकन ओ समालोचना हमरा ज ैत एखन धरि नहि भेल अछि। हुनक नाट्यवस्तु, अभिनयशैलो, संवाद, मानबाक हेतु बुद्धि तैयार नहि अछि। हुनक नाट्यवस्तु, अभिनयशैली, संवाद ओ भाषाशैली, गीतविधान ओ रंगमंच पर व्यवस्थित रूपसँ विचार क' एकटा निश्चित अवधारणा स्थिर कयल जयबाक चाही। ई कहब उपयुक्त नहि होयत जे ओ केवल मैथिलीक प्राचीन नाटकक गीतक महत्त्वके स्वीकार कयलनि, नवीनताक नाम पर केवल मैथिली संवाद ओ सामाजिक नाट्य वस्तुक समावेश क' सन्तुष्ट भ' गेलाह। मिथिला-मोद ओ मैथिल महासभाक देशोन्नति-आन्दोलनसँ प्रेरित नहि भेलाह। कोनो नवीन रंगमंचक सर्जन नहि क' सकलाह।

सर्वप्रथम मिथिलामोद ओ मैथिल महासभाक आविर्भाव तहिया भेल जहिया कविवरक जीवनक अन्तिम चरण बीति रहल छल। दोसर, अपन आविर्भाव-कालमे मिथिलामोद ओ मैथिल महसभाक देशोन्नतिक कल्पना ने ओतेक स्पष्ट छलैक, ने प्रभावशाली। ओहिसँ प्रभावित होयबाक संभावना जीबनझामे करब व्यर्थ थिक। परन्तु सामाजिक दशासँ कविवर जीवन झा अपरिचित नहि छलाह। मैथिल समाजमे काटरक प्रथा, जाति-पाँतिक नामपर कन्याक ऊपर होइत अन्याय एवं अन्य सामाजिक कुप्रथा सभ पर प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपें नाटककार जे आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखलनि अछि तकरा की सर्वथा अस्वीकार क' देल जाय।

सुन्दर-संयोगके पति-पत्नीक प्रेम एवं वियोग-मिलन कथा मानल जाइत अछि। एही रूपमे एकर प्रशंसा सेहो होइत रहल अछि। परन्तु हमर धारणा अछि जे नाटककार समाजक ओहि मानसिक स्थितिक चित्रण कयलनि अछि जे जाति-पाँजि, कुलीनता, बिकौआ प्रथा इत्यादिक आधार पर प्रचलित बहुविवाह ओ पत्नी-परित्याग सन विकृतिसँ उत्पन्न होइत छल। तथाकथित कुलीन जन एक-एक क' अनेक विवाह करैत छलाह आ पत्नीकेँ नैहरमे छोड़ैत जाइत छलाह। कोनहु भलमानुसक पत्नीक जीवन भरिक यैह नियति रहैत छलैक। विवाह क' क' जाइत छलथिन तँ जीवन भरि आपस नहि अबैत छलथिन। दाम्पत्य-सुख एहन कन्याक हेतु आजीवन अननुभूत सत्य बनल रहि जाइत छलैक। ओ ने कुमारिए रहैत छलि ने यथार्थमे सधवे। सधवा रहितो

Scanned by CamScanner

वैधव्य-वेदना सहैत छलि। एहने स्थितिक चित्रण एकटा कविक एहि पंक्तिमे भेटैत अछि—

> सीमान्तक सिन्दूरक रेखासँ छी हम धनमन्ती।
> हाथक द्व लहठीसँ होइछ सधवामे नित गनती॥

कुलीनताक बलपर एक-एक व्यक्ति, सात्ते साल विवाह करैत जायब सामान्य बात बुझैत छल जेना लोक कपड़ा फेरैत अछि। एहनो होइत छलैक जे एक ठाम बिवाह कयलक, चतुर्थी सम्पन्न क' क' फेर दोसर गाममे जा क' विवाह क' लेलक। कुलीन वर एकबेर सासुरसँ बिदा भ' गेल तँ फेर ओकर पलटि क' अयबाक आशा नहि रहैत छलैक। एहनो परिस्थिति होइत छलैक जे अधिक दिन भेलापर आकृतियो विस्मृत भ' जाइत छलैक। वर अपन सासुरक लोक, पत्नी पर्यन्तकेँ नहि चिन्हैत छल। अल्प परिचयेमे परित्याग भ' गेलासँ अल्पवयस्का पत्नी ओ सतत मरैत कढ़ने रहनिहारि सासु जँ अपना कुटुम्बकेँ नहि चीन्हि पावय तँ से सहज-स्वाभाविक।

एहन परिस्थितिमे कन्याक माता, पिता, समाज ओ स्वयं ओहि कन्याकेँ केहन मानसिक पीड़ा होइत छल होयतैक, निराशा ओ विषादसँ आच्छन्न मनःस्थितिमे कोना जीवन-यापन कर' पड़ैत छल होयतैक, से कल्पनेक विषय प्राप्त भ' गेलेँ केहन उल्लास होइत होयतैक, केहन हर्ष होयतैक कन्याक माता-पिताकेँ, सेहो कल्पनेक विषय भ' सकैत अछि।

मिथिला ओ मैथिलीमे प्रचलित 'कन्यादानी' शब्द ओही परिणीता किन्तु पति-परित्यक्ता नारीक यातनामय इतिहास अपनामे समेटने अछि।

मिथिलामे ई बिकौआ ओ कन्यादानी प्रथा वर्तमान शताब्दीक आरम्भिक चरण धरि पूर्ण सशक्त ओ जीवन्त छल। सामाजिक जीवनमे प्रतिष्ठाक आधार बनल छल। जीवन झा एहि परिस्थितिकेँ नीक जकाँ देखने छलाह। एकर दुष्प्रभावक अनुभव कयने छलाह। समाजक ओही परिवेशमे कन्यापक्षक विशेषतः परिणीता कन्याक मानसिक अन्तर्द्वन्द्वकेँ सुन्दर-संयोगमे अभिव्यक्त कयलनि। समाजक सोझा सुन्दर मिश्र सन आदर्श पुरुषकेँ प्रस्तुत कयलनि।

सुन्दर मिश्र अपन सासुरोक लोककेँ, अपनो पत्नीकेँ तखने चिन्हैत छथिन जखन पण्डाकेँ अपन सासुर ओ हुनक पुर्व पुरुषाक नाम-गाम बचैत सुनैत

छथिन । एकर कारण ई जे चतुर्थिएक दिन ओ सासुर छोड़ि देने छलाह। अपना लोकके नीक जकाँ चीन्हियो ने सकल छलाह। इयैह परिस्थिति सरला, सरलाक माय सरस्वती, सरलाक परिवार, सखी-बहिनपा ओ समाजक संग छल। परन्तु सभक मनमे आशंका छलैक जे भलमानुस सुन्दर मिश्र विवाह क' क' चल गेलाह तँ अपने भलमानुस बिकौआ वर जकाँ आपस नहि ने आबथि। ओही मानसिकताक अभिव्यक्ति सरस्वतीक उक्तिमे भेटैत अछि जखन ओ वैद्यनाथके प्रार्थना करैत छथिन—

'हे वैद्यनाथ! जे जे कबुला कैल सभ मनोरथ पूरल, आब जमाइके कुशलपूर्वक देखी से वरदान दिअ।'

दोसर ठाम सरस्वतीक मनोभाव आओर पल्लवित भेल अछि जखन अनचीन्हमे (अपन जमाय) सुन्दर मिश्रके कहैत छथिन्ह—

'ऐ बाबू! हमरा से पुण्य रहैत तँऽ एकर ई वयस भेलैक, जमाय चतुर्थिअहिक दिन एकरा दुःखित छोड़ि कँऽ चल जे गेलाह से आइधरि उदेशो ने पबै छिएन्हि।'

पण्डाइन जखन संकेत करैत छथिन जे 'पण्डित बाबू (सुन्दर) सरलाक वर थिकथिन्ह' तँ हुनक निराशा व्यक्त होइत छनि—

'एहन भाग हमर कहाँ जे जमायके देखब परन्तु वैद्यनाथ बड़ गोट थिकाह।'

दोसर दिस सरलाक मनोव्यथा तावत धरि अव्यक्त रहैत छैक जाबत धरि ओकरा संकेत नहि भेटैत छैक जे पण्डित बाबू संभवतः ओकर वर थिकथिन। तत्पश्चात् ओकर विरह-व्यथाक अभिव्यक्ति होइत छैक। मुदा ओ सामान्य विरह नहि थिक। सरलाक उक्ति सभमे गद्य ओ गीतमे, सामाजिक परिवेश-जन्य विषाद बजैत अछि। सरलाक उक्ति 'हे बैद्यनाथ! ऐं तरहे दुःखिनी के किए सतबै छहक' मे 'दुःखिनी' शब्दक मार्मिकताक अनुभूति तखने भ' सकैछ जखन ओहि कालक सामाजिक परिवेशक अनुभव हो। ओही सामाजिक कुप्रथाक पृष्ठभूमिमे सरलाक उक्तिक विशेषार्थ बोध भ' सकैछ जे—

'एतदिन शिव पद सेबल, केवल एतबहि काज।
से प्रसन्न वर भाषल, राखल मोर कुल लाज॥

'बुझा देमक तँ चाही कोखना अनजान नेँ कनिएँ।
जे ई अपराध छौ तोहर किए हमरा सँ रूसल छी।।'

सरलाक विरह पूर्वराग, मान वा प्रवासजन्य मात्र नहि थिक। सामान्य प्रेमी-प्रेमिकाक विरहक स्वरूप काव्यशास्त्रीय होइत अछि परन्तु सरलाक विरह समाजशास्त्रीय विषय थिक। समाजक परिस्थितिसँ उत्पन्न भेल अछि। एहि तथ्यकेँ नाटककार नाटकक अन्तमे स्पष्ट करैत छथि। सुन्दर सासुरसँ गाम जयबाक प्रस्ताव करैत छथि तँ सरला उद्विग्न भ' जाइछ 'हमरा तँ तीन दिन सँ बूझि पड़ैए जे एहि लोकक मन फेरि अन्तऽ गेलैक।' ओ सुन्दर केँ कहैत छथि जे—

'और नहि किछु, जे फेरि ओएह बरहमासा सबने गाबक पड़ै।'

सुन्दर जखन ओहि बरहमासा गीतक जिज्ञासा करैत छथिन तँ सरला उत्तर दैत छनि—

'छओ मासक प्राप्त जखन लोक बाजै जे आब नहि औथीन तखन सँ कादम्बरी बहिनक संग इएह गीत सब गबै छलहुँ।'

एहि सँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे सुन्दर-संयोग नाटकक कथा सामान्य प्रेम-कथा नहि थिक। ओ थिक मैथिल-समाजमे प्रचलित नारी-यातनाक मानस-इतिकथा। प्रकारान्तरेँ नाटककार ओहि प्रथाक प्रति अपन अरुचि सूचित करैत समाधान रूपमे सुन्दर सन आदर्श पुरुषक प्रयोजनीयता देखओलनि। सुन्दरमे आदर्श पतिक प्राण-प्रतिष्ठा क' क' समाजकेँ कान्ता-सम्मित उपदेश देलनि अछि। एकरा सुधारवादी दृष्टिकोण नहि कहल जायत तँ की कहल जायत ?

आनहुँ नाटकमे जीवन झाक विचारधारा सामाजिक पक्ष प्रतिबिम्बित भेल अछि। परन्तु ओहि पक्षक विश्लेषण एखन धरि भेले ने अछि। अतः जीवन झाक नाटक सभमे सामाजिक कथावस्तु अछि, मैथिल संस्कृतिक चित्रण अछि—एहि प्रकारक वक्तव्य द' क' आलोचक लोकनि विश्रान्त भ' जाइत छथि।

जीवन झाक नाटकमे मिथिलाक सामाजिक जीवनमे प्रचलित विवाह सम्बन्धी कुप्रथा सभक प्रति जे आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत अछि तकरा देखला उत्तर स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे नाटककार सामाजिक धारक प्रति

Scanned by CamScanner

पूर्णत: साकांक्ष छलाह। प्रमाणमे किछु उद्धरण प्रस्तुत कयल जा सकैछ। विवाह सन महत्त्वपूर्ण घटनामे सभसँ निरीह पात्री होइत अछि कन्या। सामवती पुनर्जन्मक प्रस्तावनामे नटीक द्वारा कहबाओल गेल अछि—

कन्या कुलमर्यादा बान्हलि फुजय मुह न बकार।

समाजमे कन्याकेँ पुत्रक अपेक्षा न्यून मानल जाइत अछि जे सर्वथा अनुचित। तेँ गौतमीसँ कहबाओल गेल अछि—

तखन पुत्र वा कन्या दू टा संसारमे हो छैक हम तँ बड़ि प्रसन्न छी।'

स्वजातियोमे जाति-पाँजि, कुलीन-अकुलीन, सोति-जोग-भलमानुस जयवार पठियार इत्यादिक विचार समाजमे घून जकाँ लागल रहलैक अछि। कन्या-विक्रय, बिकौआ प्रथा, बहुविवाह एवं अनेकानेक आनुषंगिक समस्याकेँ जन्म दैत रहल अछि। हमरा जनैत सर्वप्रथम व्यक्ति जीवन झा भेलाह जे अपन रचना द्वारा एकर साक्षात् विरोध करबाक साहस डेखओलनि। नर्मदा-सागर सट्टकमे सुन्दर मिश्रक उक्ति एकर ज्वलन्त प्रमाण थिक। मोदन मिश्र सुन्दर मिश्रकेँ नीक जाति-पाँजिक वर त्रिविक्रम ठाकुरक संग नर्मदाक विवाह करयवाक विचार दैत अपने मतक समर्थनमे कहैत छथिन—

कुलहीन जमाय-अधीन कुलीन सुता अनुताप सदा सहती।
बसि नीच मनुष्यक बीच यथोचित नीच कथा कहती सुनती॥
पठियार अगार अचार विचार विचारि विचारि व्यथा सहती।
परिवार समान जहां न तहाँ भरिजन्म कोना सुखसौं रहती॥

एहि पर सुन्दर मिश्र कहैत छथिन—

उत्तम जाति जमाय असङ्गत कष्ट सुता सभ काल जनाउति।
सासु दयादिनि आदि अनादर बाद कथेँ कुल छोट गनाउति॥
जीउतिजोँ सहि गारि कदाचित मातु पिता हित बन्धु कनाउति।
ई असमञ्जस हैत निरर्थक ऊँचक सङ्ग जे नीच बनाउति॥

बन्धुजीवक बिकौआ मनोवृत्ति ओ पुनर्विवाह करबाक चेष्टाक प्रति सारस्वत ओ वेदमित्रक तिरस्कार भावसँ लेखकक अपन विचारधाराक परिचय भेटैत अछि। जखन बन्धुजीवनक मुखसँ कहबाओल जाइछ जे—

हम पुनि कतहु बिकायब पोसब अपन समाङ।

तँ एहि उक्तिसँ बिकौआ प्रथाक निन्दा स्पष्ट झलकैत अछि। सामवती-पुनर्जन्ममे घटक द्वारा सारस्वतकेँ वर पक्षसँ टाका गनयबाक प्रस्तावपर सारस्वतक उत्तर, एहिना नर्मदा-सागरमे त्रिविक्रम दिससँ नर्मदाक प्रति टाका गनबाक घटकक प्रस्ताव पर सुन्दर मिश्रक विपरीत प्रतिक्रियाक संग देल गेल उत्तर जे—

पिता आनि वर कन्याक वसन विभूषण युक्त।
सादर अर्पय मन्त्रवत से विवाह विधियुक्त॥

कविवर जीवन झाक सामाजिक सुधारक मनोवृत्तिक परिचायक थिक। एहिना अनेक प्रसंग सभ अछि जाहिमे सामाजिक समस्या अथवा ओकर सुधारक संकेत ताकल जा सकैछ। तेँ ई कहब संगत नहि जे जीवन झाक नाटकमे देशोन्नति, समाज-सुधार इत्यादिक प्रति निरपेक्षता वा उदासीनता छनि।

कविवर जीवन झाकेँ मैथिली रंगमंचक सम्बन्धमे अवधारणा अथवा ओकर नवनिर्माणक सम्बन्धमे कोनो परिकल्पना नहि छलनि—एहू मान्यता सँ हम सहमत नहि छी। जे व्यक्ति नाट्यविधि ओ प्रयोगधर्मी चारि गोट नाटकक रचना कयलनि तनिका-तनिका ओकर अभिनय तथा तदनुरूप रंगमंचक कल्पना नहि छलनि से मानब सर्वथा असंगत लगैत अछि।

किरतनियाँ रंगमंच नवयुगक रुचि ओ वातावरण अनुकूल नहि रहि गेल छल। अपना देशमे ओ किरतनियाँ रंगमंचक क्षयिष्णु स्वरूप देखने छलाह। मिथिलामे पारसी थियेटरकेँ सेहो लोकप्रिय होइत देखने छलाह। जीवनक अधिकांश भाग काशीमे बितओलनि। काशीमे सेहो पारसी थियेटर अनुभव भेल होयतनि कारण ओतʼ एहि प्रकारक अभिनय विशेष होइत छल। स्वयं जाहि रामनगर स्टेटमे जीविकापन्न छलाह से रामलीला-अभिनयक प्रमुख केन्द्र छल जतʼ विभिन्न धार्मिक अवसरपर रामलीला होइत छल; एखनहुँ ओ परम्परा विद्यमान अछि। एहि बातक चर्चा उपरे कʼ आयल छी। ओहि रामलीलाक रंगस्थली ओ अभिनयशैलीक अपन पद्धति ओ वैशिष्ट्य छलैक। एहू रामलीलाक जीवन झा प्रत्यक्षदर्शी छलाह। संस्कृत साहित्यक विद्वान् तँ छलाहे।

कविवर जीवन झा एहि तीनू रंगमंचक सम्मिश्रण तथा संस्कृत नाट्य-शास्त्रक संयोगसँ मैथिलीक अभिनव रंगमंच-निर्माणक दिशामे प्रयत्न आरम्भ

कयलनि। ओहि रंगमंचक हेतु सर्वप्रथम आवश्यक तत्त्व छल तदुपयुक्त अभिनेय सामग्री प्रस्तुत करब; से ओ क्रमश: चारि गोट नाटक रचलनि।

ओ संस्कृत नाट्यशास्त्रे नहि, संस्कृत नाटकहुसँ प्रेरणा लेने छलाह। नाटक सभक आरम्भमे प्रस्तावना नाटकक अन्तमे भरत-वाक्य नाटकक मध्य मे अंकविभाजन, गर्भांक, विष्कम्भक, आकाश-भाषित इत्यादि संस्कृत नाट्यशास्त्रक अनुसारे प्रयुक्त कयने छथि। तहिना स्थान-स्थान पर संस्कृत नाटक सँ प्रभाव ग्रहण कयने छथि।

मिथिलाक परम्परित गीतक बहुविध प्रयोग, विवाहक-विधिक नाट्यवस्तुमे सन्निवेश, घटक, शृंगार ओ भक्तिक युगपत् सन्निवेश, संवादक लौकिक स्वरूपक प्रयोग, भोजन-प्रियताक वर्णन इत्यादि किरतनियाँ अभिनयशैलीसँ ग्रहण कयल गेल अछि।

अंकक मध्य परिवर्त्तनशील विभिन्न दृश्यक संयोजन, पर्दाक उठबा खसबाक निर्देश, वार्त्तालापमे फकड़ाक प्रयोग, गीतमे प्रयुक्त कतिपय राग, कतोक गीतक छन्द, मैथिली ओ संस्कृतमे गजल इत्यादि स्पष्टत: पारसी रंगमंचसँ लेल गेल अछि।

जीवन झाक नाटकमे अनेक ठाम एहन दृश्य अछि जाहिमे निकटवर्ती दुइ स्थल पर समानान्तर अभिनय-व्यापार चलैत रहैत अछि। एहि प्रकारक समानान्तर दृश्य ओ अभिनय-व्यापार रामलीलारंग-मंच पर बेसी देखना जाइत अछि। नाटकक ओहन दृश्य रामलीलाहिक मंच पर अथवा अत्याधुनिक घूर्णमान रंगमंचपर संभव अछि। नेपथ्यसँ पात्रक मनोभाव सूचक गीतक गान जीवन झाक नाटकमे विशेष काल होइत अछि। ई पद्धति रामलीलामे सेहो होइत अछि। व्यास द्वारा रामायणक कथावस्तु ओ संवाद सूचक दोहा-चौपाइक गान नेपथ्ये गान तँ थिक जकरा परिस्कृत क' क' जीवन झा अपना नाटकमे लेलनि। ई देखि क' आश्चर्य होइत अछि जे बंगला, मराठी हिन्दी इत्यादिक अत्याधुनिक उन्नत रंगमंच पर एवं सिनेमामे सेहो पात्रक मनोभाव ओ परिस्थितिक संवेदनशीलता सूचक नेपथ्य-गीतक प्रयोग होइत अछि।

जीवन झाक नाटकक ओहि रामलीला-रंगमंच पर अभिनयो भेल छल। कहल जाइछ जे 'काशी नरेशक उत्साहेँ सामवती-पुनर्जन्म एवं सुन्दर-संयोग नाटकक मंच रामनगरमे भेल छल। राममगर काशीनरेशक राजधानी

Scanned by CamScanner

थिकन्हि। ओहिठाम विधिवत् प्रत्येक वर्ष रामलीला होइत छल।……रामलीलामे भाग लेनिहार व्यक्ति सभक द्वारा काशीनरेश उपर्युक्त दुन नाटकक मंच करौने लछाह।'' एहिसँ प्रमाणित होइत अछि जे जीवन झाक नाटक प्रयोगसिद्ध नाटक छल।

कविवर जीवन झाक भाषा-प्रयोग विशिष्ट प्रकारक छनि। गद्य ओ पद्य दुहूक भाषा सहज, सरल ओ स्वाभाविक अछि। गद्यक क्षेत्रमे जीवन झाक भाषाकेँ साहसिक प्रयोगक संज्ञा दी तँ असमीचीन नहि होयत। हुनक सोझाँ मैथिली गद्यक आदर्श स्वरूप नहि छलनि। हुनकासँ पूर्व कवीश्वर चन्दा झा पुरुषपरीक्षा केर अनुवादमे आधुनिक कालक प्रथम गद्यक नमूना प्रस्तुत कयने छलाह। परन्तु हुनक गद्य पण्डितामसँ युक्त, संस्कृत वाक्यविन्यासक यथावत् अनुसरण कयनिहार छनि। ओकरा आदर्श गद्यक रूपमे कथमपि स्वीकार नहि कयल जा सकैछ। आधुनिक मैथिली गद्यक स्वरूप-निर्धारणमे मैथिल-हित-साधन ओ मिथिला-मोदक योगदान अद्वितीय अछि। परन्तु यदि सुन्दर-संयोगक रचना १९०४ ई० मे भेल छल आ हमरा विश्वास अछि जे सामवती-पुनर्जन्मक रचना ओहूसँ पूर्व भेल छल, तँ मान' पड़त जे गद्यक स्वरूप-निर्धारणमे जीवन झाकेँ उक्त दुहू पत्रक गद्यशैली प्रभावित नहि कयलकनि। कारण मैथिलहित-साधनक प्रकाशन १९०५ ई०क चैत मास सँ आरम्भ भेल छल तथा मिथिलामोदक प्रकाशन १९०५ ई०क साओन मास सँ। तखन इएह संभावना अधिक जे उक्त दुहू पत्र जीवने झाक गद्यसँ प्रभावित भेल हो कारण ओहि दुहू पत्रक लेखक ओ सहायक जीवन झा छलाह।

जीवन झा भाषा-प्रयोगमे लोकधर्मिताक आश्रय विशेष लेलनि अछि। लौकिक प्रयोग हुनक आदर्श छलनि। तेँ हुनक शब्दावली, क्रियापद, वाक्य-विन्यास इत्यादि एखनहु युगसँ बहुत आगाँ छनि। क्रियापादक संक्षिप्त रूप ओ संश्लिष्ट क्रियापदक प्रयोग हुनक भाषाकेँ सहज ओ स्वाभाविक बना देलकनि अछि। ई स्वाभाविकता एवं भाषा-रूप सातमो-आठम दशकक कवि-लेखक अपना रचनामे नहि आनि सकलाह अछि। संक्षिप्त क्रियापद, यथा—**पड़ छथि, जाइ छी, गबै छी, अबै छी, धयलकै, अगुतैला, लगै छलै**, इत्यादिक परिनिष्ठित रूप पड़ैत छथि, जाइत छी, गबैत छी, अबैत छी, धयलकैक, अगुतैलाह, लगैत छलै; सेहो ओखन विशेष प्रचलित अछि। तहिना संश्लिष्ट

१. वैदेही, एकांकी विशेषांक, नव०-दिस० १९५८, पृ० ४८४।

क्रियापदक प्रयोग सर्वप्रथम जीवन झा आरम्भ कयलनि, जेना—**पड़ैए** (पड़ैत छछि, **फड़कैए** (फड़कैत अछि), **अयलाहय** (अयलाह अछि), रहलाहय (रहलाह अछि), **जाइए** (जाइत अछि), होइए (होइत अछि), इत्यादि। एहन प्रयोग जीवन झाक सभ नाटकमे प्रचुर परिमाणमे छनि।

संयुक्त क्रियाकें सटा क' लिखबाक प्रवृत्ति जीवन झाक गद्यमे विशेष भेटैत अछि। विभक्तिकें शब्दसँ हटा कऽ राखल गेल अछि परन्तु विभक्तिक स्वरूपमे एकरूपता नहि अछि, यथा—कञा, कां, काँ, कै, कें, कें; स, सं, सऽ, **सँ**, मे, मेँ। सबसँ विशेष ध्यान देबाक वस्तु थिक विलम्बित अथवा दीर्घ अकारक हेतु विकारी (ऽ) केर अनवरत प्रयोग। निदर्शनार्थ किछु प्रयोग उद्धृत अछि, यथा—**सऽ**, संऽ, तऽ, तऽ, हंऽ, **की** दंऽ, भऽ, वऽ, कंऽ, ओरिआबऽ, लेबऽ **पड़त**, ञाहाँ **ई लियऽ**, गव करऽ लगलाह, दाइ **लोकनि कें** कहऽ **कहु** तऽ **आब** कतऽ छाड़लिएन्हि, **पहुँचऽ** दऽ कहैत रहथि इत्यादि। हुनक गद्य नहि, पद्योमे विकारी चिह्नक प्रयोग भेल अछि, यथा—

'आइ भरि मानि लिअऽ नाथ ने हठ जोर करू'
'बाजऽ भूकऽ ले जं कनेक जकर सोझ ओठ करू'
'अगहन प्रियतम बिछुड़लऽ। बड़ कुठाम पगु पिछड़लऽ।।'

इत्यादि।

एहन नहि जे एहि प्रयोगमे जीवन झा एकसरे छलाह। मैथिल-हित साधन ओ मिथिलामोदहु द्वारा ठाम-ठाम प्रयोग कयल जाइत छल। अतः निष्कर्षक रूपमे कहब जे मैथिलीमे विकारी (ऽ) चिह्नक प्रयोग ओतबे पुरान अछि जतेक पुरान आधुनिक मैथिली साहित्य किंवा मैथिली गद्य अछि। आशा करक चाही जे एहि प्रयोग-निदर्शनसँ ओहन महानुभाव अपन जिज्ञासाकें शान्त करताह जे विकारी-प्रयोगकें बड़ नव बुझैत छथि।

जीवन झाक नाटकमे किछु एहनो प्रयोग सब अछि जे मध्यकालमे प्रचलित छल परन्तु आब समाप्त भ' गेल अछि। लगैत अछि जेना हुनका समय धरि लोकमे प्राचीन प्रयोगक किछु रूप अवशिष्ट छल। वलाँ (सम्बोधन हेतु), ञाहाँ, **चलबाँ** (चलबामें—ओहिठाम चलबाँ क्षति की ?), **देखलैक** (देखलिऐक बा देखयलैक), **घटकना** (घटना), **कहलहु** (कहलिअहु—ई त **कहलहु** परन्तु आगाँ सुनह), **कहलैन्हि** (कहलिऐन्हि—हम हुनका झझकारि कऽ **कहलैन्हि**), इत्यादि प्रयोग आब श्रुतिगोचर नहि होइत अछि।

कविबर जीवन झाक नाटकक भाषा पर काव्यशास्त्र ओ भाषाविज्ञानक

Scanned by CamScanner

दृष्टिसँ विचार करबाक आवश्यकता अछि आ ओ यथाशीघ्र कयल जयबाक चाही।

ज्यौतिषी पण्डित बलदेव मिश्र यज्वालय जीवनझाक प्रति अपन संस्मरण मे हुनक दौहित्र पण्डित लक्ष्मण झा सहित मैथिली सेवी लोकनिकेँ सम्बोधित करैत लिखने छलाह जे—

> "काशीक राजपण्डित लक्ष्मण झाकेँ उचित थिकनि जे खोज कऽ कऽ पण्डित जीवन झाक अन्यान्यो कृतिक प्रकाशन करथि ओ मिथिला-मोदमे प्रकाशित हुनक काव्य सभक संग्रह कऽ सुन्दर संयोग नाटकक संग प्रकाशित करा देथि। हेतु जे सुन्दर संयोग पुस्तको तत्काल अप्राप्य छैक। पण्डित जीवनझाक काव्य जाहिसँ सभकेँ उपलब्ध होइनि तादृशे व्यवस्था मैथिली समर्थक लोककेँ कर्त्तव्य थिक, कारण जे पण्डित जीवन झाक काव्यसँ लोककेँ प्रेरणा भेटतनि ओ तादृशे मिथिलाभाषा लेखक प्रारंभस्थितिमे भेल छथि। मैथिलीसेवी लोकनि पण्डित जीवन झाक नाम तँ वहुत सुनैत छथि, किन्तु हुनक कृति बड़ अल्प मात्रामे पबैत छथि तेँ हुनक कृति सर्वसुलभ होयव समुचित थिक।" (मिथिलामिहिर, २० मई, १९६२)।

एही उत्कट प्रयोजनक सन्दर्भमे वर्त्तमान संग्रहक आयोजन कयल गेल अछि। एहि ठाम जीवन झाक यावन्तो उपलब्ध रचना एकत्र करबाक प्रयास कयल गेल अछि। अनवरत प्रयत्न कयलो उत्तर कविवरक कोनो अप्रकाशित रचना अथवा हुनक हस्तलेख उपलब्ध नहि भ' सकल। जे किछु संकलित भ' सकल से प्रकाशिते स्रोतसँ। परन्तु ओहूमे अधिकांश आब दुर्लभे नहि, अलभ्य भ' गेल अछि। तेँ मैथिली सट्टकक कियदंशमात्रे भेटि सलक। नर्मदा-सागर सट्टक सेहो जतबा प्रकाशित भेल छल से समग्र रूपमे भेटि गेल से विश्वास-पूर्वक नहि कहल जा सकैछ। इयैह स्फुट गीत ओ पद्यहुक सम्बन्धमे बौद्धव्य सामवती-पुनर्जन्म आइसँ साठि वर्ष पूर्व प्रकाशित भेल छल, से आब सर्वथा दुर्लभ। जनिका लगमे ओ छनियो से छुबैत मात्र चूर-चूर भ' जयबाक स्थितिमे। अतः एहन परिस्थितिमे वर्तमान संग्रह नितान्त आवश्यक छल। परन्तु जतबा सामग्री सहित जाहि रूपमे प्रस्तुत भ' सकल, सम्प्रति ओहीसँ सन्तोष कर' पड़त। आशा करैत छी जे मैथिलीप्रेमी ओ अध्येता गणक मध्य एहि संग्रहक माध्यमसँ कविवर जीवन झाक साहित्यिक प्रतिभा, साहित्यमे हुनक योगदान ओ ऐतिहासिक महत्त्वक समुचित मूल्यांकन संभव भ' सकत।

Scanned by CamScanner

एहि दीर्घकालिक आवश्यकताक पूर्त्ति कयल गेल अछि मैथिली अकादमी द्वारा। एहि हेतु सांगोपांग मैथिली अकादमीक प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करब सम्पादकक कर्त्तव्ये थिकनि। कृतज्ञ छियनि अकादमीक अध्यक्ष श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'क प्रति जे कविवरक रचना सभक संकलनक प्रकाशनमे व्यक्तिगत रूपसँ अभिरुचि ल' क' प्रोत्साहित कयलनि।

ग्रन्थक सम्पादनक सम्बन्धमे किछु स्पष्टीकरण अपेक्षित अछि। सम्पादनमे एहि सिद्धान्तकेँ स्मरण राखब आवश्यक जे आधार-सामग्री यदि अत्यन्त दूषित नहि हो तँ ओहिमे हस्तक्षेप नहि कयल जाय। मूल विषय-वस्तुक प्रसंग तँ कथमपि श्रेयस्कर नहि। यदि मूल कतहु खंडित हो तँ ओकरा यथावत् छोड़ि देल जाय। यदि कोनो सम्पादकीय अभिमत हो तँ तकर निर्देशे कयल जाय। प्रस्तुत ग्रन्थमे तकर पालन कयल गेल अछि। लेखकक भाषा, लेख-पद्धति इत्यादिमे कोनहु प्रकारक चेष्टा अनर्गल होइत। यदि कतहु एहन भ' गेल हो तँ प्रमादवश बूझल जाय। हँ, मूलमे संयुक्त क्रियाकेँ अधिकांश ठाम समस्त रूप तथा विभक्तिकेँ शब्दसँ हटा क' प्रयोग भेल अछि, तकर पालन प्रस्तुत संस्करणमे नहि भ' सकल अछि। सामवती-पुनर्जन्म ओ सुन्दर-संयोगक जाहि संस्करणक उपयोग कयल गेल अछि ताहिमे मुद्रणजन्य त्रुटि रहि गेल छलैक। ओकर मार्जन हेतु जे त्रुटिपरिशोधन पत्र देल गेल छल तदनुसार वर्त्तमान संस्करणमे संशोधन क' देल गेल अछि। किछु आओरो छोट-छोट अनिर्दिष्ठ मुद्रण दोषक संशोधन कयल गेल अछि। एहिसँ अतिरिक्त जत' कतहु कोनो परिवर्त्तन कयल गेल वा परिवर्त्तक अपेक्षित अछि तकर निर्देश तत्रैव टिप्पणीमे क' देल गेल अछि। मुद्रित पोथीमे अनेक ठाम रंग-निर्देश ओ संवाद मिश्रित छल अथवा रंग-निर्देशक अभाव छल तकरा स्पष्ट क' देल गेल अछि। मूल प्रतिमे पात्रक नाम-संकेत संक्षिप्त रूपमे देल अछि, एहि ठाम पूर्ण नाम देल गेल अछि। संवादक स्पष्टताक हेतु अनेक स्थल पर विराम चिन्ह अपेक्षित छल, तकर प्रयोग कयल गेल अछि।

हमर विश्वास अछि जे एहि प्रकारक परिवर्त्तनसँ मूलकेँ कनेको हानि नहि भेलैक अछि आ एहिसँ पाठक एवं जिज्ञासुकेँ कोनो असौकर्य नहि अपितु सौकर्य होयतनि।

२ जनवरी १९८० — रामदेव झा

कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा।

Dr. Ramdeo Jha

सामवती-पुनर्जन्म

(नाटक)

सामवती-पुनर्जन्म

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

सुमेधा—नायक।
सामवान—सारस्वत उपाध्यायक पुत्र।
सारस्वत उपाध्याय—सामवानक पिता।
वेदमित्र मुनि—सुमेधाक पिता।
बन्धुजीव—सुमेधाक मित्र।
यज्ञदत्त—वेदमित्रक शिष्य।
जटिल—सारस्वत मुनिक शिष्य।
विदर्भराज—विदर्भदेशक राजा।
वसन्तक—राजाक मुहलगुआ।
देवशर्मा—विदर्भराजक पुरोहित।
कलियुग, अमात्य, भिक्षुक, घटक।
गोनड़ा—सारस्वत मुनिक चाकर।

स्त्री-पात्र

सामवती—नायिका, सारस्वत मुनिक पुत्री।
गौतमी—सामवतीक माय।
मनोरमा—सामवतीक भाउजि।
मधुरवचना, चपला, मालती—सामवतीक सखी
वधू—बन्धुजीवक स्त्री।
मरहन्नदाइ—बन्धुजीवक माय।
कलावती—विदर्भराजक वेश्या।
सीमन्तिनी—विदर्भराजक रानी।
मदालसा, इन्दुवदना—स्वर्गक वेश्या।

Scanned by CamScanner

सामवती-पुनर्जन्म

प्रस्तावना

(बरवा)

गणपति पद सुरतरु वल रगड़ि कपार।
विधि कुलेख हाम शोधब एहि संसार॥

(सवैया)

शिर चन्द्रमा देखि चकाय चले अहि भूषन देखि डराय कतेकौ।
वर नांघट[1] देखि लजाय पड़ाइलि जाइछ के ककरा कत छेकौ॥
हुलसौ विहसौ गिरिजा शिव देखि मनोगत हो न विषाद कनेकौ।
हमरा प्रिय जीवन कां परिछौ जनु वा परिछौ अब काज न एकौ॥
सारि अहांस खेलाउ कोना हम जीतिय त अहां कूदि उठै छी।
व्याल कपाल त्रिशूल गजाजिन बाजि कथा डमरू पुनि दै छी॥
जीतल जौं एक बेरि अहाँ तहां हार नवग्रह किङ्किन लै छी।
मुग्ध प्रियाक कथासँ हसैत विनोदमे देव सों मोद मङै छी॥

(ई नान्दी भेला उत्तर)

सूत्रधार—श्रीमान् महाराज सापेक्ष ओ सोत्कण्ठ बूझि पड़ै छथि, महामहोपाध्याय लोकनि हमरे मुँह ताकि रहला हय, तखन विलम्ब करी से उचित नहि। एहि गुणग्राहि-सभाक योग्य कोन नाटक हो से नहि फुरैछ तेँऽ अपना प्राणप्रिया सँऽ पूछी। (नेपथ्य दिश देखि) अय! कतय छी, कने एम्हर आयब।

नटी—(आबि क') प्राणनाथ। यैह हम अयलहुँ, कोन काज अछि?

सूत्रधार—एहि सभाक परितोष योग्य नाटक मन पाड़ि दीअ।

नटी—अहाँ केँ त ततेक हमर काज रहै अय जे लाज निबाहब सकसिहनि भेल, बरुक अहै माउगि होइतहुँ।

सूत्रधार—से कतहु भेलैक अछि, आब त जे ह्वैबाक छल, भेलहुँ।

1, 'तांगट' उचित।

नटी—आबहु ईश्वर सँ कोनो दुर्घट नहि ।

सूत्रधार—ई : कयल हँसी परन्तु सामवतीक पुनर्जन्म मन पड़ि आयल ।

नटी—से त बड़ दिव्य हयत, जेहन गुणज्ञ सभा तेहने अभिनय ।

सूत्रधार—से त हमरहु बूझि पड़ैअय जे—

देखि पुरातन कविजन लेख, बूझिय कविता उचित विशेष ।
मिथिला-भाषा सरल विचाड़ि, पर भाषा सम्मेलन छाड़ि ।।
विरचल यज्वा जीवन शर्म, जे जानथि सब कविता मर्म ।
बुध सदस्य गुणग्राही भूप, दृश्य सामवत कथाऽनुरूप ।।

नटी—सवर्थि उत्तम । मारीष कञ ओरिआबऽ कहिऔक, हम आङन जाइ छी ।

सूत्रधार—यावत् हम ओरिआओन करबै छी तावत् एक टा महेशवानी लोक- कञ सुना दिऔक ।

नटी—बड़नी, हम मबै छी ।

हिमगिरिकाँ भरि गामक माउगि कहि-कहि देछ धिकार ।
गौरी लय कोन ज्ञाने कयलहुँ एहना वरक सकार ।।
देह न वसन विषम पुन लोचन हाथहु मुखहु विकार ।
नारद कतबो कहतथि तइओ करितहुँ अहँइ नकार ।।
सदिखन भाङ्ग धुथूर चिबावथि देखिय उमत अकार ।
डमरू बाजय एक दिस डिमडिम छाड़य अहि फुफकार ।।
कन्या कुलमर्यादा बाँधलि फूजय मूँह न बकार ।
गुरु गुन गौरव गौरि गरीबिनी करतिह कोन प्रकार ।।
वेद पूरान बुझाबथि कतबओ करथि सभक सतकार ।
निज निज भवन फिरलि सभ जाइछ पूरय क्यो न हकार ।।
गौरी कल्पलता जीवनहित करथु सभक उपकार ।
आश्रित रहि कैलाश महीधर उपवन शिव-सहकार ।।

सूत्रधार—अहहह ! सभासद प्रसन्न बूझि पड़ै छथि । चलू आङन जे अगिला कर्त्तव्य सम्हारी ।

(दुहू जाइए)

इति प्रस्तावना

प्रथम अंक

(नैपथ्यमे गीत तिरहुत ध्रुपद)

कल्प निशि हरि नयन निद्रे कलुष रुचि जन गृह दरिद्रे ।
स्वमति मधु कैटभ विदारिणि सर्ग कारिणि हे । हां हां हां ॥१॥
स्वयम निशमपि निराकारा देवतनु भागावतारा ।
शत्रु सङ्कर शोर नर्द्दिनि महिष मर्द्दिनि हे । हां हां हां ॥२॥
कुचरुचा जित हेम कुम्भे सकर निहत निशुम्भ शुम्भे ।
रोपिताखिल यज्ञयूपे विविध रूपे हे । हां हां हां ॥३॥
कृपाकारि यथैव देवे तथा मयि निज चरण सेवे ।
अपि विधेया देवि जय-जय कर्म साधय हे । हां हां हां ॥३॥

(वन्धुजीवक प्रवेश, चारू दिश ताकि)

बन्धुजीव—यैह सामवान ओ सुमेधा चल अबै छथि तावत हम एहि पलाशक ओत भऽ नुका रहै छिय । दुहु गोटे लग औताह तखन ठाहि दऽ छिकि देबैन्हि । बुझि पड़ैए जे सारस्वत मुनि ओ वेदमित्र मुनि दुहु गोटे समीपहि छथि, ताही ठाँ जा कऽ अंठा कऽ खेलाय लागब । (तङ्पि क' चल गेल) ।

(पटी उठैए, मुनी गृहप्रान्तमे बैसल सारस्वत ओ वेदमित्र देखि पड़ै छथि ।)

सारस्वत—औ वलाँ ! हम अहाँ धन्य थिकहुँ । जेहने हमर अहां कां मैत्री अछि तदवस्थिते नेनहु दुहु गोटा कां छैन्हि ।

वेदमित्र—औ उपाध्याय ! से होबहि बुझैन्हि । संगहि पढ़लन्हि, सामने वयस छैन्हि परन्तु सौशील्य हमरहु लोकनि संऽ अधिक भेलैन्हि ।

सारस्वत—से सभ त बड़ सुन्दर जे आब समर्थ ह्वैत गेलाह तंऽ दुहु गोटाक विवाहक प्रबन्ध उचित थिक ।

वेदमित्र—बड़ उत्तम कहल (कने विचारिक') यद्यपि ब्राह्मणक विवाहमे अपद व्यय कोनो ने ह्वैइ छैक तथापि घटक-पजियाड़ जे कहताह ततबा टाका त अवश्य ओरिआ लेबऽ पड़त ।

Scanned by CamScanner

सारस्वत—हंऽ, से व्यतिरेक फडके कोना हयत ? (विचारि क) तंऽ यैह दुहू। गोटे कोनो राजाके (ई कहैत बाम बाँहि फरका क' चुप रहथि)

वेदमित्र—कहू-कहू, की कहऽ लगलहुँ ?

सारस्वत—औ जी ! बाम बाँहि किए फरकैए, जी डेरा गेल।

वेदमित्र—ओः सगुन असगुनक कोनो ठेकाने नहि तथापि सन्देह भेल त परमेश्वरक स्मरण करू।

सारस्वत—बड़ उत्तम कहल (दुहू हाथ जोड़िकंऽ)

(दोहा)

श्री शङ्कर सुत पद कमल, सुधा सरस मकरन्द।
पीवि भक्त मानस भ्रमर, पावय नित आनन्द ॥

(क्षण भरि चुप रहि कंऽ)

वेदमित्र—बहुत भेल, आब समाप्त करू। कहै छलहुँ से कहू।

सारस्वत—यैह जे राजा कै विद्यासँ सन्तुष्ट कय टाका लबै जाथु।

(नेपथ्यमे सुमेधाक स्वरें)

ओजी ! न्यायशास्त्र केहनो होऔ परन्तु शास्त्रार्थमे जीतयबे तंऽ करय।

(दोहा)

वेदान्ती वैयाकरण, साङ्ख्य योग पुनि जान।
नैयायिक सौं वाद खन, सब क्यो मूंदथि कान ॥
(सारस्वत ओ वेदमित्र नेपथ्य दिश ताकथि)

(नेपथ्य—सामवानक स्वरें)

औ साध्यायन आहां निश्चय कहै छी।

(जयकरी छन्द)

गणक विचारि मेटाबथु अङ्क योगी आसन करथु निशङ्क।
वैयाकरण कहथु सरछोटि भुतिअयला नैयायिक कोटि ॥

सारस्वत—देखू, विद्यार्थी सहित दुहू गोटे एम्हरहि त अबै छथि।
(कतेको विद्यार्थी सहित सामवान ओ सुमेधाक प्रवेश)

Scanned by CamScanner

(जयकरी छन्द)

सामवान सुमेधा	करिय पिता कां दुहू प्रणाम ।
सारस्वत	निके रहू बैसू यहि ठाम ।

शिष्यसभ—हमरहु लोकनि लगैछिय गोड़ ।

सारस्वत वेदमित्र	विद्या पढ़ू गुरुक सम जोड़ ।

वेदमित्र—आहां दुहू गोटें साङ्ख्य मीमांसा न्याय पढ़ल तैं सहजहि जें पढ़ावहु लगलहुँ तें हर्ष बड ह्वैछ ।

सारस्वत—ई सभ उचिते थिक परन्तु आहां दुहू साध्यायनक विवाह लय हमरा लोकनि अत्यन्त उत्कण्ठित छिय, से विदर्भक महाराज धर्म सिन्धु कां प्रसन्न कय धन लाउ जे मनोरथ पूरय। (वेद मित्रक दिश ताकि) आइ दिन उत्तमे छैक, एखन जाइ जाथु ।

वेदमित्र—अति कोन ? (सामवान सुमेधाक दिश ताकि)

(दोहा)

जीति सभा तत लाउ धन, जतबे हो निर्वाह ।
आबि कुशल सों हयत पुनि, दुहु गोटाक विबाह ॥

(नेपथ्य—बंधु जीवक स्वरें)

आहि रौ दैव ! (कूदि कऽ प्रवेश) दुहू गोटाक विवाह ! भला कहू तऽ हा आ अ !! एहिमे कोन कन्या कोन बर ?

सारस्वत—ओ बला ! ई बड़ असगुन भेल तथापि आबहुँ सम्हारि कऽ रक्षा कवच पढ़ि दिऔन्हि ।

वेदमित्र—कोनो क्षति नें, अक्षरकें जेम्हर लगाबी सैह अर्थ हो ।

(दोहा)

सदा इन्द्र-गुरु-गरुड़-रवि, स्वस्ति निवाहथु अङ्ग ।
दुहू गोटा कां मित्रता, निश दिन रहौ अभङ्ग ॥

बन्धुजीव—चारू देवताक चारि टा कँञ्चा ओ चारि टा लड्डू कहाँ अछि ?

सारस्वत—सभ ह्वयत, कुशल पूर्वक आबऽ तंऽ दिऔन्हि ।

Scanned by CamScanner

(नेपथ्य—आब अग्निहोत्रक कालातिपात होइए।

बदमित्र—(नेपथ्य दिश देखि) यज्ञदत्त ! सामग्री सभ वृत्त भेलहु ?

(दोहा)

(नेपथ्य)— आउ न करिय विलम्ब गुरु, यव तिल घी कुश फूल।
वज्र प्रणीता प्रोक्षणी, श्रुव शुचि सभ अछि तूल।।

सारस्वत—यौह लोकनि यज्ञ धूमिक प्रदक्षिणा करैत तखन जाथि।

बन्धुजीव—हौ यज्ञदत्त ! अतिथि लय चूड़ा दही लयलाहय कि नहिँ ? हमहुँ अबै छियहु।

(सभ चल गेल)

(पट उठैए, वन देखि पड़ैए)

(आँखि मिड़ैत कलियुगक स्वरूप आयल)

कलियुग[2]—अरो दैव ! ! ! ई यज्ञक धूआँ उकछा काढ़लक। काशी आदि देश सँऽ पड़ा कऽ वन लेल ततहु सँ हमरा उजाड़ऽ लय दुष्ट धर्म फाँड़ बंधले आयल। हा ! ! ! एहि धुआँ सँऽ आँखि ने बचतै।

(आकाश दिश ताकि)

अरो धर्म !

(चौपाइ)

मद्यपान कै उन्मद लोचन। लशुन गन्ध निःश्वास विमोचन।।
गोद्विज रुधिर पान दत रंगुआ। वेद विहित कर्मक हम भंगुआ।।
खयबहु काल अरबिए वाजी। हमरा सभके अपर समाजी।।
टूटल टांग फिरहि घिसिऔलें। तैयो पुनि हमरा खिसिऔलें।।

(नेपथ्य)—के दुष्ट मुनिक आश्रम लग गर्जैए ?

कलियुग—हां हां ! एखन धरि हमरा नहि चिन्हलैं ?

---

१. मुद्रित पोथीमे 'नेपथ्य' निर्देश अपेक्षित अछि।
२. मुद्रित पोथीमे 'कलियुग' निर्देश अपेक्षित अछि।

Scanned by CamScanner

(दोहा)

भाय भ्रूण-हत्याक पुनि, जननी गगनक माम ।
सोन चोराबक थिकहुँ गुरु, कलि थिक हमरे नाम ॥

(नेपथ्य)—तखन तपोवनमे की अयलाह, भट्ठी पर ने जाह ।

कलियुग—दुर्वासा मुनिक संग हमर मन्त्री क्रोध रहैए तकरा संऽ भेट करबाक काज अछि, ओतहि चलल हुएँ ।

(नेपथ्य)—(बन्धु जीवकस्वरें) मङ्गलम्भगवान्विष्णुः । सामवत !

कलियुग—ओः ! जाहि डरें पड़ायल फिरै छी सैह नाम सुनि पड़ल !

(पड़ाकऽ गेल)

बन्धुजीव—(आबि कऽ) पड़यलाह कतय, फराठी दिश ताकह । (थोड़े काल चुप रहि कंऽ) सामबान ओ सुमेधा अधिक दूर चल गेलाह, हम पछुआ गेलहु, भूखे व्याकुल छी, तँऽ अङनहि जाइ ।

(चल जाइछ)

(चानन कयले पाग, दोपटा, फूलक माला पहिरलेँ सामवान ओ सुमेधाक प्रवेश ।)

सामवान[1]—(वन दिश देखि) देखू तंऽ साङ्ख्यायन ! ई वन केहन उत्तम-उत्तम लता पुष्प तं परिपूरित बूझि पड़ैए ।

(संस्कृत वंशस्थ)

इतः शिरोधिष्ठित वानरार्जुना समन्ततश्च द्रुपदात्मसूचिता ।
सकर्ण शल्या शकुनिस्त्ररोहिता महाटवी भारत वाहिनी यथा ॥

सुमेधा—से सत्ये, एहि वनमे अबितहिँ शान्तिरस[2] संऽ हृदय आर्द्र भय गेल ।

संस्कृत शार्दूल विक्रीडित)

राजन्सिह करं गृहाण विटप-भ्रातः सह स्वस्थितिं,
स्वादुङ्कार फलोपचारमटवि प्रीतासि मातः पच ।

---

१. मुद्रित पोथीमे 'सामवान' निर्देश अपेक्षित छल ।
२. 'शान्तरस' उचित ।

वल्लि प्रेयसि पुष्पिणी भव ऋतौ चेतोजदु: खन्तुद
द्वन्दाख्यात्परदेशतोद्यमिलितः सोहं कूटुम्बे निजे ॥
आओर देखू तंऽ, ई वन गृहस्थाश्रमहुक धर्म निवाहैअय ।

(चौपाइ)

पक्व सरस फल भोजन दाने ।
कमल मरन्द मधुर जलपाने ॥
कदली दल दीयनि श्रम हरै ।
अतिथि जनक सत्कारे करै ॥
(नेपथ्यमे वीणा मृदङ्ग ध्वनि)

सामवान—कान दियऽ तंऽ। ई वीणा कतऽ वजैए ?

सुमेधा—एही लतामे तंऽ बूझि पड़ैए, देखू ने। हरिण सभ कान ठाढ़ कयलें एम्हरहि कंऽ विदा भेलअय (कने चुप रहि) आहा हा ! केहन उत्तम स्वर सूनि पड़ैए।

सामवान—हमहु राग सं वशीभूत भय गेल छी, चलू कने लग भऽ सुनू। देखबो करब जे बजौनिहार गौनिहार के थिक।

(जय करी छन्द)

धातु सूत्र पुनि सात विभक्ति
स्वरु पद शब्द साधना शक्ति।
वीणा अतिशय लगैछ नीक
व्याकरणक पोथी जनु थीक ॥
(दुहु गोटं ओही अनुसन्धाने चलै छथि)

(नेपथ्य)—हे सखी मदालसे ! बहुत गबैत वजबैत मेलहुँ, आब स्वर्ग चलह।

(दोसर स्त्रीक स्वर)—से सखी इन्दु वदने ! एक बेर बसन्तक सुर धरह तखन चलबै ने।

सुमेधा—स्त्रीगणक आलाप बूझि पड़ए।

सामवान—दुइ गोटे अछि, एक गोटाक मदालसा एक गोटाक इन्दुवदना नाम थिकैक स्यौह बूझल।

(इन्दुवदना ओ मदालसा गबैए)

(राग वसन्त)

वन बागमे राजत राज-वसन्त ध्रु०
ऋतुमति भय लतिका वनिता सम विदल कुञ्ज सरसन्त।
सरस रसाल मञ्जरी नूतन पिक पञ्चम विलपन्त ॥
मधुक पलाश तमाल पीलु अरु सिरिस कुसुम विकसन्त।
युवयुवती जन मन भावन सखि रहथु सतत दरसन्त ॥

सुमेधा—आब विलम्ब भेल, चलबाक चाही। (चलैए)

सामवान--साध्यायन ! जकर वाक्य एहन मधुर छैक से रूपहु संऽ अनुपमेय होइति।

(नेपथ्यमे)—जे स्त्रीक स्वर पर मोहित भय हमर अपमान करैत अछि से तद्रूप सर्वगुण सम्पन्न भय ई जन्म व्यतीत करत।

सुमेधा—ई स्वर महर्षि दुर्वासाक बूझि पड़ैए। हुनका संऽ क्षमाप्रार्थी होइ जे शापक उद्धार हो।

सामवान—हुनका ओतय जायब व्यर्थ किएक तंऽ हुनक शाप बिना भोग कयलें निवृत्ति नहि भय सकै अछि।

सुमेधा—हम अहैंक हेतु कहै छलहुँ, जेहन विचार हो। आब राज-भवनक समीप अयलहुँ। आब सन्नद्ध भऽ लिय।

(दुहुक प्रस्थान)

प्रथम अंक समाप्त

Dr. Ramdeo Jha
Kalipur.

Scanned by CamScanner

द्वितीय अंक

(दृश्य—महाराजक प्रासाद)

(द्वार पर एक प्रतिवेशी ठाढ़)

(सुमेधा ओ सामवानक प्रवेश)

सुमेधा— (द्वारपाल सँ) अपने श्रीमान् विदर्भराज सँ निवेदन करिऔन्हि जे सारस्वत मुनिक शिष्य सुमेधा ओ हुनक बालक सामवान दुहुगोटे द्वार पर उपस्थित छथि।

(द्वारपाल राज भवन मे जाइए)

सामवान—देखू तं, ई राज भवन केहन बूझि पड़ैए ?

(दोहा)

अम्बर छेदन चहत अब, अति आयत पुनि ऊँच।
जड़ित नील मन हरत जनु, बाला कामिनि कूच॥

(कतिपय व्यक्तिक संग पुरोहितक प्रवेश)

पुरोहित—औ मुनि बालक ! कोन उद्देश्य संऽ अयलहु अछि से कहूँ।

सुमेधा—हमरा लोकनिक सांख्य वेदान्त पढ़ल थीक। ताहि मे परीक्षा देमऽ ओ दुइ सहस्र टाकाक जाचना करऽ।

पुरोहित—विद्वानक पारितोषिक मे त एतवा नहि भेटि सकैत अछि। यदि दंपति पूजन मे नियुक्ति होइ तंऽ भय सकैत अछि।

सुमेधा—जेहन आज्ञा हो।

पुरोहित—परञ्च एहिमे एक गोटा कां कन्या बनाबक हयत।

सामवान—(सुमेधा दिसि ताकि) हमहि कुमारि बनब जाहिमे मुनिहुक शाप निवारण भऽ जायत

वसन्तक—परञ्च कोनो तरहक त्रुटि नै रहय।

(ई कहैत हसैत पाग कांखतर लै पड़ाइए)

Scanned by CamScanner

(दुहू गोटे क्रुद्ध ह्वैं छथि)

द्वारपाल—हुनका कथा वजबाक ठेकान नहिं छैन्हि। अपने लोकनि शान्त भेल जाय।

(देवशर्मांक संग दुहूक प्रस्थान)

(दोसर कात संऽ वसंतक अबैए)

बसन्तक--(ठाढ़ भऽ) मुनि पुत्र दुहू कतऽ गेला, हुनकहि कारणे हमर दुर्दशा भेलअय। देखैं छी किने, पाग उलडि गेल अछि। हिनका खिसिऔलैं विना रहलहुँ तंऽ हमहूँ महाराजक मुहलगुआ कथी लय।

द्वौवारिक—हां हां से जुनि करी। ई लोकनि बड़ विशेष थिकाह। महाराज सुनताह त खिसिअयता।

वसन्तक—लड्डूक सपथ खा कऽ कहै छी। महाराजक सोझहिमे खिसिअयबैन्हि। आजुक दिन महाराज हमरहु संऽ बजै छथि। मन नहि अछि जे परुकां एकरङ्गहिक अङ्गा बना देने रहथि।

(वसन्तक जाइए)

(देवशर्मांक संग सामवान ओ सुमेधाक प्रवेश)

सुमेधा—औ पुरोहित ! सूर्यास्त समय केहन बूझि पड़ैए।

(दोहा)

व्यर्थ आन कें ताप दय, के सुख भोगय भूमि।
से देखबैत पहाड़ सौं जलधि खसथि रवि घूमि॥

सामवान—अहहह ! चन्द्रोदय भेल। मध्य ठाम श्यामता तंऽ देखू। एकर वर्णन कवि लोकनि कतेक रीतिएं कयलैनिहैं परन्तु हमरा जनैत।

(दोहा)

गगन उदित भय चन्द्रमा विकसित करु संसार।
सकय नाशि नहि अपन तम, दीपक तर अन्धार॥

देवशर्मा—आब विलम्ब ह्वैए, महाराज प्रतीक्षा करैत हयताह, शीघ्र चलू।

(सभ जाइए)

Scanned by CamScanner

(सभामे बैसल परिवार सहित राजा देखि पड़ै छथि)

(मृदङ्गादि सहित कलावती नचैअय)

(गीत)

(तिरहुति धुनि मे होरी)

रंग रस होरी हो ॥ गायब सभ मिलि सङ्ग ॥ ध्रुपद ॥
रहसि रहसि सब फागु सुहागिनि गावय मनक उमङ्ग ।
पहु परदेश बिताओल हमरा (सखिहे) भेल मनोरथ भङ्ग ॥
उपवन कूजथ चातक कोकिल नाना रङ्ग विहङ्ग ।
देखि नवीन कुसुम तरु पल्लव थर-थर काँपय अङ्ग ।
फागुन सरस मास हम अवला वेधय वान अनङ्ग ।
कोन परि निबहब सहब दुसह दुख जौं नहि पिय परसङ्ग ॥
गजगामिनि कामिनि धरु धैरज करु जनि जौवन दङ्ग ।
बालम भेटत दुख मेटत पुनि हसब खेलायब रङ्ग ॥

(वसन्तकक प्रवेश)

वसन्तक—(आशिषक नाट्य संऽ)

(दोहा)

महाराजक मन हरलक नटी, कहौ लोक अवलाह ।
संय वर्ष संऽ जीबी जनि घटी, हम दै छी आशिर्वाद अहाँ कैँ ॥

राजा—आबहु वसन्तक, आजुक दिन तंऽ तोंही पण्डित ।

आमात्य—हौ वसन्तक ! ई कोन छन्द पढ़लऽ हय ।

वसन्तक—अपने जनितहि छी जे विषम छन्द थिक । प्रतिपद मे आने आन छन्द होइ छैक ।

आमात्य—बड़नी, हम जनै छी वा नहि, तों कहऽ जे प्रति पद आने-आन कहै छह से कोन-कोन होइ छैक ।

वसन्तक—आब हम कोना कहु, आहां के मने तऽ अछि 'प्रतिपद'

(वेश्याक दिस ताकि)

(चौपाई)

दुहू हाथ चमकाबय नाचय।
गायब यजुर्वेद जनु बांचय॥
हेंरि फेंरि हमरे मुँह ताकय।
ठाढ़ि न रहय पयर जनु पाकय॥

राजा—भला वेश्या कें वैदिक संऽ वा नाचबकें पयर पकबा संऽ कोन सङ्गति ?

वसन्तक—आहि, ई असङ्गति अलंकार थिक।

(जय करी चौपाई)

डांड़ केश ग्रीवा कर हार।
लोचन आनन कान कपार।
मटका मटकी गहना खोघा।
गुरु यजमानक पूत पुरोघा॥

आमात्य—दूर बूड़ि ! एहि सभ कें अन्वय कोना।

वसन्तक—ई अनन्वयालङ्कार थिक। (अण्ठा कऽ दोसर दिशि ताकि) ठाढ़ भेल छी तें ने सभ संऽ पहिने हमही देखल। आहाहाहा ! ! ! देखै जाउ, एकटा स्त्री पुरुष वेष बनौलें दुइ पुरुष सङ्ग एम्हरहि छलि अबैए।

(सभ उम्हरहि तकै अछि)

राजा—ई तंऽ देवशर्मांक सङ्ग मुनिबालक दूहू थिकाह।

वसन्तक—हम की दुर्वासा मुनिक पयर काल्हि नहि जतने रही।

(सुमेधा, सामवान ओ देवशर्मांक प्रवेश)

हम की फूसि बजै छी, देखैत तंऽ जाउ माउगिक सन सुन्दर छथि की नहि।

राजा—(हसिक) हौ वसन्सक ! मुनिकें प्रणाम कर बूझलहु की हँसी।

वसन्तक—होरिक दिनमे हसिअहि संऽ प्रणामो ह्वै छैक।

आमात्य—महाराज सावधान होथु, ओ तंऽ धूर्त्त थिक।

राजा—(स्वागत) हम तँऽ सावधाने छी परन्तु मन्त्री कहै छथि तँऽ हिनका लोकनि सँऽ किछु पुछवाक चाही (प्रकट) आयल जाओ मुनि बालक लोकनि ।

सुमेधा—(दुहू हाथ जोड़िकऽ)

(दोहा)

निशि दिन समुदित रहहु तुअ, सूर्य समान प्रताप ।
जेंहि पाबह हित कमल सुख, रिपु उलूक अन्ताप ।।

सामवान—भुवन उदित निशि दिन रहौ, कीर्ति सुधाकर तोर ।
—पाबय सुख जकरा निरखि, पण्डित चित्त-चकोर ।।

(सुमेधा ओ सामवान राजाक हाथ मे फूल दै छथि । राजा प्रणाम करै छथिन्ह)

(सामाजदो सभ प्रणाम करैए)

वसन्तक—किऔ मुनिपुत्र ! हम प्रणाम करू कि आशिष दियऽ ।

सामवान—अहाँ कें जे नीक लागय ।

वसन्तक—तखन आशिषे लियऽ ।

सुमेधा—अनुग्रह कयल जाओ ।

वसन्तक—तेल चिरौजिकदय एक माङ । दोसर दीसि उँगारह आङ ।
ऐठाँ सौं झटपट फिरि जाह । दुहु परस्पर करह विवाह ।

आमात्य—ब्राह्मण सँ हँसी नहि करक चाही । ई भूदेव थिकाह ।

वसन्तक—देवी सङ्गहि छथिन्हि, हुनका किए बिसरि गेलिऐन्हि ।

पुरोहित—श्रीमान् ! आब पूजनक समय निकट आयल । अतिकाल करी से आब उचित नहि ।

राजा—पूजनकेर सामान सभ संघटन भेल अछि ?

देवशर्मा—तिल अक्षत जल चन्दन फूल । भूषन वसन आसन अछि तूल ।
धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल । द्विज दम्पती पूजनानुकूल ।

(सीमन्तिनी सहित राजा आसन पर बैसथि)

(पुरोहित महाराजक हाथमे पुष्पाक्षत दै छथिन्ह)

(आवाहन मंत्र पढ़ैछथि)

दम्पति तनु अधिकृत करू' भगवति सह नटराज।
पूजन करिय यथाविधि सों हम, हो मम पूरन काज।

(बस्त्रादि पहिराय पुष्पाञ्जलि दक्षिणा दय राजा प्रणाम करै छथि)

सुमेधा—पूर्ण करथु शङ्कर सदा, मन वाञ्छित तव हर्ष।
अरूज दम्पतीसुत सहित, जीविय प्रभु शतवर्ष।

वसंतक—परमेश्वर दुहू जोड़ी कें कुशल सँऽ रखथुन्ह। आबहु तंऽ नूआ फोलिअ।

(ई कहैत वस्त्र घिचबाले हाथ बढ़बैत)

(सामवती लज्जा सँऽ नीचा मूह कयलें बाहर होथि)

सुमेधा—बिना विचार शील राजाक वहुत शीघ्र विनाश होइ छैक। से जँऽ राजामें कनेको विचार हयतैन्ह तंऽ बहुत शीघ्र एकर फल भेटतहु। (बाहर जाइए)

राजा—आमात्य!

आमात्य—महाराजधिराज!

राजा—एहना अपराध मे ब्राह्मणक जे दण्ड होइक, वसन्तक केर करिऔन्हि।

आमात्य—वसन्तक! हमरा मूहे आहां के देश त्यागक आज्ञा दै छथि। (नेपथ्य दिश देखि) प्रतिहारी! वसन्तक कें देश त्यागक प्रबन्ध कय दहुन्ह।

(वसंतक नीचा मूह कयले ठाढ़ छथि। प्रतिहारी हाथ पकड़ि लऽ जाय)

राजा—औ पुरोहित! हमर दण्ड जे हो से विचारै जाउ। सारस्वत मुनि अओता तनिक कोप संऽ कोना बांचब?

देवशर्मा—महाराज! 'नास्ति दैवात् परं बलम्' राजाक कानमे ई मन्त्र अपने सहस्त्र बेरि प्रत्यह जपल जाओ। परमेश्वरी रक्षा करतीह।

(सभ जाइए)

द्वितीयाङ्क समाप्त।

Scanned by CamScanner

तृतीय अङ्क

(पटीक्षेप स्थान—लतावृत कुञ्जवन)

(तखन सामवती ओ सुमेधाक प्रवेश)

सुमेधा—एहि सभ कारण संऽ राज्य निषिद्ध थिक। देखू त मदिरापान कयले केहन लाल-लाल आँखि छलैकय। छी छी! आब मन प्रसन्न भेल अछि महा अवग्रहमे पड़ल छलहुँ। हाअ! कोहुना ओहि सँऽ बहरयलहुँ। (सामवानक दिश देखि) आहि!! आहाँ के एखन धरि डर होनहि अछि। आब पूर्ववत् धोती पहिरू। गाम जायब तंऽ लोक की कहत? (स्वगत) ई त परमसुन्दरी दोसरे क्यो बूझि पड़ैए। साध्यायन रहितथि तंऽ हमरा संऽ एतेक लजइतथि कथीले। अथवा वेह थिकाह। निरन्तर सङ्गहि छी, दोसराक संदेह कोन। (प्रकाश) साध्यायन! अपना स्वरूपक स्मरण करू, आब एहि ठाम राजाक कोनो डर नहि। देखू, अपना गामक लग अयलहुँ।

सामवती—आब हमरा साध्यायन कहितहि रहब? हमरा अहांक संग कथुक डर नहि होए। (लज्जाभिनय

सुमेधा—(स्वगत) ईश्वरक चरित्र बड़ विचित्र बूझि पड़ैए परन्तु गुरु लोकनि देखथीन्ह तखन हमरा की कहताह? (सामवती दीश देखि) शीघ्र चलू, आहांकें गाम कँऽ द आउ।

(दुहू गोटे जाथि)

(पर्टाक्षेप, स्थान—मुनिगृह प्रान्त)

(बंधुजीवक प्रवेश)

(एम्हर ओम्हर टहिल कुटी दिस ताकि)

बंधुजीव—कतबो दृढ़ क बान्हि आउ तैओ एक दिश टूटि जाइए। घरमे तैखन सुख जौं पर्याप्त धन हो। हमरा तँ सतत सभ वस्तुक व्यग्रता लगले रहैए।

(कान्हमे झोरा लटकौलें भिक्षुकक प्रवेश)

बन्धुजीव—(स्वगत) ई देखत तँऽ किछु माँगत।

(ओत भऽ ठाढ़ होइए)

भिक्षुक—(नेपथ्य दिश देखि) ऐ लक्ष्मी ! ब्राह्मणकें किछु भीख भेटओ।

बंधुजीव—(स्वगत) जेना ऋणे लगौले रहथि।

भिक्षुक—कोनो गोटे सुनैछी की नहि। जे देबाक हो से दीय। हम दोसरहु ठाम जायब।

(नेपथ्यमे सलज्ज बधूक स्वरे)—एखन फिरि माँगू।

(भिक्षुक कनेक फिरैए, ओम्हर सँऽ स्नान कयले मरहन्नादाइक प्रवेश)

भिक्षुक—ऐ दाइ ! हम भिखारि थिकहु, एहि आङनक बहुआसिनि जे कहलन्हि फिर माँगू तें फिरल जाइ छी।

मरहन्नादाइ—हैं-ऐं ! ठाड़तं रहह, ओहि धोंछीक हम कोन दुर्दशा करैत छी।

(मरहन्नादाइ जाथि।)

भिक्षुक—(स्वगत) ई ठाढ़ होबऽ कहलन्हिहें तँऽ भिखि देतीहे तंऽ (प्रकाश) हमरा विलम्ब भेल, दीय एक चुटकी जे दोसरो ! आङन देखी।

(नेपथ्यमे मरहन्नादाइक स्वरें)—है भिखारि ! फिरि माँगह :

भिक्षुक—अहीं केँ त्है कहबाक छल तखन ठाढ़ होबऽ कथीलय कहल।

(नेपथ्य मरहन्नादाइक उच्च स्वरें)—घर आङनक महतमाइन हम अइली ने छलहुँ ता ई छुच्छु भिखारिकें फिरि माँगऽ कहनाहरि के थिकि।

बंधुजीव—(स्वगत) ई नवीन भिखारि थिक। ई कथा अनेक ठाम बाजत, तें एकरा परतारी। (भिक्षुक लऽग आबि) आहाँ केँ भीखि नहि भेल। आइ हमरा माइकें गाम भरि पर तामस छैन्हि। एखन जाउ पुनः कहिऔ आएब तखन एकरो साती भेटत। (बाम हाथ ओड़िक) बटुआ सँ तमाकू काढ़।

भिक्षुक—औ बाबू ! तमाकु त हम नहि खाइ छी।

बंधुजीव—त सुपारिए लाउ।

Scanned by CamScanner

भिक्षुक—सौंस सुपारी तऽ ने हैते, गोटायक खण्ड कतहु पड़ल ह्वैक तंऽ ह्वैक। स्यौह बहुतो काले भेटय वा नहि। हमरा से कै एक देहरि देखब तखन पेट भरत। (बिदा ह्वैए)

बंधुजीव—(छीकि कऽ) कने बैसू, कतय सँ अयलहुँ से कहू? तावत सुपारियो ताकू।

भिक्षुक—(बैसि क) हम विदर्भ नगरमे भिक्षाटन करैं छलहुँ। ओतऽ किछु किछु अन्याय बूझि पड़ल तें पवित्र भिक्षा निमित्त तपोवनमे अयलहुँ।

बन्धुजीव कोन अन्याय बूझि पड़ल?

भिक्षुक—दुइटा मुनि बालक धनक हेतु राजाक ओतय गेलाह, तनिका संऽ धूर्तक कहलें राजा धूर्तता कयलकैन्हि?

बन्धुजीव—कोन धूर्त्तता कयलकैन्हि?

भिक्षुक – दम्पती-पूजनमे नियुक्त कयलकैन्हि।

बन्धुजीव—तखन की भेलैन्हि?

भिक्षुक—तखन ओहि राजाक सामन्त सोमन्तिनी सामवान नामक मुनि पुत्र कें निके जकां देखि कुमारि कन्या बूझि सामवती कहि कऽ कुमारीक मन्त्रें भक्ति पूर्वक पूजा कयलकैन्हि, सुमेधाकें ब्राह्मण बुद्ध्या।

बन्धुजीव--(स्वगत) अ ह ह ह !!! बड़ अनर्थ भेल, सामवान सन पण्डित से स्त्री भय गेलाह। (प्रकाश) ई: बाख सङ्गी कें माउगि बनबैत तंऽ बड़े खिसिअबितिऐन्हि। औजी! रक्ष रहल जे आहाँ बैसि गेलहुँ। हमरहि छीकें सामबान यात्रा कयलें रहथि। आब दोष मेटायल। एहि ठाम सँ दुइ कोश पर गहनपुर गाममे सारस्वत उपाध्याय घर छैन्हि से बेटाक कुशल बुझबा लय बड़ उद्विग्न छथि। हुनका स्वशेष वृत्तान्त कहिऔन्हि गऽ तऽ ओ भोजनो देताह। अपना बेटाक वृत्तान्त बूझि कोनो उपायो करताह हा! हमरा छीक सँऽ कतेक कार्य भेल से विचार अवै छी तंऽ मन गद्गद भऽ जाइए। अपनही हाथे अपन पीठ ठोकि) ई हम बड़ सुब्राह्मण छी। सुपारी भेटल की नहिं?

भिक्षुक—नहिं छैक, आब चलै छिय।

बन्धुजीव—तमाकू सुपारीं एको नहि तखन झोरा कथी लय लटकोने फिरै छी?

अतू ! आ आ ! हुले हुले ! (भिक्षुक पड़ाय तकरा नङ्गड़यबाक चेष्टा करैत बन्धुजीव दौड़ै । दुहू चल गेल ।

(सारस्वत ओ गौतमीक प्रवेश)

गौतमी—आहाँ कै विषादक कोन योग्यता । जतेक पढ़लन्हि से सभ ओहिना छैन्हि तखन पुत्र वा कन्या दुटा संसारमे ह्वै छैक । हम तऽ बड़ि प्रसन्न छी । एहनि सुन्दरि कन्या संसारमे कतहु ने देखलऽ ले वा सुनलहु छलौहैं तनिका ओहन विद्या । स्वभाव संऽ हर्षक मूर्तिए बूझि पड़ै छथि ।

सारस्वत—वल्लभे ! संध्याकाल जे हुनक ओ लाज वा सुमेधा बाबूक उक्ति संऽ हमरा क्रोध भेल ताहि संऽ तँऽ यह बूझि पड़ल जे राजाकें भस्म कै दी परन्तु विहनसरुकी राति कनेक आँखि लागल तखन स्वप्न देखल जे "हम दुर्गा थिकहुँ । तोहरा डरे विध्रभंक राजा हमर आराधना करैए तेँऽ तोरा बुझबै छिऔहु जे एहि विषयमे राजाक कोनो दोष नहि छैक । कलियुगक प्रभावे दूर्वासा मुनि शाप देलथिन्हि तेँऽ ओहर पुत्र कन्या भेलहु । एहि कन्या संऽ परमानन्द लाभ हयतहु, एहू, सँऽ गुण दोसर पुत्र स्योह शीघ्र उत्पन्न हयतहु । आब शान्त होअह ! एहि राजाकें हम कहबैक जे कन्यादान सम्पति तोरा पठा देतहु । एहि कन्याक पाणि ग्रहण वेदमित्र मुनिक पुत्र सुमेधा सँऽ करिहह ।" प्राणप्रिये ! आब विवाद कतय । हर्षे रोमाञ्च ह्वैए ।

गौतमी—ई वृत्तान्त सूनि परम आह्लाद भेल ।

(सामवती ओ मधुरवचनाक प्रवेश)

सामवती—ऐ माँ । सखीक सङ्ग फूलवाड़ी सँ फूल तोड़ि लाउ ।

गौतमी—जाउ परन्तु झट दंऽ आयब । (मधुरवचनाक कें देखि) सभ दिन सङ्गहि रहिहक । अतिकाल जनु करिहह ।

(सामवती ओ मधुरवचना जाइए)

गौतमी—ई परमेश्वरक चरित्र देखू जे सभ काज जेना सिखले रहैक । आब अहाँ नित्यकृत करू । हमहु आङन जाइ छी ।

(सभ जाइए । पट खसैए)

तृतीय अङ्क समाप्त ।

चतुर्थ अंक

(इस्ट लोकक बाट तकबाक चेष्टा संऽ सारस्वतक प्रवेश)

सारस्वत—(अपनहि अपन) पत्र लिखलन्हि जे प्रात: कालहि आयब से एखन नहिं अयलाहय ताहि सँ मनमे उद्वेग ह्वँए। कने काल आओर देखि लै छी तखन हमहि कुशल बूझि आयब। (घाड़ उठा कऽ) वैह अबै छथि तंऽ हमहु आब घरे चली। एखन स्वप्नक वृतान्त नहि कहिऐन्हि। परमेश्वरीक वाक्य अछि। सम्बन्ध तंऽ भेलैन्हि। एखन बाजि देब त चमत्कार नहि रहतै।

(बेदमित्रक प्रबेश)

सारस्वत—अहा !! आयल जाओ। (नमस्कारक अभिनय) छी तऽ निकैं ?
वेदमित्र—(नमस्कार कय) हं, निकैं छी, अपने निकैं।

(बेदमित्र ओ सारस्वत आसन पर बैसै छथि)

सारस्वत—हूँ ! सर्वार्थ प्रसन्न छी, विशेष एखुनका दर्शन संऽ बहुत दिन पर अनुग्रह कयल गेलैक। हमर वृतान्त त जनितहि छी। आब जे भ पड़ल तकर कोन विचार, जाहि संऽ सकुटुम्ब विद्वान मनुष्य भेटय तकर उद्योग कर्त्तव्य थिक। आगाँ जेहन प्रारब्ध हयतैक।

वेदमित्र—महाशय ! हम लिखलहिं छलहु जे सभा चलब, तखन अयलहु, चलल जाय। हुनको अधिकार बुझब। ईहो, तंऽ दुहू धर आनन्द। एहिमे घटकहुक काज तऽ ने। मन दै छी की नहि ?

सारस्वत—हमरा पुछै छी ? अहाँ तंऽ दुहू दिशक अध्यक्ष थिकहु। ईहो तंऽ सभ मनोरथ प्राप्त भेल। अपने कें इच्छा अछि तंऽ केवल अधिकारे तकबाक ने भाँगठ। हम केवल अपनाहिक डरे एहि कथाक चर्चा नहि करै छलहुँ।

वेदमित्र—भला डऽर कोन। ई नीक दुहू गोटाकें किने ?

सारस्वत—बेश तंऽ मध्याह्न कृत्यमे अतिकाल हयत। शीघ्र स्नान कएल जाय।

वेदमित्र—कतय गेलहुँ औ ? फूल बेलपात लय आउ।

Scanned by CamScanner

सारस्वत—कि सुमेधो बाबू संगे छथि ? अहहह, कतय छथि ? हम बजा लऽ अनिऐन्हि।

वेदमित्र—अबितहि छथि, एही घरक इरोतमे छथि। अबै छलहुँ तखन अपन नहिक विद्यार्थी भेटलथीन्ह। हुनकहि संऽ गप्प करऽ लगलाह।

सारस्वत—हमरा डेढ़ वर्ष देखला भेल, बड़ उत्कण्ठा होइए।

(सुमेधाक प्रवेश)

सारस्वत—(किछु उच्च स्वरें) आउ आउ छी नीके ?

(सुमेधा सारस्वत प्रणाम कँ बैसथि)

सारस्वत—चिरञ्जीव। पाग राखू, आब शीघ्र स्नान करू।

सुमेधा—फूल बेलपात हम अपने तोड़ल चढ़वै छी।

सारस्वत - बेश, अहाँक तंऽ सभ वन देखले अछि। एखन सभक आङनक नेना ओम्हरहि छैक, केओ फिरलैके नहि। शीघ्र भय आउे।

सुमेधा—बेश, जाइ छी। लोक चलो आओत तैओ कोनो छति नहि। हमरा सभ वाट स्मरणे अछि।

सारस्वत—शीघ्र जाउ। लाख स्मरण अछि तैओ वनमे एकसर नहि रही वा हो सामवती लोकनि ओम्हरहि अछि से सभ छाड़ि कऽ आउति ओ त ने।

(सुमेधा जाइ छथि)

सारस्वत—तँऽ अपने स्नान कयल जाय।

वेदमित्र—बेश चलू।

(दुहू प्रस्थान)

(पटीक्षेप)

(स्थान वन कुञ्ज। समय—वर्षा)

(एक गाछतर मधुरवचना ओ सामवती बैसलि)

(नेपथ्यमे गीत)

(नट मल्लारी)

वर्षा-ऋतु युवजन उद्‌वासन जनु अनङ्गतृन रूप विकासन।
एक दिश इन्द्रधनुष वरशावय जनु हिय बेधय कुसुम शरासन॥

Scanned by CamScanner

गर्जित मङ्गल दुन्दुभि बजाय बैसल ऊँच गगन सिंहासन।
कहुँ ठेकान की इतर मनुष्यक जतै डगँ अछि मुनिहुक आसन ॥
तम रजनी जग ऊँच नीच पथ चपलता चमक नीति अनुशासन।
जीवन धन्य तनिक हम बूझिय रैनि बिताबथि बालम आसन ॥

मधुरवचना—हे सखी ! एना किए करै छह। आब बड़ विलम्ब भेल। आङनमे लोकके उद्वेग होइत हयतैक।

सामवती—की कहै छह ?

मधुरवचना—एतेक कहि गेलिअहु से नहि सुनलह ?

सामवती—कनेक पानि पीब।

मधुरवचना –एतऽ पानि कतऽ भेटत, आङन चलह।

सामवती--कतऽ छी।

मधुरवचना—कुञ्जवनमे छी। तोहरा हमरे सपथ थिकहु एना किए करै छह से कहह।

सामवती--तों हृदय रूप सखी थिकीह तें कहै छिअहु। हम बड़ि कृतघ्न ओ अभागलि छी। आइ राति सपना देखल जे "एहि कुञ्जवनमे हमर हाथ सुमे"—

(ई अर्द्धोक्ति सन्तां लज्जा ओ कनबाक अभिनय)
(गाछक आड़मे सुमेधाक फूल तोड़ैत प्रबेश)

सुमेधा—(ओम्हर कान पाति) एहि दिश स्त्रीगणक बिलापालाप सुनि पड़ए।

मधुरवचना—(आंचर संऽ आँखि पोछि) की कहऽ लगलीह से सबिशेष कहह।

सामवती—"सुमेधा हसि कऽ हाथ धयलन्हि। हम हुनका झझकारि कऽ कहलैन्हि[1] जे पण्डित भऽ कऽ कुमारि कन्याके बिना साक्षिएँ किएक छुबै छी ?"

सुमेधा—(स्वगत) के एहन घोर वनमे हमरा नामके कलंकस्त करैए ? बड़नी कने निके बूझि ली।

---

१. कहलिऐन्हि' उचित।

मधुरवचना— तखन पुनि ?

सामवती— तखन की ? ओ लज्जित भय हाथ छाड़ि कं कहलनि "हे सुन्दरि ! ईश्वरक एहन इच्छा छैन्हि जे ई मनुष्य अहाँ संऽ स्वीकृत हो से एहि सेवक केर तिरस्कार जनि करी। अपन कंऽ बूझू।" हे सखी ! हुनक मुखचन्द्र सँ एहन वचनामृत, ओहना नयन-कमलमे पानि, ओहि तेजस्वी देहमे कम्प, ई सभ देखि केवल निसाहसिक सङ्ग जे निन्द टूटल से एखन धरि हुनकहि पर टक्क लागल अछि। दोसर किछु ने देखि पड़ँए वा संसार मे ओहन सुन्दर के जे तकरा ताकू। आओर की बजताह तें ओम्हुरहि कान अछि। दोसर किछु सुनिए ने पड़ँए। कतेक कहिअहु उत्तर ने भ सकल ताहि पश्चात्ताप सँऽ अत्यन्त आकुलि छी।

सुमेधा— (स्वगत) स्वप्नक कथा थिक, एहि संऽ कोन हानि।

(बन्धुजीवक स्वरें नेपथ्यमे)—कतहु बालसङ्गी छी ब ओ ओ ओ ?

सुमेधा— ई बड़ अनवसरमे आएल। बेश एखन भुतिआए दै छिऐक। फेर सोर कऽ लैबैक।

मधुरवचना— हा ! ईश्वरक गति बुझले ने जाइऐ। इयह सपना तोहरा माइ सँ तोहर बाप बिहनसरे कहै छलथिन्ह। तोहरा सङ्ग लेमऽ ले अयलहुँ तखन सुनल जे "सुमेधा हमरा सँ कन्या याचना करै छथि।"

सुमेधा— (स्वगत) बड़ अद्भुत वृत्तान्त सुनि पड़ँए। एहि अवसरमे ओहि ठाम जाइ तँऽ जे की चरित्र थिकैक।

सामवती – हे सखी ! लोक कहैए जे बहुत स्वप्नक फल उनटा होइ छैक। ओ तंऽ बाबूजी संऽ पढ़ितहि छलाहे। हुनक एहन स्वभाव कहाँ जे कोनो वस्तुक याचना करथि। ताहूमे हमरो संऽ ईषद् वस्तुक।

मधुरवचना—सखी ! धैर्य करह, सपना थोड़बे अंशमे उनटा होइ छैक। से कदाच तोहरे बाप वरक याचना करथुन्ह।

सामवती—हे मधुरवचने ! तेहन हमरा भाग्य कतऽ जे ओ सकल-कला-निधान सर्वाङ्ग सुन्दर एहि मूढ़ तापस-कन्याक अङ्गीकार करथि।

(सामवती मूर्छित होइत छथि। मधुरवचना चैतन्योपाय पातक बीअनि हौंकैए)

Scanned by CamScanner

(सुमेधाक प्रवेश)

मधुरवचना—अगे दाइ ! आब की करब है ? चेत करह, के दऽ अबै छँक । (स्वगत) आब एहि ठाँ परमेश्वरे रक्षा करथि तँऽ हो अथवा प्राण देब तंऽ अपन सक अछि । (निकें जकाँ देखि) ई त क्यो भलमानुस चिन्हार जकाँ बूझि पड़ैए । (ठाढ़ि भऽ कऽ देखि) ई तँ वेह थिकाह जनिका ले हमर सखी एहि दशामे पड़लि अछि । (निसान लऽ कंऽ) आब कुशल छेम पश्चात् पूछब । पियासें मूर्छित छथि से हम सरोवर सँऽ पानि लेने एखने अबैत छी ।

सुमेधा—मधुरवचना ! छली है निकें ?

सामवती— हाय ! फेरि ओ एहि सुखक अपहरण कयलक ।

(सुमेधाक दिश देखि लज्जाभिनय)

(नेपथ्यमे बन्धुजीवक स्वरें)—बालसङ्गी औ औ !

सुमेधा—येह, छी, आउ-आउ । अहाँ लोकनिकें बड़ विलम्ब भेल । आब चलै चलू ।

सामवती—हे सखी ! बड़ीखन भेल, दाइ खिसिआइत होइति ।

मधुरवचना—विलम्ब कोन भेलहु ? आधहि पहरक योगाभ्याससँ तं अलभ्य लाभ भेंलहु ?

सामवती—(जनान्तिक) है ! ई की कहताह, हमरा डर होइए ।

बन्धुजीव—(आबि कंऽ) गामहि सुनल जे अहाँ दुहू बाप-पूत आधहि पहर राति विदा भेलहुँ । हमरा माय बाजय लगली जे कौ ठाम विकंवाक कथा छहु से हिनकहि लोकनिक सङ्ग सभा जाह । जे अधिक टाका देहु[1] तकरे कन्या विवाह करिह । से तीन कोश दौड़ले अयलहुँ । से भूखे हाथ-हाथ भरि जी काढ़ै छलहुँ अछि । ताहि पर अहांक बाप कहऽ लगलाह जे हुनका तकनहि अबिऔनि । लाख कहलिऐनि जे हमरा संऽ अधिक ई वन हुनके देखल छैन्हि, तैओ के मानत । हा ! कोनहुना भेट भेल । आहाँ सं हम जेठ थिकहुँ, गोड़ लागू ने । औ हमहु थोड़े दिन सङ्गहि पढ़ैत रही ।

---

१. 'देतहु' उचित ।

सुमेधा—हो ! से त ने। काल्हि सङ्गहि छलौं हैं, आइ गोड़ लगाबक कोन अव-
सर। दु चारि दिनक बाट चलि क अबैए तखन गोड़लग्गी होइ छैक।

बन्धुजीव—हम अपना जनैत सै कोश सँ अयलहुऐं। तेहन भूख लागल अछि।

सुमेधा—(गोड़ लागि) आब पेट भरलहु।

बन्धुजीव— (संस्कृतमे श्लोक)

एवं हि भवान्।

बद्धा दृढं विनिगृहीत तनोधनोरू।
स्तम्भान्त रुद्वदपूर्वंवपुर्विभागः ॥
बली हिरण्यकशिपोः करजैर्विदार्य।
प्रह्लाद माकलयतु प्रसभं नृसिंहः ॥

सुमेधा—ई तऽ दुइ अर्थक श्लोक पढ़लहु। एक पद तँऽ बड़ दिव्य, दोसरा पक्षक कोन काज ?

बन्धुजीव—आहि ! एक पक्षे कतहु काज चलैक ? सभा गाछी चलितहि छी।
दुइए दिनुक बाद ने[1] बूझब।

(सभ जाइए)

(पर्दा खसल)

चतुर्थ अंक समाप्त

---

1. बाद ने' होयबाक चाही।

पञ्चम अंक

(नेपथ्य घण्टा ओ स्वाध्याय ध्वनि-अविनियमयनयुत्यादि)

(स्थान — मुनि लोकनिक उद्यान)

(सारस्वत ओ वेदमित्रक प्रवेश)

सारस्वत—ओ महाशय ! पजिआड़ ओतय हम अपने दुइ गोटे चली । हुनका कथी ले लऽ जैवैन्हि ।

वेदमित्र— बेश तँऽ ककरहु एखन कहवैको कथी ले । पाग फराठी अनबा लीयऽ बिदा होउ ।

सारस्वत—बन्धुजीव हकासल पियासल बिकाय ले अयला है से चलताह किने ?

वेदमित्र – ओ बिकंले फिरैए । आइ देखितहि छलहुँ अछि, कतेक चड़ा दही खैलकअय । कतहु सुतल हैत । लोकके हसबितहि रहैए ।

सारस्वत—बेश तँऽ छाड़ि दिऔन्हि । (नेपथ्य दिश देखि) गोनड़ा रौ ! पाग फराठी दुहू गोटाक ला तँऽ ।

(पाग फराठी लेने गोनड़ाक प्रवेश)

बन्धुजीव—(गोनड़ाक टीक पकड़ि) रौ ! बहीचो तों कांचे नींदमे जगा किए देलेहैं ! (लात मारबाक अभिनय) इः बाप रौ बाप पैर टुटल !

गोनड़ा—रहू बाबू ! हमरा सक नइ ऐछ ।

सारस्वत—हाँ ! हाँ !! की थिक की थिक ?

बन्धुजीव — हमरा सीरमसँ फराठी घिचलक से हमरा नीन्द टूटि गेल । हमरा से बिना सिरमे निन्न ने होइए ।

वेदमित्र—आ ! अहाँके सिरमाक कमी कोन ?

सारस्वत—तँऽ आब चलल जाए ।

बन्धुजीव—कत' जाइ जाएब ? सभा । हमहु त चलितहुँ ।

सारस्वत – ओ ! तँ निश्चय फेरि विवाह करब ।

Scanned by CamScanner

बन्धुजीव—अपने पुछै छी तँऽ उत्तर कोना ने दीब। अपन तते इच्छा नहि परन्तु हमरा माइकें एहि पुतहु पर बड़ असन्तोष रहै छैन्हि।

सारस्वत—से किऐ ?

बन्धुजीव—द्विरागमनमे वस्तु जात सङ्ग थोड़ बेलक तेँऽ सदिखन खीझते रहै छथि। हमहू भरि पेट खाएब से घरमे नहिऐँ भऽ सकैए।

वेदमित्र—हौ ! कतेक बरबराइ छह ? हमरा लोकनि जाइ छी। कतहु कथा बुझलें अयबहु।

सारस्वत—बेश कहै छथि, तावत् सुमेधहि बाबूक सङ्ग रहू। हमरा लोकनि रातिहिं चल आयब।

बन्धुजीव—औ पण्डित जी ! वालसङ्गीके तँ लेलें जैतिऐन्हि। हमर विवाह तँऽ भला भेलो अछि।

सारस्वत—हौ ! ताही उद्योगमे त पजिआड़क ओतय जाइ छी।

बन्धुजीव—**(स्वगत)** मन अबैए जे अपनहि कन्याक प्रसङ्गे अधिकार तकाबय जाइ छथि। **(प्रगट)** बेश जाउ, हम थकलो बड़ छी। **(गोनड़ाक दिश देखि)** देख, हिनका सोझहिमे कहि दै छिऔक, निकें पायर जति है। पाछां कह लगै छैं जे "हम कि अहाँक बहिआ चाकर छिऔं। एँठो त ने एको कौर नड़बै छी" से आब सहचेत रहि हैं।

(सभक प्रस्थान)

(स्थान—उद्यान-प्रदेश)

(एक गाछमे हिडोल ताहिपर सामवती, मधुरवचना ओ चपला झूलैए)

मधुरवचना—है सखी ! तों माझ ठाँ बैसह। हम ओ चपला दुहू दिश मचकी पर रहै छी।

चपला—गाबथि तँऽ हम झुला दिऐन्हि। ने तँ हम आम बीछ जाइ छी।

सामवती—बेश हम गबै छी परन्तु सुस्ते सँ आस लगबिहह।

चपला—जेना गयबह तेहिना ने हमहु लोकनि झुलैबहु।

(सामवती गबै छथि)

(राग—हिन्दोल मल्लार)

जलद पटल नभ घुमड़ल उमड़ल मानस मोर।
दामिनि सभ तनु पहिरल पिय अनुराग पटोर ।।
विरचल चीकन चौरस चाकर चानन पोर।
कदमक डारि वन्हाओल दिढ़ कय रेसम डोर ।।
हसि हसि सखि उझकाउति बैसब हम हुनि कोर।
पिय मुख हहरि निरेखब हम जनु चन्द चकोर।
एक तों राति निविड़तम दोसर विपिन घनघोर।
कहु तरुवर! मोर जीवन पहु विलमल कोन ओर ।।

(सुमेधाक प्रवेश गाछक ओतमे ठाढ़ भेल)

सुमेधा—एहि दिस सँ अत्यन्त मनोहर स्वर मल्लार राग सुनि पड़ै अछि। एहि उत्कण्ठा ओ प्रीति स बूझि पड़ैए जे ओएह लोकनि थिकिह। त हम प्रगट नहि होइ।

मधुरवचना—ईश्वर कामना पुरौथुन।

चपला—हिनका माइके कहि देव जाइ छिऐन्हि।

मधुरवचना—से हिनकहु सँऽ वाढ़ि माइअहिके उत्कण्ठा छैन्हि। बापके तँ स्वप्नो भेल छलैन्हि तँऽ वर उतेढ़ो तकाब गेलथिन्हे।

चपला—वर के से तँ कहह।

मधुरवचना—ओएह जे हिनका बाप सँऽ पढ़ैत रहथि।

चपला—से त कतेक गोटे आद गूड़ करैत रहैए। नाम कह तखन से चिन्हि-ऐन्हि।

मधुरवचना—जकरा सुमेधा बाबू कहि क सोर पारहून्ह।

चपला—हँऽ हँऽ मन पड़ल, दुहू समान सुन्दर।

(एक दिश स ँऽ वन्धुजीवक प्रवेश)

बन्धुजीव—ए: कत गेला? हमरा से डरै कोनो दशा अवंच नहि अछि। (मचकी दिश देखि) भला मनुष्य सौं तऽ भेट भेल। (लग जा कऽ) एम्हर बालसङ्गी आयल छलाहय?

Scanned by CamScanner

चपला—है मिलनि ! ई के थिकै !

मधुरबचना—है ! ई हुनकहि गामक थिकथिन्ह। (बन्धुजीवक दिश देखि) एम्हर कहाँ अयलाह ?

बन्धुजीव—अयलाहुय त एम्हरहि, कतहु नुकायल हैताह।

चपला—(बन्धुजीवक लग आबि) छी बड़ उजबुक एहि ठाम औता से सब थिकैन्हि।

बन्धुजीव— पहिल पहिल दिन भेलहुँ एकट्ठा।
लगले लाघल हंस्सी ठट्ठा॥

चपला— एखन जनु हमरा दिश घुस्की।
लोक करै अछि काना फुस्की॥

बन्धुजीव— जनु ककरहु सँ बाजी भूकी।
अल्प वयस अछि बहुत कहू की॥

चपला— छाड़ू एखन हाथ-बाँही।
देखय लोक हमर फरिछांही॥

बन्धुजीव— अलङ्कार कत विमुख करै छी।
बाजू सूति नवग्रह दै छी॥

चपला— हम नहि जानिय पञ्जा छक्का।
तोड़ि पड़ायल हार उचक्का॥

बन्धुजीव— भामिनि भऽ परिजन सँ फटकी।
कतय खोधाओल मटका-मटकी॥

चपला— नयन नोर आँचर जौ पोंछी।
संशय करय पड़ोसिनि धोंछी॥

बन्धुजीव— छटपट निशि भरि काटय कुटकी।
हाफी करिय बजाबी चुटकी॥

चपला— चपला कहय सुनू है बहिना।
ई की जनता बामा-दहिना॥

बन्धुजीव— थाकल छलहुँ लगबितहुँ अत्तर।
पीड़ा होइ अछि गत्तर गत्तर॥

चपला—   बज्र खसौक लगौ अगड़ाही।
     कहुना जीवन अपन निवाहीं॥

(नेपथ्यमे गर्जबाक शब्द)

(बन्धुजीव पड़ा कऽ सुमेधाक लग जाथि)

बन्धुजीव—खौ ताहि ! हमरा डरयबा लय एत भऽ नुकायल छीं।

सुमेधा—तोहरा हमर शपथ थिकहु कनेक ई आनन्द देखय दैह। चुपचाप बैसह।

बन्धुजीव—हमरा बेमाइक दर्दे छटपटी उठऽ लै। कपार चुप रहू।

सुमेधा—पानि निकें बरिसय दहक तखन छुटतहु।

बन्धुजीव—बेश पानि बरिसह हे मेघ ! हम मल्लार गाबि दै छिअहु।

(गबैए)

देखल जलधर नमरल हमहु उठाओल डाङ॥
कतहु पिछड़ि जें खसलहुँ दहिन बचायत्र टाङ॥१॥
सभ सङ्केत उजड़ि गेल धन सन राहड़ि बाङ॥

वन भय गेल भयावह—

ओ वालसङ्गी। आब की कहिऔ ?

सुमेधा—हाहाहा ! कहल जे   "कत हयब अर्द्धाङ"॥

बन्धुजीव—मन अबैए, अहींक ई सभ घाडल अछि।

सुमेधा—बड़नी तों गीत पुराबह।

बन्धुजीव—ओ: ! की दं कहलें छलिऐक।

सुमेधा—मन पाड़ह।

बन्धुजीव—हं यै ने 'ताकिय कतय अपाङ   ॥२॥

जे हमरा ठुनकाबथि से लय पहिरथु राङ॥
हमपुनि कतहु बिकायब पोसब अपन समाङ॥३॥
बरिसहु घन रस झटपट धीपल अछि मोर आङ॥
गीत कोनहुना गाओल बड़लागल छल भाङ॥४॥

सा-बती—है सखी ! पुरुषक स्वर बूझि पड़ैए।

मधुरवचना--गीत सँऽ तँऽ ओएहु अलबटहा मनुसा जे विपिन्न भेल आयल छल बूझि पड़ैए ।

चपला— मीलनि है ! ओहुनो पुरुषक लाज !

सामवती—पुरुषमात्रहिक लाज करक चाही ।

चपला— से फेरि लजयबो बूझै कि ओहिना ।[1]

मधुरवचना[2]— हँऽ है ! नीक कहै छहु । ओहनाक कोन लाज ।

सामवती—बड़नी तंऽ हमरा घुरमा लाग ले, आब चलै चलहु ।

चपला—बेश चलहु । पुरुष सभ मन अबैए गाछक इरोतमे बैसल अछि। हमरा लोकनि जाएब तखन ओहो सभ झूलै जाएत ।

मधुरवचना—चलऽ है मीलनि ! हमरहु लोकनि कात सँऽ देखब जे कोना झूलै जाइछ ।

(तिनू थोड़ें हटि ओतमे बैसय)

जटिल—(दूरहि सँ) तततततोहरा लोकनि के थिका हो ?

बन्धुजीव—(स्वगत) ई हमरा लोकनिकें आम चोरौनिहार बुझलक । एकरा डेराबी तऽ कोन चेष्टा करैए । (प्रकट) खों खों खों ।

जटिल— (थोड़ेक दूर पड़ा कऽ) बबबबाप रौ बाप रौ ! बबबाँचि गेलहुँ, बबबबुढ़बा भभभभालु थिक । अअअआगि जे भेटैत ।

सुमेधा— ब्राह्मण कें भय भेलैक हयत । (उच्च स्वरें) आउ आउ ।

जटिल— (स्वगत) सुसुसुसुमेधा बाबूक स्वर बूझि पड़ैए । भभभूत ने हो । (घुनघुना कऽ मंत्र पढ़ैत सुमेधाक दिश बढ़ैए)

सुमेधा— आउ आउ । हमरहि लोकनि थिकहुँ । ई हँसी कयलें छलाहय ।

जटिल — हहहहम त सटका तानल पपपपरञ्च रक्ष रहल ।

(गोनड़ाक प्रवेश)

गोनड़ा—सँध्या बन्हन कऽकऽ आहाँ जखनहि एम्हर अयलहुँ तखनहि आङन सँऽ

---

१. मुद्रित अंशमे ई वाक्य छटल अछि, शुद्धि पत्रमे ई देल अछि ।

२. मुद्रित अछि 'चपला' । शुद्धि पत्रमे 'मधुरवचना'क निर्देश देल अछि ।

पान आयल से नेने हम बउआयल फिरै छी। जखन गीत सुनि पड़लै तखन भेटलौं। पान लीअ।

बन्धुजीव—ला ला। हमर गीत कतहु बाम जाए। नहि पानि त पान भेल। हमरा अधिक कऽ दें।

सुमेधा—लैह, तोहीं खाह। एखन ने खयबे।

बन्धुजीब— हम एतेक पान खायब तँऽ भूखे नष्ट भऽ जायत।

(परस्पर पानक आग्रह)

बन्धुजीब— (घाड़ उठा कऽ) छौंड़ी सभ गेलि।

गोनड़ा — ओइ ठां बैसलि छली है सभ गोड़े। सामवती बजै छलीह जे "हमरा दिश तकैत जकरा असद्धीं होइ छै तकरा हमहु नहि देखबैक" दोसर दुहू गोड़ बुझबै छलथीन हैं जे—"एतेक मान नहि करी"। यैह सभ कतेक ने बजै जाइ छलीह है। हमरा जनैत ककरहु सँऽ झगड़ा होइत गेलैन है। ओहिमे सँऽ एक गोड़े कहलनि जे "ओइ गाछ तर छथुन। हमरा लोकनि हुनके काज करै छिऐन। आब जाइ जाइ छी।" से आब जाइ गेल होइती। फेरि हम किछु बूझऽनइ लगलौं।

सुमेधा— (स्वगत) ईश्वरक घटना थिक। तथापि स्वप्नक वृत्तान्त सुनि हम अपना कें अपराधी बुझै छी। (प्रकट) हे ईश्वर! ओ: सत्ये हम—

(कने वैकल्य होइन्ह)

बन्धुजीव—री! पानमे की छलैके? हमरहु जी कोना दंऽ जकाँ करैए। थुकरि दिअ ओ बालसङ्गी।

जटिल— थुथुथुथुकड़ता कथी लै, पपपपपान तँऽ बबबबड़ दिव्य छैक।

बन्धुजीव—आहाँ सँऽ तँ थुकराओल।

सुमेधा—चलै चलह मचकी पर।

बन्धुजीव—योग पूरल तऽ चलू।

(सभ हिन्दोल पर बैसथि)

बन्धुजीव—हे ओ तुतू तुतू! हमरा घुरमा लगैए, सुस्ते सौं आस लगाउ।

गोनड़ा—आहां कतहु जयबा जोकर नहि छी, सदच्छन झगड़े पर मन रहैए।

बन्धुजीव—रौ तों सोलकन्ह भऽ कऽ हमर पाछाँ कि पड़ल रहै छँ । जे किछु बाजू तकरा कुट् दऽ काटि दै छै । हमरा हाथें तोहरा किछु लिखल छौक । (सोंटा उठा कऽ) कोतका देखै छँ किने।

सुमेधा—झुलै जाह, कोन कथा करै छह ?

बन्धुजीव—औ बालसङ्गी ! एकटा मचकी परक गीत गाउ ।

सुमेधा—तोहरहि लोकनि पहिने गाबह ।

बन्धुजीव—हम त तेहन गौलें छलों हैं जे एखनधरि हकमितहि छी । ब्रह्मचारी गाबथु ।

जटिल—बबबेश । सुसुनै जाउ । (गबै छथि)

(पृथ्वी छन्द)

ससस्रवति निर्झरो ववचनं यथा वारिदो ।
यथा ततततारका भभभभान्ति खद्योतका: ।।
ततत्त दभिसारिका मुमुमुखं यथा चन्द्रा ।
बिभर्त्ति भभभूतलं निशिनभोमिषम्[१] प्रावृषि ।।

बन्धुजीव—रौ गोनड़ा ! दौड़ि कं पानि ला । वाभनकें दांती लगलैक ।

सुमेधा—केहन उत्तम गौलनिहैं । तों गावहु तो गाबहु ने देबहुन । बेश सुनह ।

(गबै छथि)

माननि ! वयन युगे मम भवति जलद बलये
अम्बर निहिर बदन विधुमपि न तवाकलये[२] ।।१।।
रजनि रजनि विरहे तब देवि यथा प्रलये ।।
स्वमपि न वेद कुतो परवस्तु मह्रीनिलये ।।२।।
मृदु हृदयो विरही तव कथमथ घन समये ।।
रजनीगत पलमिह युगसममहमपगमये ।।३।।
अपराधानवबोधय सन्ति सुमुखि ! ममये ।।
एकमेकमनु भावय ननु शतधा समये ।।४।।

---

१. मुद्रित छैक 'यथा' परन्तु शुद्धि पत्रमे 'मिषम' देल छैक ।
२. मुद्रित छैक 'तव नाकलये' परन्तु शुद्धि पत्रमे छैक 'नतवाकलये' ।

Scanned by CamScanner

सहज कनक रुचि और गौर गुरु कुच हृदये ।।
किमिति मुधा परिभामिनि नयसि निशा मदय ।।५।।
सजल नयन रचिताञ्जलिरपि च शपे गतये ।।
एकचरणभरमिह चिरमुपतिष्ठेरतये ।।६।।

बन्धुजीव—अहहह ! एतेक अनुराग ।

सामबती—हे सखी ! हमरा सन अपराधिनी । वा अभागिनी संसारमे दोसर के हयत वा अपन कतेक कहिअहु ।

(गजल)

निसास लै नोर जौं बहावी समुद्र पर्यन्त तौं थहाबी ।
अशेष संसार काँ दहावी सुरेश प्रासाद वा ढहाबी ।।१।।
महा कुलाचार छाड़ि गेहे विशेष अहांक टा सिनेहे ।
अरन्यमे बैसि दीन देहे कहु तितिक्षा कतै सहाबी ।।२।।
अनंङ्ग सन्ताप सौं जरै छी अहांक चिन्ता जतै करै छी ।
सखीक लाजें ततै मरै छी जतै कही वा जतै कहाबी ।।३।।
विलोचनोदार वारि धारा दिवा निशामे अनेक वारा ।
वियोग-तापापनोदपारा उरोज गौरीश कां नहाबी ।।४।।
कथूक चिन्ता ने चित्त आनी अशुद्ध मानीतैं फेरि छानी ।
जतेक काले विशुद्ध जानी जतेक डाही जतै डहाबी ।।५।।

(सामवती मूर्छित होइ छथि)

मधुरवचना—है मिलनि ! हिनक उपाय कोनो करहु जे झट दऽ वर सँऽ भेंट होइन्हि ।

मालती—अनुरागे गोट । भेंट भेला उत्तर तँऽ सोझ भऽ तकलो नहि जाइ छैन्हि भगवान झट दऽ विवाहे करा देथुन्ह ।

मधुरबचना—बड़नी, ता पात ल कंऽ बीअनि हौं कि दै छिऐन्हि । तौं गोटेक शिक्षाक गीत गाबहु जे चेत होइन्ह ।

मालती—(गबैए)

Scanned by CamScanner

गीत

(लगनी)

नूतन कुन्द रुचिर शुचिरदने रे,
जनि अभिसरिय सुधा निधि वदने रे
तनु भरि लेपब चानन तामास जामिनि रे की ॥१॥
जितमद कोकिल कूजित गदने रे,
पक्व विम्बफल दसनक छदने रे।
विकसित जनि करु आनन[1] झलकय कामिनि रे की ॥२॥
(। । । । । । । ।)[2] चलु निज सदने रे,
घन उमड़ल पुनि कानन दमकय दामिनि रे की ॥३॥
भृकुटी[3] कुसुम शरासन कदने रे,
कोन फल मृदु तनु भूषण लदने रे।
विकचित कच छिपु चानन क्यो गजगामिनि रे की ॥४॥

(पटीक्षेप)

सुमेधा—आब चलै चलू। ओहो लोकनि आयल होयताह।

बन्धुजीव—आबहु ने चलब। आब तंऽ सभ अभिलाख पूरल।]

(पटीक्षेप)

पञ्चम अंक समाप्त

---

१. मैथिली पद्य संग्रह (सम्पादक रमानाथ झा, १३४१) मे 'आसन' पाठ अछि।

२. आठ मात्रा अपेक्षित लगैत अछि।

३. मुद्रित छैक 'भृकुटि' परन्तु ताहि एकमात्रक अल्पता तें 'भृकुटी' उचित।

षष्ठ अंक

(दृश्य गृहस्थाश्रम प्रान्त)

(वेदमित्र ओ सारस्वतक प्रवेश)

वेदमित्र—इ: बड़ परिश्रान्त होइत गेलहुँ परन्तु अधिकार भेलैक तखन संऽ एको रती बाट ने बुझलेए। क्लेश: फलेनहि पुनर्नवतां विधत्ते।

(फराठी लेलें घटकक प्रवेश)

घटक—अपने लोकनि पजिआड़क ओतय संऽ उठलहुँ तँखन हमहु विदा भेलहुँ। बाटमे कतहु ने भेल तेँ एत धरि आबऽक पड़ल। कहल जे ने जयबे तंऽ अपने लोकनिक मनमे हयत जे हमरहि काजमे अंठा देलन्हि तेँ इरे दौड़ले अयलौं हैं।

सारस्वत– आहाँ एहन वृद्ध भऽ कऽ कथी ले एतेक दूर अयलहुँ। पजिआड़-हिक ओहि ठाम जे कहबाक छल से कहितहुँ।

घटक—पजिआड़क ओतय बड़ लोक छल तेँ ओहि ठाम नै बजलों हैं।

वेदमित्र—वेश तँऽ की कहबाक अछि से कहू।

घटक—हे, कनें उपाध्याय सँऽ एकान्तक काज अछि।

वेदमित्र—हम नेनाजन केँ देखने अबै छिऐन्हि।

(जाइ छथि)

घटक—ओ सय टाका देथि तखन अपने करब ?

सारस्वत—छी छी छी ! ठाकाक चर्चा कोन। हमरा हुनका तेहन मैत्री अछि वा ओ ततटा व्यक्ति छथि जे एहन कथा सुनि टाका तंऽ लगले गनि देताह। परन्तु असन्तोष हयतैन्हि। ई कथा पुनि जनि बाजी।

घटक—बड़नी, उचित छल से हम कहि देल। अपने केँ जे विचार हो। सँऽ हमरो निर्बाह होइछ।

सारस्वत—बड़नी अपने एतेक श्रम कैल तँऽ लीअ ।

(घटकक हाथ कंऽ देथि))

घटक— ई दूटा टाका हम बहुत बुझै छी परन्तु हम हुनकहु भेट करितहुँ ओओह किछु दितथि ।

सारस्वत—आइ हुनका सँऽ भेट जनि करी । आहां भोजन कय लिय तखन चुपचाप चल जाउ ।

(घटक जाइ छथि ओ वेदमित्र आवै छथि)

सारस्वत—छथि प्रसन्न ?

वेदमित्र—एहि ठां अप्रसन्नताक योग्यता कोन ? हम तँऽ परम बुद्धिमान बूझि ई कथा कहि टा देलन्हि ।[1] ओ कथिलय एत्तर देताह । हमहु घल अयलहुं ।

सारस्वत—तखन मुहूर्त्त निके छैक । आइ भाङठ कोन ।

वेदमित्र—आब भाङठ कोन ? आइए विवाह हो से उचित ।

सारस्वत—जेहन आज्ञा । (नेपथ्य दिश देखि) मधुरवचना है !

मधुरवचना (आबि कंऽ) की व है छिय ?

सारवत—गै दाइ ! लोक सभके आङनमे कहि दियौ जे अधिकार भेलैक । कन्यादानक ओरिआओन करौ वा हो । वर कें देखि लै जाओ ।

मधुरवचना—बड़नी, हम सभ आङन कहि आवऽ जाइ छिऐक । बाहरक ओरिआओन ले जटिल बाबूके कहिऔनि जे पुरहित लोकनिके कहथिन्ह ओ होमक वस्तु ओरिऔताह ।

(मधुरवचना जाइए)

सारस्वत— (नेपथ्य दिश देखि) जटिल हौ !

लटिल—(आबि कंऽ) की अअआज्ञा होइए ?

सारस्वत—लावा, जारनि, धान, घिउ, जल, कुश, विष्टर, आगि ।
—माड़ब पर सञ्चित करह, सब पुरहित सङ्ग लागि ॥

---

१. 'देलिऐनि' उचित ।

Scanned by CamScanner

ओ पुरहित कें कहुन जे सावधान भ कर्म्मारम्भ करावथु।

जटिल—बेश।

(सभ जाइए)

(दुइ भरिआक सङ्ग मन्त्रीक प्रवेश)

मन्त्री—(आकाश दिश देखि) की पूछलहुँ जे 'कतऽ सँ अबै छी ?' हम विदर्भ महाराजक पठाओल सारस्वत उपाध्यायक ओतय अयलहुँए (उपर देखि) की पूछल जे—'पुत्र सँ कन्या किए ?' दुर्वासा मुनिक शाप सँऽ। की पूछल जे—'राजा कोनो उपाय नहि कैलथिन्ह ?' राजा त तेहन यज्ञ कयलन्हि जे साक्षात् परमेश्वरी प्रगट भए बजलीह जे दुर्वासाक शाप कें हम नहि छोड़ाएब परन्तु सारस्बत मुनि क्रुद्ध भय आयल छथि तनिका हम कहै छिऐन्हि जे एहि कन्या सँऽ परमानन्द कुल कें हयतैन्हि ओ दोसर पुत्र एहू सँऽ अधिक गुणी उत्पन्न हयतैन्ह। एहि कन्याक पाणिग्रहण सुन्धा सँऽ करथु। की पूछल जे-सारस्वत की बजलाह ?' परमेश्वरी सारस्वत कें सन्तुष्ट होवऽ कहलथिन्ह ओ विवाह सामग्री राजा कें देवऽ कहलथिन्ह। सैह लेया कऽ हम अयलहुँ अछि। की कहल जे— एँह घर सारस्वत मुनिक थिकैन्हि, कन्यादानक ओरिआओन सभ भ रहल अछि ? तँऽ हमहु ओहि ठां जाइ।

(सभ जाइए)

(भिक्षुकक प्रवेश)

भिक्षुक—(नेपथ्यमे हुलकी दऽ कऽ अपनहि अपन) हमरा दुइ कोशमे भीख मंगैत कै दीन बीत गेल तावत् एत कान्यादानहुक ओरिआओन देखै छी। तखन के हमर सुनत ? राति भरि एहि ठाम रहब। भोजन भेटबे करत। वृत्तान्त कहबाक तऽ आब कोनो आवश्यकता नहि। देखू तँऽ आङनमे गीत नादक आरम्भ भय रहलय। तावत् हमहु एकटा गोते गाबी।

(गबैए)

(महेशवानी)

गामक नारि आइलि सभ दौरि
हरषि सम्हारय वर सिर मौरि।

छाँछ दही क्यो राखय पौरि,
कोवर घर क्यो विरचथि ढौरि।
नव नौतारि कयल संगसौरि।
कन्या आनि पुजाबय गौरि।
क्यो कह लेपय चानन खोरि,
हम पहिरायब हार चितौरि।
मङ्गलमय माचल अछि झौरि,
क्यो गावय क्यो करय खेलौरि।
जीवन ध्यान मगन रह धौरि,
लोचन देखब शङ्कर - गौरि।

(पट खसैए)

(पाँच स्त्री पात्रक प्रवेश)

(गीत महेशवानी)

शिव हे

तुअ गति अदभुत कहल न जाय,
सुमरि-सुमरि मोर मन थहराय ॥१॥
प्रगट गरल सुर असुर डराय,
तोंह पुन धनसन लेलह पचाय ॥२॥
गौरि विवाह कयल जुगताय,
तों कत डाहल मनसिज काय ॥३॥
भसमासुर बर देल बढ़ाय,
भव कत चललहुँ दूरि पड़ाय ॥४॥
दक्ष कयल सभ योग उपाय,
भाँड़ल यद्यपि छलहुँ जमाय ॥५॥
जनिका थिकइन्ह बाप न माय,
गिरिजाक जीवन तनिका लाय ॥६॥[1]

---

१. मुद्रित पोथीमे पाद टिप्पणीमे कहल गेल अछि—
"धनि गौरी तप करु तनिकां लाय—इहो पाठ छैक।"

(नेपथ्य मे)

(गीत-महेशवानी)

बान्हय सभ शिव लय जमकै, श्रृंगीताल डमरू डमके ।।
त्रिपताकी सौं ग्रहगन हलचल, चरन अघात धरणि धमकै
चकित सभासद भृकुटि विलोकन, कतहु न तेसर दृग दमकै ।।
पिक वचना गौरी सुर पञ्चम, नन्दी ऋषभ गाव ठमकै ।।
पाँचहुँ मुख अवशिष्ट पाँच सुर, गाबि-गाबि उमता उमकै ।।
तान शब्द सौं गगन वेआकुल, भ्रम अनुसार पावन रमकैं ।।
खन-खन कर सौ जटा सम्मा (मा) रथि, कतहु न सुरसरि जल बमकैं ।।
मटकी मारय नारद विपटा, धाड़ हिला दुहू दिशि चमकै ।।
इन्द्र वरुण रवि इन्दु रमापति देखथि नाच समा जमकै ।।
जीवन देखि मनहि मन हर्षित, चन्द्र-सुधा वरषा झमकै ।।

(स्थान—(मुनि गृह प्रान्त)

(सुमेधा कतोक पुरुष संग बैसल)

(कलशा, डाला इत्यादि परिछनिक सामान लेलें चपला, मालती, मधुर-बचना ओ मनोरमाक प्रवेश)

मनोरमा—ए दाई ! बरक लग बहुत पुरुष छैक हमरा । माझ में चल दीय । अहाँ लोकनि तँ गामक बेटी ने थिकहुँ ।

मालती—एहना हर्षक काल कतहु लाज देखलैक आय । परिछनि काल तँऽ सभ सँऽ आगाँ अहीं कें रहक हयत ।

चपला—हैं बहिना ! ओहि काल बरक दोपटा तर नुकायल चलतीह ।

मधुरवचना—है लोकनि ! भौजी के लाज ह्वै छैनि तंऽ माझहि ठाँ एखन चलऽ दहुन । परिछनि काल हम आड़ कयलें चलबैन्हि । ओहि ठाम अनगौओं बहुत बूझि पड़ए ।

(मनोरमा के मांस ठाम कय सभ चलय)

मधुरवचना—देखू ए भौजी ! बेह बैसल छथि । बिरह सँऽ खिन्न भ गेलाहय ।

मालती—मचकी पर गीत गौलन्हि से अनुराग रूपहू सँऽ झलकै छैन्हि ।

(गीत तिरहुति)

राधा कन्हा सिरिजल विधिबाला, नेनमति ठानल मदन गोपाला।
ककरो दैव बनाओल बामा, कातर हृदय होथि घनश्यामा ॥
उर गुरु पीन पयोधर तनिकां, बलहु भार हिय ह्वै अछि हिनका ॥
हुनका छैन्ह जघन गुरु भारा, हिनक पयर पुनि चलय न पारा ॥
विधि विरचल हुनि वदन मयंका, हिनकां कौन कलङ्कक शंङ्का ।
धारण करथि रमणि पृथु श्रेणी, हिनुतनु कम्पभार अन्होनी ।
हुनक चरण धरि नमरल केशा, श्याम हिनक पुनि देखिय वेशा ॥
जीवन धन्य वारिचर केतू, आन विकल अछि आनक हेतू ॥

बन्धुजीव—ओ बालसङ्गी ! सभ लोक अहांक विरह गमलके देखू, अहैक रूप-वर्णन गबैत स्त्रीगण अबैए । आब धैर्य करू । एनात (?) अनःमनस्क देखत तँऽ सभ हँसत ।

(तिरहुति)

पूरत सकल तोर मनललसा, देखल मङ्गलमय कुचकलशा ॥
देखि करिय जनु छुबुध परानै, नयन कमल शर भौंह कमाने ॥
श्रवण युगल झलकय पुन तड़की, देखि देखि उठइछ हिय धड़की ॥
भेल दहिन विधि शुभग्रहराज, कर सरसिज परशब कर आजे ॥
सकल कलेवर करब समर्पण, देखब विमल कपोलक दर्पण ॥
राखब कतय अधिक आनन्दा, लोचन गोचर आनन चन्दा ॥
मन ओझरायल आयत केश, तनु पुनि मनसिज दैछ कलेश ॥
जेहन सरस मुख तेहने बचना, आकृति सम विरञ्चि गुन रचना ॥

चपला—(सुमेधाक लग जाकऽ) गाम भरिक लोक अहैके देखऽ आयलए । अङ्गा फोलिय ; पहिलुक चिन्हारय एखन नहि मानल जायत ।

मालती—है ! देखलहि तँऽ छैन्हि लोक सभ । अङ्गा पाग पहिरलहि रहऽ दहुन ।

चपला—है बहिना ! हमरा लोकनि तँऽ देखलहि छिएन्ह । परिछेनि कैन्हारि भलें बुझि सूझि लेतीह । तँऽ उठि कऽ ठाढ़ त होथु ।

बन्धुजीव—ओ बालङ्गी । हम पढ़ा जाइ छी । कतहु हमरहु ने ई सभ नाक-कान धऽ कऽ उठाबै बैसाबै । तकै की छी आहां ! झट दऽ उठू ने ।

(सुमेधा ठाढ़ ह्वै छथि)

मधुरवचना—ऐ भौजी ! आहां एतेक प्रशंसा करै छिऐन्हि से की हमरा सखी सँऽ सुन्दर छथि।

बन्धुजीव—ईः ! आइ हमहु दोसर देह धयलें रहितहुँ तँऽ कतेक सुन्दर कहबितहुँ। हाय रौ दैब !

चपला—हे भय ! गाछी सँऽ पड़यलहुँ से बिसरि गेल ? पुनि लब-लब करय लगलहुँ !

मालती—है वहिन ! ओहना ओहनाक मुह की लगै छह। परिछनिक गीत उठाबह। बूढ़ि बुढ़ानुस सभ एत सँ आङन धरि ठाढ़ी देलें अछि।

(गीत गबैत सुमेधा कें सङ्ग लऽ कऽ सभ नेपथ्य दिश चलय)

(महेशवानी—परिछनि)

वर मनोज समाने रे ।। ध्रुव ।।
निरखि सभ दुख दोष मेटल हरषि घर लय आन रे।
करथि कुल आचार मङ्गल पूजि गूआ पान रे ।।
लय चलथि गजगामिनी सभ, परिछि पुरुष प्राण रे।
मुदित कोकिल मञ्जु भाषिणि करथि मङ्गल गान रे ।।
पुरुष सूक्त उचारि एक दिश विप्र कूटथि धान रे।
चतुर नारि विचारि एक दिशि करय हास वखान रे ।।
ठकि हुसथि ठक बक चिन्हाबथि लोक रीति प्रधान रे।
ब्रह्मचर्य समाप्ति-सूचक शुभ वसन परिधान रे ।।
सावधान विधान संयुत[1] बैसि विशद वितान रे।
भाषि आहुति मंत्र शाखी राखि ज्वालित कृशानु रे ।।

(नहू नहू चलैत बन्धुजीव कें छाड़ि सभ गेल)

(पटीक्षेप)

षष्ठ अंक समाप्त

---

१. मुद्रित पोथीमे 'संपुत' छैक।

Scanned by CamScanner

सप्तम अंक

बन्धुजीव---(नेपथ्यमे हुलकी दऽ कऽ आबि) एखन घरि माउगिहैक विधि होबऽ लगलैकय। विवाह कते काले हयतैक से ने जानि। पुरहित तँऽ एम्हरहि दऽ गेलैकय। महाधुथ्थुर बूढ़ अछि, अक्षरो सूझैत होइक वा नहि। बालसङ्गी सतरकी करथि तँऽ झट दँऽ कृत्य समाप्त ह्वैक जे खायक भेंटय। तावत् एना रही जे हमरा क्यो ने देखय, हम सभ कञो देखी।

(जाइए)

(सामवतीक प्रवेश)

सामवती--हम निश्चय जनैत छी जे सभ ओरिआओन ह्वैए, आब विवाह हयते तथापि भरोस नहि ह्वैए।

(गीत—मल्लार वण्डक)

सुनि[1] सुन्दरि हयत विवाहे ॥ध्रु०॥
कौखन वसन विभूषन साजे एक निश मनमे गुरुजन लाजे।
हसि भरि मूह किछु कथा न बाजे केवल मन उतसाहे ॥१॥
भाविनि हरषि मनहि मन फूले आजु भेल मोर विहि अनुकूले।
हिय पुनि शंशय झूलन झूले खन भल खन अधलाहे ॥२॥
कामिनी मोद जलधि अवगाहे कतहु गम्हीर कतहु पुनि थाहे।
देव पितर सौं यैह वर चाहै जौं विधि कुशल निवाहें ॥३॥
जीवन देखि हर्ष हिय बाढ़े सकल शरीर रोम अछि ठाढ़े।
बूझि विलम्ब पड़य मन गाढ़े कखन हरत दुख नाहे ॥४॥

(दर्पनक हाथे मधुरवचनाक प्रवेश)

मधुरवकना—केश बान्हि कँऽ जा हम दर्पन आनऽ गेलहुँ ता तों एतऽ चलि अइलीह !!!

---

1. गीत नेपथ्य सँ गायब उचित छल।

सामवती—हे सखी ! ओहि ठाम अधिक लोक के देखलैक[1] से लाज भेल तेँ एतऽ अयलहुँ ।

मधुरवचना—हे सखी ! एहन सुन्दर देहमे भूषण साजब तँऽ उपचार थिक तथापि हम अपना मने श्रृंगार सभ कय देलहुअय, कनेक अपनहुँ आँखिएँ देखि लितह तँऽ हमर परिश्रम सफल ह्वंत ।

(दर्पन सामवतीक हाथमे दैए)

सामवती—(दर्पनमे मूह देखि) हे सखी ! एतेक दिन हमरा परतारैं छलीहय जे तोहर सन सुन्दरि संसारमे दोसर कयो नहि अछिए' से हमरहु सँऽ सुन्दरि यैह देखह ।

(अपन प्रतिबिम्ब मधुरवचना के देखबैए)

मधुरवचना—हे सखी ! आब ओही ठाम चलह ।

(दुनू गेलि)

(नेपथ्यमे अठौगरक ध्वनि और किछु पढ़बाक शब्द)

(गीत ध्रुपद वा विहाग)

दुहू देखि हर्षित नगर जानकी राम ।।
एक चहुओर कय घोर धुनि तोड़ि
शिव धनुष टंकोरि अतिभार आयाम ।।
अपर जयमाल पहिराय ततकाल
पुनि लोचन विशाल अवलोकन ललाम ।।
एक तनु तडित रूचि शोच मोचन रुचिर
अपर तनु सजल नूतन जलद श्याम ।।
ललित वसनाभरत शोभ अति गोर
तन जनुक नव पल्लवित मञ्जरित आम ।।
श्याम तनु पीत परिधान वासन्तिका ।
लता जनु लपटय तमाल अभिराम ।।

---

१. 'देखलिऐक' होयब उचित ।

कञ्चन कवोट अन्त वञ्चकता
छोटपन चञ्चलता पुनि दुखद परिनाम ॥
जीवन छाड़ि अहङ्कार ममता विकार
लोचन भरि देख विश्व विश्राम ॥

(नेपथ्यमे)—ई कतऽ आङन आयल ? घर तंऽ ।

(डेराग्रल पोटरी बन्धलें बन्धुजीवक प्रवेश)

बन्धुजीव—आङन गेलहुँ जे गोदान हमही लेब से ई दृष्टि जैतहिं खेहारलक । एहि भीतिक ओत भऽ नुका रहै छी । गारि पढ़ती तँऽ हमहु गरिऐवैन्हि ।

(नुकाय)

चपला—(आबि कंऽ) कतऽगेल ? एकर कहिऔ ने पेट भरै छेक ।
खन खन फांकय चूड़ा माढ़,
दांत निकोसलें मड़वा ठाढ़ ।

(नेपथ्यमे)— दैवक देल पहिरलन्हि चकती,
कथि लय ऊपर नीचा तकती ॥

चपला—जाह, आब नुका रहलाह नहिं तँऽ तोहर दुर्दशा करितहुँ । बड़ बिलम्बे विवाह भेलैक । राति भरि जगलहुँ से आँखिए ने सुझैए । पुन महुअक केर ओरिआओन हयतैक । हम तँ कनेकाल सूति रहय जाइ छी ।

(गेलि)

बन्धुजीव—(आवि कंऽ) इः ! सुपारी कतेक भेटल । भिक्षुकबा भेटैत तंऽ ओकरा सिहवितहुं । आहि रौ दैब ! हम अपन वियाह तंऽ बिसरिए गेलहुँ । बालसङ्गी खीरि खैता !!! हमरा बुकौरि लगैए ।

(नेपथ्यमे)

(गीत-उचिती)

बइसि जोड़िकर सम्मुख, गोचर करिय अपन दुख ।
करिय न चित कहुँ चञ्चल हौंकिय वीयनि अञ्चल ॥

तुअ पद पङ्कज केवल, छाड़ि छुआ छल सेवल ।।
सहब सङ्गहि सभ दुख सुख, नेह निवाहब रूखसुख ।।
एतऽ हयत कति अनुचित, धरब एको तोंह नहि चित ।।
कतय बहुत अनुरोधब, सुमति मतत परिबोधब ।।
लखि अङ्कुर रोम खनहि खन, बाढ़य हर्ष मनहि मन ।।
मम सखि जीवन सरवस, पड़ब कफर पुम परवस ।।

(गीत योग)

आइ[1] हमर बड़ भाग रे, गुनि जन जोड़ल ताग रे ।।
भरि दिशि विधु उपराग रे, मधूकर पिबथु पराय रे ।।
प्रीति न भेद मनाग रे, जेहि अभृत तेहि साग रे ।।
कमलिनि परम सुहाग रे, दिनकर सम अनुराग रे ।।
श्रम कय खनिय तड़ाग रे, पूरय जों हो याग ।।
तोह पोछब पगु दाग रे, एहि लोकक शिर पाग रे ।।
देव दनुज नर नाग रे, केओ नहि तुअ सम लाग रे ।।
कवि जीवन मन बाग रे, रस, परिपूरित राग रे ।।

(भिक्षुकक प्रवेश)

भिक्षुक—अहह ! चारि दिन सँ एहि ठाम छी, बड़ आदर भेल । आइ चतुर्थी भऽ गेलैन्हि । आब आन ठाम चली । तपोवनमे जतहि जाइ छी ततऽ निर्भय रहै छी । देखू तँऽ एहि तपोवनक समञ्जस ।

(जयकरी छन्द)

दूर कतहु जों जाइछ गाय,
बाघिन पोसय बच्छ पिआय ।।
कुञ्जर कलभ समीप खेलाय ।।
विसभ्रम सिहक लग न जाय ।।

बन्धुजीव—(आबि कऽ) कहू कहु भिक्षुक ! कोनो क्लेश ने त भेल ?

भिक्षुक— बड़ आनन्द भेल । आब जाइ छी ।

---

१. पूर्ववर्ती गीतक निर्देशें इहो गीत नेपथ्यमे गेय थिक ।

(भिक्षुक गेल)

बन्धुजीव—इः कोहुना गेल। डर ह्वं छलै जे हमरहु सँ ने मांगे।

(गीत-जाजमन्ती)

बालम[1] कौतुक गेह देहरि लांघे न रमनी।
पहिल रजनि थिक पहुक समागम
थर थर कापय देह
धड़ धड़ धड़मय धमनी ॥१॥
सखिक सपथ एको नहि मानय
जान न पिय प्रति एहु।
ठाढ़ि विकल गजगमनी ॥२॥
क्यो कतबो कर जोड़ि बुझावय
पोछि नयन जल मेहु
मान न व्यर्थ भरमनी ॥३॥
जीवन कहल करै नहि ककरो
प्रगट हयत पिय नेहु
धनि धनि मानस दमनी ॥४॥

बन्धुजीव—(स्वगत) कालिह बालसङ्गी सँऽ भेट हयत तखन ने। तावत् अंठाक सूति रहै छी।

(नेपथ्यमे)

(गीत सोरठ)

मान तोंह जनि करु सुकुमारी सुनु मोर वचन एतेक।
एत दिन मृदु तन कयल कठिनपन पुनि अब कोप कतेक ॥
पियमुख निरखल जखन नयन भरि तखन रहल कत टेक।
चम्पक दाम उरग कय बुझल धनि सखि तोहर विवेक ॥
मूढ़ हृदय बिसरल तोहि से सभ छल अभिलाख जतेक।
रहसि रहसि पुन हसब खेलायब बीतय काल अनेक ॥
जीवन जानि छमा करु भामिनि जों भेल चूकि गोटेक।

---

१. गीत नेपथ्य सँ गायब उचित।

Scanned by CamScanner

(सामवतीक स्वरें)

(गीत-विहाग)

निवहत[1] मान कोना पहुसङ्ग ॥ध्रुव॥
घूमि नयन हुनके मुख देखय करिय जतय भ्रूभङ्ग ॥
कर्कश करिय हृदय आभ्यन्तर, बाहर पुलकित अङ्ग ॥
जते प्रयास वचन रोकिय तत, मुसुकि ह्वँछ मुख भङ्ग ॥
हम मुख मोड़ि दूरि जत बैसिय, बाढ़य ततेक उमङ्ग ॥

(सुमेधाक स्वरें)

(गजल—संस्कृत)

अन्हाय[2] विधेयाथ मनोरोग चिकित्सा ॥
चेदस्ति तनोरङ्ग ममारोग्य-विधित्सा ॥१॥
रत्यन्तमलङ्कारमलङ्कारमवागाम् ॥
कोपाग्नि रूपादीप्युभयोरत्र समित्सा ॥२॥
आकारमथाकारमवैमीह तवेमम् ॥
तत्रैव मतिर्मे तव यत्र प्रतिपित्सा ॥३॥
दन्तक्षतमाधेहि शरीरे न विरज्ये ॥
स्त्रीयेहि जने मुग्धमते का विचिकित्सा ॥४॥
गृह्णासि कपाटन्तु परित्यज्य सुशय्याम् ॥
स्रग्दामधिया तन्वि भवस्यात्ततिलित्सा ॥५॥

(पटीक्षप)

(कोबर घर मे सुमेधा, मधुरवचना ओ चपला देखि पड़ैए)

चपला—हे मधुरवचना ! ई एहन बुद्धिमान वा संकोची तखन एहन दुर्द्दुट सँऽ बालसङ्गी की लगौलनि ?

मधुरवचना—हे चपला ! ओ ब्राह्मण बड़ बुधियार अछि । तों । ओकरे मूह दुसैत रहै छहक तें तोहरहु खिसिअबै छहु। हमरा लोकनिक दिश तंऽ कहिओ घुरि कँऽ नहिं तकैएँ ।

---

१. अव्यवहित पूर्ववर्ती गीतक निर्देशें ईहो गीत नेपथ्य मे गेय थीक ।

२. पूर्ववर्त्ती गीतवत् इहो नपथ्य में गेय ।

चपला—है ! से निश्चय। पहिलें हमहीं ओकरा उजबुक कहलैक[1]। अहहह ! ओकर स्फूर्ति विचारि कं मात्सर्य हुए।

सुमेधा—आब गाम जयबा लय अगुताइ छथि ! अये मधुरवचना ! बालसङ्गी के कहि अबिऔन्हि जे गाम जोइ छथि तें हमर भेंट कय लेथु। मधुरवचना जाइए ओ बन्धुजीवक संग पुनि अबैए)

बन्धुजीव—(स्वगत) कोतुकागारमे बरका बड़ आनन्द हुं छैक। आइ कालिह हिनका बड़ आनन्द छैनि। किएक त हिनका संऽ परम सुन्दरी स्त्रीगण निर्भर सरस कथा करैत रहैए। एतेक आह्लाद आन ठाम कतहु ने छैक। (प्रकाश) बालसङ्गी ! आहांक के छौड़ी सभ खिसिऔलकय त ने, आँखि लाल भऽ गेलय। मूँह उदास लगैए। आहाँ क्रोध कथी लय करै छी। हम अयलहुँ।

सुमेधा-- (हँसि कऽ) सुनल जे आहां गाम जायब तें उदास छी।

बन्धुजीव—हम पनपिआइ कयलें जाइ छी। भोजन बेरि अयबे पंऽ।

मधुरवचना—है चपला ! पान दू खिल्ली दहुन्ह तँऽ लीक बुझतैन्ह जे ाङ्गीक सासुर सँ अयलाहय।

चपला—(पान दऽ कंऽ) कहल सुनल क्षमा करब।

बन्धुजीव—इ: पात चिबा कँऽ की क्षमा करू, लड्डू रहैत तँऽ किएक ने। (सुमेधाक दिश देखि) हम दौड़ले चल अबै छी। आहाँ प्रसन्न रहू।

(चल गेल)

सुमेधा—

(संस्कृतमे श्लोक)

स्वर्णोद्धृतः स्वकथितानुग भृत्यमन्धुः
प्रीतः प्रजः प्रमुदित प्रकृतिः स्वतन्त्रः।
येनेत्थमर्थिनिचयो गमितः स्वसाम्यं
पृथ्वीम्प्रशास्तु नि तरां प्रभुरेवसर्वाम् ॥१॥

---

१. 'कहलिएक' उचित होयत।

शक्लपृष्ठ रद नख पद कोप विशिखत गुप्ता
गुप्ता पाणि समाधि कृपाणैरपि— न सुखेन सुप्ता,
सुप्ता चापि त्वरैव तदास्मरसि मुहुर्ल्लय लुप्ता'
लुप्ता कालप्रसूत कदा विनिर्गत धरानुरक्ता,
रक्ता भवतु प्रजा तव श्रील श्री प्रभुनारायण,
नारायणमिव तिष्ठ रक्ष हर भर पुनर्नवम् ।।२।।

(पटीक्षेप)

इति यज्वालय—कविवर पण्डितवर झोपा ह्व जीवन शर्म्मं रचितं सामवती पुनर्जन्म नाम नाटकं समाप्तम् ।

Scanned by CamScanner

सुन्दर संयोग

(नाटक)

Scanned by CamScanner

सुन्दर संयोग

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

सुन्दर मिश्र –नायक।

गिरिधर झा –सरलाक माम।

हरदत्त – वैद्यनाथक पण्डा।

शिवनाथ—हरदत्तक पुत्र।

डाक प्यादा—

स्त्री पात्र

सरला—नायिका।

सरस्वती—सरलाक माय।

अभिरानी—सरलाक मामि।

कादम्बरी—सरलाक ममिऔत बहीनि।

सरोजिनी—हरदत्त पण्डाक बेटी।

कुसुमी—सरोजिनीक प्रियदासी ओ सरलाक आधुनिक प्रेमाकांक्षिणी।

Scanned by CamScanner

सुन्दर संयोग

(नान्दी कवित्त)

पूछी ने विचार अनचिन्हार उपकार कोन,
वरै छी भिखारि सरोकार कोन हिनकाँ,
हटू सखि पुनि कटू वजै अछि विप्र वटू,
चललीह गौरी दौरि दोसर विपिन काँ।
देखि दृढ़ प्रीति शिव प्रगटि प्रतीति धरि,
निज रूप रीति अंक भरि गहि तिनकां,
जीवन सफल सेवि सेवक दयालु देव,
लेब माङि वर सैह जैह रुचै जिनकां॥

(ई नान्दी भेला उत्तर)

सूत्रधार—अनेक देश निवासि पण्डित रसिकमण्डित सकल कला निधान सङ्गीत-शास्त्रकोविदजन सँऽ परिपूरित श्री महाराजक सभा देखैत छी। कोन एहन कार्य करल जाय जाहि सँ ई राज सभा अनुमोदित हो। (थोड़ेक काल चुप्प रहि कँऽ) ओहो! हमरा सभाज्वर भै गेल, किछु फुरितहि ने अछि तँऽ अपना प्राणप्रिया सँ पूछी। (नेपथ्य दिशि देखि) इएह हमर घर थिक।

सकल कला परिपूरनि अहाँ।
हमरा बिसरि बैसलहुँ कहाँ॥

नटी— प्राणनाथ! सभ गुणक आगर अपनहि छी तखन हमरा लय किए एतेक विकल भेलहुँ।

सूत्रधार—एहि ठाम बड़का बड़का पण्डित सँऽ ओ सरकी खसल जे देखैत छी से परम चतुर स्त्रीगण सँऽ भरल कोठा अछि। श्री महाराजक इच्छा जे रूपकाभिनय होय तें हम क्षुब्ध भय अहाँ के बजाओल अछि जे कोन एहन नाटक हो जाहि सँ सभासद प्रसन्न होथि।

Scanned by CamScanner

प्रथम गर्भाङ्क

नटी— आहाँ कें तँ नाचे काछ मे चित्त रहैए। हमरा तँऽ एकटा कन्या सेहो दुःखित। एखन धरि जमाइक पुछारियो नहि गेलैन्ह, तखन हम की मन पाड़ब।

सूत्रधार— वल्लभे! अहाँक विलापहु सँ हमर काज सिद्ध भेल, देखू तँऽ यजुआडय-सँ-पण्डितवर श्री जीवनशर्म-रचित सुन्दर संयोग मन पड़ि आएल।

(नेपथ्य दिश देखि)

हौ जी! तोहरा लोकनि सुन्दर संयोग नाटकक प्रयोग जनितहि छह, तकरा सभानुमोद निमित्त तत्पर भय करैत जाह।

नट सभमे एकटा— बुध-मन-भावन रस कालीन,

तें हम अभिनय करिअ नवीन।
कविवर जीवन रस परवीन,
यश अपयश थिक दैवाधीन॥

सूत्रधार— बेस तँऽ अभिनयक उद्योग करह, हम एखन जाइत छी।

नटी— हमहुँ पान आधा लगाओल आओर छाड़ि आएलि छी।

सूत्रधार— बेश चलू।

(दुहूक प्रस्थान)

(नेपथ्य मे गीत)

जगत-जननि भजु भारति, सरस-वचन अनुसारति ॥१॥
अनुचित-वचन निवारिनि, वीना-पुस्तक धारिनि ॥२॥
सित कमलासन वासिनि चतुराननक विलासिनि ॥३॥
कवि-हिय-कमल-विकाशिनि, जड़ता-दोष-विनाशिनि ॥४॥
पूजि तोहि पद आशय, गूढ़ अर्थ अवभासय ॥५॥
गिरा सुमिरि जँऽ नाचब, सकल दोष सँऽ बाँचब ॥६॥

Scanned by CamScanner

(दृश्य—पण्डाक मकान)

(सरस्वती, सरला, अभिरानी, कादम्बरी, गिरिधार झा, सुन्दर ओ हरदत्त पण्डाक प्रवेश)

हरदत्त पण्डा—देखैत जाउ, ई बही अपनहि लोकनिक पुरुषा सभक लिखल थीक।

गिरिधर—निश्चय हम देखल, जे गोटें एखन छी सभक पूर्व पुरुषाक नाम अछि। (बांचि क सुनवै छथि)

सुन्दर—(अपना ससुरक नाम सुनि ओ सरला कें देखि, मन मे) निश्चय इएह मनोहर मूर्त्ति हमर प्राणेश्वरी थिकीह परन्तु एखन अनचिन्हारे रही सैह उचित। (प्रकाश) पण्डाजी ! एहि लोक सबहि कें डेरा दिऔक। हम दुइ एक दिन वरुक आने ठाम रहब।

हरदत्त—से कथी ले, अहाँ तँ अधिक काल घामहि पर रहैत छी। इहो लोकनि बहुत गोटे नहि छथि। मकान मे बहुत थल छैक।

सुन्दर—बेश, आव ई लोकनि पूजा-दर्शन कय आवथि।

हरदत्त—आइ तँऽ अवकाशे छैक, कालिह सम्हारैत जाएब।

सुन्दर—वैद्यनाथक कृपा सँऽ सभ सम्पन्न हैतैन्ह।

(सरला कादम्बरी कें छोड़ि सभ जाइए)

(सरोजिनी ओ कुसुमीक प्रवेश)

सरोजिनी—जखन सँऽ तोहरा लोकनि अइली है तखन सँऽ अन्तय मने ने लगैए।

कादम्बरी—हमरा लोकनि बड़ि अपराधिनि ने भेलहुँ, राति कोना अन्तय रहबह।

कुसुमी—राति कँऽ दुपहरिओ राति हमरा सङ्ग लय जगौतीह। ओइ काल सब बिसरि जैतीह।

सरोजिनी—तोहरा लोकनि जे कहैंहि, हम फूसि बजितहि ने छीए।

सरस्वती—हमरा लोकनि पाहुन अइलिअहु अछि, आइ राति सासुर जनु जाह।

सरोजिनी—हमरा सँ शपथ खोआ लै जँऽ आइ जाइ। तों एसकरि रहबह तखन हम कोना दोसरा कोतऽ जाएब। आइ दुहू गोटाक एके गति।

(गीत)

तोहर वदन विधु-सम मोहि लागे,
जकरि परशमनि तोंह थिकिह धनि तकर सराहित भागे ॥१॥
अमल-कमल-कोमल-अतिलोहित सहजहिं पगु निजरागे।
विरचि विरचि आरत-रस-रचना कत लगबै छिय दागे ॥२॥
भूषन काढ़ि ने राखह धनि तोंह चलबह सबहिक आगे।
अतिशय-मृदुल-अङ्ग तोहर अछि कतहु कुदृष्टि न लागे ॥३॥
बिसरि गेह परिजन सुदेह सुधि मधुकर निशि-भरि जाग।
प्रीति-बिवश दल-पुट नहि तोड़य लुबुधल कमल-पराग ॥४॥

कादम्बरी—हैऽ तों बहुत अर्थ मिला क गौलऽ हैं।

(बसन्त)

जेहनि अपने रति सुभग वाम, तेहने सुन्दर पति मिलल काम ॥१॥
तनु तेज-पुञ्ज शोभा-निकाम, उज्ज्वल-सुकण्ठ उपवीत दाम ॥२॥
इक जलद जगत-सुखदायि श्याम, पुनि इन्द्रधनुष प्रकटित उदाम ॥३॥
सब अङ्ग सुभग नयनाभिराम, तहँ मुख विकाश करु कान्ति-धाम ॥४॥
इक सकल सुखद निशि-पूर्व-या पुनि चन्द्र-उदय दुगुनित ललाम ॥५॥
इक अरुन-अधर-माधुरी-धाम, तहं वचन-अमृत श्रवणाभिराम ॥६॥
तरु-लता-कुसुम-पुरित अराम, पुनि कुजय पीक पञ्चम गराम ॥७॥
विधि सुकृति रतन राखल सुठाम, वर वधू जोड़ि जानकी राम ॥८॥

है चारिए दिन तँ हमरा गाम छलाह तँओ हुनका भौंहक बीच महँक तिलवा एको तिल नहि बिसरैत अछि।

कुसुमी—तखन हिनका पर बड़ सिनेह हैतँन्ह।

सरला—है दहिन, आब चलह ने।

सरोजिनी—वेस चलै चलह पण्डित बाबू कथा बचैत हैताह। माँ जँ बहुत कहै छैन्ह तँ अर्थो कहै छथिन्ह।

(शिवनाथ ओ डाक-प्यादाक प्रवेश)

डाक-प्यादा—कनकपुर से खत लौट आया है 'सरस्वती ठकुराइन वैद्यनाथ गई है, यही इसके पीठपर लिखा है।

शिवनाथ—हम तो पढ़े नहीं हैं लेकिन सरस्वती नाम की एक औरत कनकपुर की हमारे मकान में टिकी है।

सरस्वती—हम कञ्चा दाइ सँ लऽ कऽ देब, चिट्ठी लऽ लिअ ।

शिवनाथ—पैसा लेओ, खत हमको देओ (डाक-प्यादा सैह करैए।)

(गिरिधर झाक प्रवेश)

कादम्बरी—है बहिना, दादाके देखऽ त दहून जे ककर लिखल थिकैक।

(सरला शिवनाथक हाथ सँ लय क गिरिधार झा के दैत छैक।)
गिरिधार झा पढ़ि कऽ बटुआ मे धरैत छथि)

सरला—चिट्ठी मे की छैक से नहि कहल आ कि दाइये के कहबैक।

गिरिधर—एखन ककरहु नहि कहबौक, गाम मे कहबैन्हि, बहिन के कोनो गोटे एखन जनु कहून।

(सभक प्रस्थान)

प्रथम अङ्क समाप्त

द्वितीय अंक

(दृश्य—पण्डाक मकान)

(अभिरानी, कादम्बरी ओ पण्डाइनिक प्रवेश)

अभिरानी—ऐ ! पण्डित के थिकाह ?

पण्डाइनि—ई एतय डेढ़ वर्ष सँऽ कोनो पुरश्चरण करै छलाहे । घर हिनक देवनगर [गाम] थिकैन्ह । बाबू कें समान बयस बूझि कँऽ अपना स्त्रीक दुखक कथा कहिक कनैत रहथि । आब देश जयवा लय छथि ।

अभिरानी—आहाहा जेहने सुरुप तेहने विद्यो परमेश्वर देलथिन । हिनक मनोरथ सिद्ध होउन्ह ।

कादम्बरी—गै दाइ ! सरलाक वर त ने थिकथीन्ह ।

अभिरानी—चुप रह छुच्छी । सरस्वती दाइ सुनथुन्ह तँ ओठे धऽ क तीर लेथुन ।

कादम्बरी—गै ! कपार में तिलबा ओहने छैन्ह । कहऽ कहहिं तँ सरलाकें कहिऐक ।

अभिरानी—हँसीक रूपे कहिहैंक ने तँ कोन ठेकान, नहि होइक तँ झगड़ा हैत ।

पण्डाइनि—वेश कहै छथुन है दाइ ! होइथीन्ह तँ कहिऔ भेटबे ने करथीन्ह ।

[सरस्वतीक प्रवेश]

सरस्वती—अहाँ एही ठाम छी ?

पण्डाइनि—आउ, पण्डित बाबूक कथा नीक लागल ?

सरस्वती—हा ! के एहन अभागल हैत जकरा एहन कथा महादेवक चरित नहि नीक लगतैक । 'एक तँ गङ्गाजल दोसरें सोनाक पात्र मे ।'

अभिरानी—सँह देखू तँ ! एतबहि बयसमें एहन पण्डित ! अहाहा ! स्वभाव केहन उत्तम ।

सरस्वती—अपना माइ बापक भागे जीवथुन्ह ।

Scanned by CamScanner

पण्डाइनि—हिनक बाप नहि जीवै छथिन्ह। माए छथीन्ह। दुरागमनो नहि एखन धरि भेलैन्हे।

सरस्वती—भगवान हिनक मनोरथ पुरौथिन्ह।

(गीत)[1]

भेलौं शरनागत अब दुख भागत जागल शिव हे हमर सुभाग ॥१॥
जनम गमाओल तोहि न पाओल त्यागल शिव हे पदुम-पराग ॥२॥
अब हम जानल तुअ ब्रत ठानल लागल शिव पद-अनुराग ॥३॥
तोंह प्रभु शङ्कर हम तुअ किङ्कर माङल शिव हे विषम विराग ॥४॥

[सरलाक प्रवेश]

सरला—सखी सूति रहलि। हमरा एसकरि कोनादन लगै छले तैं चलि अयलहुँ।

पण्डाइनि—(चुम्बा लय कँ) आहाहा! सरोजिनी सूति रहलि! लाल कहलैक[2] आइ सासुर तें ने गेलि नौंड़िओ कें फेरि देलैक।[3] तोहरहि सिनेहे रहलि तखन सूति किएक गेलि? चलू हम चलै छी। अन-चिन्हार ठामक लेल तोहरा नीन होइत हेतहु।

[शिवनाथ कें छाड़ि सभ जाइए]

(सुन्दरक प्रवेश)

शिवनाथ—पण्डित भाइ! आइ तँ सभलोकके सुन्दर जकाँ दर्शन भेलैक। कालिह शिवराति हयतैक। बाबूजी कें व्यग्रता जे सभ लोक सावधान रहिहह। सब अहींक देशक लोक थिक, अहूँ तत्पर रहब।

सुन्दर—(मनमे) हम तँ सावधान छीए, इहो कहै छथि तखन उद्यत होएवामे कोनो अनुचित नहिं। (प्रकाश) मुख्य श्रग तँ अहाँक, ओना हमहुँ हिनका लोकनिक संगहि रहब।

(पण्डाइनि, अभिरानी ओ सरस्वतीक प्रवेश)

पण्डाइनि—हिनका लोकनिक सङ्ग पुरुष एसकरे छथिन्ह।

---

१. गीत नेपथ्य सँ गेय थिक। सुन्दर अथवा सरला दुहूक मनोभाव-द्योतक गीत भऽ सकैछ।

२. 'कहलिऐक' उचित।

३ 'देलकैक' ऊचिर।

अभिरानी—पण्डित बाबूक सभ बुझल छैन्हि। हमरे देशी थिकाह तँ एतेक परिश्रम नहि करताह ?

सरस्वती—अपनहि देशक ने हँसी हयतैन्ह जँऽ हमरा लोकनि केँ शिवदर्शनमे विथुति हैत—

(सुन्दरक प्रस्थान)

शिवनाथ—हमहुँ कहलिऐन्हि अछि। हम ओहि ठाम रहबे, पण्डित बाबू अहाँ लोकनिक सङ्ग अवश्य रहताह।

(सभक प्रस्थान)

(दृश्य पर्वत जङ्गल पुष्पादि संयुक्त)

(सुन्दरक फुलडाली लेने प्रवेश)

सुन्दर—अहो प्रभातप्राया रजनी वियोगिविपादकोऽयं समयः।

प्राणिष्वपैष परितप्त तनुश्चिरं चे—
ल्लेपैः किलैव मलयोपवनं व्यनननङ्क्षयत्।
इत्युत्थिता शमनदिक् पवनच्छलंन
व्यालावली विरहिणं प्रतिफूत्करोति ॥१॥

(फूल बेलपात तोड़ि कँऽ)

पर्याप्त मियद् भगवदुहाराय हन्त भोः यदनुग्रहण दुर्लभतहांमप्रियतमादर्शन रूप मनोरथ शरण प्राप्तिरभवत्। तस्य परिचयार्थं घटिकाद्वयात्मकमपि कालं न क्षिपेयं कोऽथ कथय मत्तः प्रमत; कृतघ्नश्चत् भवेत्। अहह सूर्योदये सुदर्शयं कालशेयं वनभूमिः।

अथवा।

समानमल्लीलवली सुमध्यमा समुल्लसत्तालतमाल कानना
रसालसोद्रेक नितम्बलम्बिनी वनावनीम रमणीव रोचते ॥

किञ्च अविरल मधुलुब्ध मधुकर परिचुम्बित कुरवक वकुलकम्पिल्ल कुसुम लोभनीयाऽपि अगम्या अन्योन्य भीति विलीन मृगनिकरतया शान्ताऽपि भयावहा किंबहुना या विकचाऽपि सुन्दरी ऋतु प्रसङ्गेतु नितरां पवित्रा।

Scanned by CamScanner

ओह ! जीवित प्रियाक वियोगमे एतेक अनवधान भय गेल छी जे बजबहुक ठेकान नहि अछि । जे क्यो सुनत से की कहत । बुझि पड़ैत अछि जे थोड़े काल धरि हम देवभाषा बजैत छलहुँ अछि । (चारू दिश देखि) एखन एहि ठाम नहि क्यो अछि ।

(नेपथ्यमे गीत)

(राग पीलू)

अहाँ सों भेंट जहिआ भेल तेखन सों विकल हम छी ।
उठैत अन्धार होइए काज सब करबामे अक्षम छी ।।
अहाँ कां छाड़ि कै पृथ्वीमे दोसर हम ने देखै छी ।
कोना काढ़ू हम अपना मूहसँ अहां सभसँ उत्तम छी ।।
कथू लै फूसि नै बजब शपथ खा खा कहै हम छी ।
अहीं प्राणेश्वरी छी एकटा सर्वस्व प्रीतम छी ।।
पिनाकी पूजि क्यो राजा होओ गोविन्द क्यो पूजो ।
सम्हारू वा विगाड़ू विश्वमे एकटा अहीं दम छी ।।

(दृश्य वैद्यनाथ मन्दिरक चतुर्दिक्षु मेला)

(एकदिश अभिरानी, कादम्बरी, सरस्वती, सरलाक ओ सुन्दर)

सरस्वती—गै ! हमर हाथ धऽ ले ने तँऽ भोतिआ जयबें । आगे दाइ ! एहन भीस तँ कतहु ने देखऽ ले । अभिरानी की भेली ?

अभिरानी—ऐ ! इएह तँ छी ।

सरस्वती—ऐ ! सरलाकें देखैत रहबैक, कतहु पीचलि ने जाय ।

(सभ आगां चलैए । सरलाक पतन)

(सुन्दरक कोरा कऽ उठा लैब)

सरस्वती—हे महादेव ! ई की भेल ? (अश्रुपात)

सुन्दर—अहाँ लोकनि हमरा पाछाँ पाछाँ चलि आउ ।

सरस्वती—हे बाबू ! एखन कनेक फराक भय बैसै जाउ । जखन लोक थोड़ होइक तखन दर्शन करै जाएब ।

अभिरानी—नीक कहै छी, एखन ने भऽ सकत ।

गिरिधर—हम गाममहिमे कहलैक[1] जे अनदिनामे दर्शन कऽ अबै जैहैं। सेह, आब करै जाहृ दर्शन। हम तँऽ फिरि जाइ छी। केँ प्राण देखो गऽ।

सुन्दर—अपने हुनका लोकनि केँ कथी ले बजइत छिऐन्ह। आब अइलीह तखन जाहि उपाय सँऽ दर्शन हैतैन्ह से करऽक चाही। ई बेस कहलन्हि अछि, भैरवक मठपर बैसि कऽ जखनहि थोड़ लोक देखिऐक तखन दर्शन करैत जाथि।

(सुन्दर कोरा सँऽ उतारि दै छथिन्ह, सरस्वती सरलाकेँ कोर कऽ लै छथिन्ह।)

(सभ सेह करैए)

सुन्दर—एहि ठाम पुलिसक सिपाही अछि। ई व्यक्त ने हो जे चोट लगलैन्ह। [सरस्वती सरलाकेँ कोरसँ उतारि दै छथिन्ह। अवकाश देखि लोक बैद्यनाथक दर्शन करैए।]

सरस्वती—हे बैद्यनाथ ! जे जे कबुला कैल सभ मनोरथ पूरल। आब जमाइ केँ कुशल पूर्वक देखी से वरदान दिअ। एहि छौंड़ी केँ जिऔलिऐक तकर बसहा थिक। आब समाङ सँऽ निकँ रखियौक।

सुन्दर अधिजलधितरङ्गो यथा वाचिवाच्यं यथा दीप्तिराशिर्यथाऽ हस्करे
लोक सर्गीय वा पार्वतीयं तया श्रीमताऽङ्गीकृता।
सुरपुर तटिनी पूर सम्पूरित श्री जटाजूट सम्पूत संसार-
चन्द्रप्रभोद्यत्सुधा जीविताशेष संसार जीवोच्चय॥
द्रुहिणहरिसुनासीर भास्वत्किरीटाश्म कीटानुविद्धोल्लसद्—
वज्र शुभ्रच्छटापूर राजत्पदाम्भोज युग्म प्रभा सुन्दर।
बहु भुजगमसमाभूषितापाद भालस्वभासैव सम्पन्न कल्पान्त—
कृत्यत्वदीयाय पादद्वयायोन्नमो देव भूयो नमः॥

(सभ प्रणाम करैए पुनि मेलाक आधिक्य, सरला कए मूर्छा, उठा क)

सुन्दर—झट दऽ अबै जाउ, बड़ लोक भेलैक।

(सभक प्रस्थान)

---

१. 'कहलिएँक' उचित !

(नेपथ्यमे श्लोक)

स्वीयं वामा यदि कृशतरं मध्यमद्रक्ष्यदेष
गाढ स्लेषात् सुरत समय प्रेयसस्तह्य॑ भेष्यत् ।
इत्यन्तर्धाम कृतमदनो दृगद्वया घोनिपाते
पर्यायीच्चैरुचिर कुचयोः सं निवेशापदेशात् ।।

(सभक प्रस्थान)

(पर्दा खसल)

द्वितीय अंक समाप्त ।

Scanned by CamScanner

तृतीय अंक

(पण्डाक मकान)

(सरला पड़लि अछि, सुन्दर ओ सरस्वती बैसल छथि)

सुन्दर—हिनका आतंक थिकैन्ह, अहाँ चिन्ता जनु करी।

सरस्वती—(सरलाके कोरमे लय क) गै दैआ ! चेत करू, देखू पण्डित बाबू देखऽ अयला है।

सरला— दाइ गै ! पानि पीब।

(सरस्वती सरलाकेँ छाड़ि गेलीह)

(सुन्दर सरलाकेँ देखि लज्जाभिनय)

सुन्दर— कमलमुखि ! तनु ते भूपतिः पुष्पधन्वा
निज समय समुद्यद्राज्य ऋज्वीं चिकीर्षुः।
पृथुरिव विषमोर्वी क्षोदयँश्चाप कोट्य।
प्रकटयति कठोरो रोज शैलद्वयं यत्‌ ॥१॥

(पुनि सरस्वतीक प्रवेश)

सरस्वती—गै ! तोँ लोकहुकेँ नहि चिन्है छँ, इएह प्राण बचौलथुन हैं, तोहरा कोन ? जे कनितथि से कनितथि।

सुन्दर— अहाँक पुण्ये आनक दुःख निवृत्त भै सकैत छैक, तखन हिनका की हैतैन्ह।

सरस्वती—ऐ बाबू ! हमरा पुन्य रहैत तँऽ एकर ई वयस भेलैक, जमाय चतुर्थिअहिक दिन एकरा दुखित छोड़ि कँऽ जे गेलाह से आइ धरि उदेशो ने पबै छिऐन्ह !

सरला—गै दाइ ! औंघी लाग लेऽ।

(दुहूक प्रस्थान)

Scanned by CamScanner

(गीत)

(राग पीलू)

न जानीमो नवीना कामिना हीना कथं शेते ।
अहो कन्दर्पकानुज्ञापराधीना कथं शेते ॥

यथा लेभे न संवेशो वसन्ते वापि हेमन्ते ।
तपर्त्तौरातपे मध्यन्दिने दीना कथं शेते ॥२॥

शायानाऽऽलोकते स्वप्ने सत्पनी सङ्गतं नाथम् ।
जबादुत्थाय शय्यायमुदासीना कथं शेते ॥३॥

कपोलं कोमलं वामे करे धृत्वा कुरङ्गीदृक ।
वियोगव्याकुला चिन्तापरासीना कथं शेते ॥४॥

अखर्वं कुर्वती गर्व पराची संकुचद्वासा: ।
अनुत्तानोद्धती वक्षोरुहे पीना कथं शेते ॥५॥

(शिवनाथक प्रवेश)

शिवनाथ—पण्डित भाइ ? एखन कोन गीत गबै छलहु है ?

सुन्दर—हौ ! निद्रा नहि होइ छलै से कोहुँना मन बहटारै छलहुँ हैं। बेश कयलह तों अयलाह तँऽ थोड़ेक काल गप्प करब ।

शिवनाथ—अहाँके कोनो चिन्ता हो से कहू, हमरा बुत्ते होएत तँऽ हम छोड़ा सकैत छी। नहि तँऽ एखन सुतू, हमहूँ आइ वड़ थाकल छी ।

सुन्दर—बेश सूति रहऽ गऽ । हमरहु आब निद्रा होएत ।

(अभिरानी, कादम्बरी, सरस्वती ओ सरलाक प्रवेश)

(सुन्दर ओ शिवनाथक प्रस्थान)

अभिरानी—ऐ सरस्वती दाइ ! एकरा तँऽ एखन नहि छुटलैके। हमरा आङनक लोक अगुताइए । आब बहुत दिन भेल से की विचार दै छी ?

सरस्वती—अहाँके हम कोना रहऽ कहू । बरुक गाम जाएब तँ हमरो आङन घर देखब, देशक लोक एखन बहुत अछि। कोनो नीक व्यक्तिग संग हम चलि आएब ।

Scanned by CamScanner

सरला—गै ! हमरा तँऽ छुटि गेल। औषध नेने चल। दु एक वेरि मे नीक भ कऽ छुटि जाएत। बहिन जाइत तँ हम कोना रहब।

कादम्बरी—(सरलाक कान मे) अपना वरक संग।

सरला—है बहिन ! तोहरा कथाक तँऽ अर्थ ने लगैए। हमरा सँ कोन अपराध भेलहु है ?

कादम्बरी—जखन गाम अयबह तखन एकर अर्थ पूछऽ पड़तहु (कान मे) पण्डित बाबूक बाजब, चलब, रूप, रङ्ग सँ हमरा निश्चय होइए जे तोहर वर थिकथुन्ह। केवल तोहर माइक डरें नहि बजै छी।

(सरलाक प्रस्थान)

अभिरानी—बेश तँ हमरा लोकनि जाइ छी।

सरस्वती—बेस चारि पाँचि दिन मे हमहुँ आएब।

(कादम्बरी अभिरानी गेली)

(सुन्दरक प्रवेश)

सुन्दर—हमहुँ आब झट दँऽ गाम जाएब। अहाँ काँ नीक बूझि पड़ै तँऽ हमरा संग चली से विचार थिक।

सरस्वती—हमरा कोनो अगुताइ नहि अछि। हमरा लोकनि तँऽ अहिंक भार छी।

सुन्दर—अहां माता तुल्य थिकहुँ। अहांक टहल मे जन्म भरि हम नहि अगुताएब।

(कुसुमी ओ सरलाक प्रवेश)

कुसमी—लोकक लेल कतहु वैसबाक ठाम नहि छऽले, भला अपना अपन मोटाक संग माछिओ नेने जाइत गेल।

सरला—तोहरा लाजो ने होइ छौ ?

कुसमी—पण्डित बाबू कें नीने ने होइ छलैन्हैं, कछमछ कँऽ प्रात कयलैन्हैं।

सुन्दर—घर तँ एकर कान काटू।

कुसमी—बाप रे बाप ! ! ! सून घर मे खाट तर नुका रहऽ जाइ छी।

सुन्दर—ई दुष्टि लण्ठिनी कहाँ सँऽ ऐ ठाम आइलि। हमहि एहि ठाम सँऽ जाइ छी।

(सुन्दरक प्रस्थान)

Scanned by CamScanner

कुसमी—इः ! पुरुषक लाजें कोनो कथी बाजब से ने होइए।

सरस्वती—की बजबें, आब पड़ँबो कैला ब्राह्मण।

कुसमी—(कान मे) सरोजिनीक माए बजै छलथीन्हँ जे पण्डित बाबू सरलाक वर थिकथिन्ह।

सरस्वती—हां हां ! ई की बजली ? (थोड़ेक काल चुप रहि) ओ कोना जनै छथिन्ह ?

कुसुमी—हमरा एतेक लट लगावऽ अबैए, अपना पण्डाइन सँ बुझि लेब। (पड़ाइलि)

सरला—गै दाइ ! की कहने छली जे खिसिऐलिही ?

सरस्वती—है अभागलि ! एखन ई कथा कोना कहिअहु ? बैद्यनाथक कृपा सँ निश्चय हो तखन ने।

(पण्डाइन ओ सरोजिनीक प्रवेश)

पण्डाइनि—बड़ीखन सँ देखने नहि छलहुँ तें अयलहुँ जे कोनो असौकर्य त ने होइए।

सरस्वती—अयलहुँ से बेश कयल, हमरा भेटक काजे छल। ई बतही दुनू ने एखन सुने।

सरोजिनी—हम सखीक संगे गीत गबै छी। (गबैछ)

(बटगमनी)

सफल जनम अब लेबिअ सजनि गे, देखिअ तुअ पहुक आज।
सकल मनक दुख मेटल सजनि गे, भेटल पहुक समाज ॥१॥
एक दिन शिव-पद सेवल सजनि गे, केवल एतबहि काज।
से प्रसन्न वर भाषल सजनि गे, राखल मोर कुल-लाज।
अब न कबहु पहु तेजब सजनि गे, भेजब कौनहु न काज।
जे किछु प्रियतम भाषिय सजनि गे, राखिअ सभ सिरताज ॥३॥
पहु-मुख हरषि निहारब सजनि गे, धारब पगु अन्दाज।
तुअ पहु सब गुन आगर सजनि गे, नागर पुरुष राज ॥४॥

पण्डाइनि—हा ! ई बतही तँ गीतहि मे सभटा कहि देलकैक। हमरा से अहाँ के कहैत डर लाज दुहू होइए।

Scanned by CamScanner

सरस्वती—डर लाज तंऽ कोनो योग्यता ने। जे कहबाक हो से जा ओ गाबऽ मे लागलि अछि ता कहू।

पण्डाइनि—अहांक समन्धिक जे संगे छलीहै से दुहू माइ धी सभ लच्छन सँऽ निश्चय कयने छलीहै जे पण्डित बाबू सरलाक वर थिकथिन्ह।

सरस्वती—एहन भाग हमर कहाँ जे जमाय कें देखब परन्तु वैद्यनाथ बड़ गोट थिकाह। से होथि तँ हम हुनका सोझां चलै छी से छाड़ि देऽक पड़त।

सरोजिनी—तोहरा लोकनिक गप्प पुरलौक की आओरी माउ ?

पण्डाइनि—सरला दाइ है ! पण्डित बाबू के वीयनि हौंकि दिऔनि गऽ तखन हमरहु लोकनि अबै छी कथा सुनय।

सरला—चलऽ है सखी !

(सभ जाइए)

(नेपथ्य में गीत)

(राग पीलू)

पड़ैए बूझि किछु ने ध्यानमे हम भेल पागल छी।
चलै छी ठाढ़ छी बैसल छी सूतल छी कि जागल छी ॥१॥
कहो क्यो किच्छु कतबो हम कोनो एक ठाम बैसल छी।
कतेको दूरि छौ तैओ अहाँ मनमे तँ पैसल छी ॥२॥
बुझा देमक तँ चाही कौखना अनजान कें कनिएँ।
जे ई अपराध छौ तोहर किए हमरा सँ रूसल छी ॥३॥
बड़ा सन्देह मे छी हम खुशी होइ छै परोसिनी कैं।
करै छी जे हँसी सब सँऽ अहाँ अत्यन्त चञ्चल छी ॥४॥
कहै छी प्राण हमरा तँऽ निबांहू प्रीति जा जीवी।
अहाँ निश्चिन्त छी तएँ की अहाँ बिनु हम तँ वेकल छी ॥५॥

(सरला ओ सरोजिनिक प्रवेश)

सरोजिनी—आइ तोहर विआह हैतहु।

सरला—है ! तों अलग्ने कथा बजैत रहै छह।

सरोजिनी—अलग्न कोन बजलहुँ ?

Scanned by CamScanner

सरला—कुमारिक ने विआह होइ।

सरोजिनी—हम विआह ओकरहि कहै छिऐक जखन वरसँ भेट होइक।

सरला—एकर एतय कोन सम्भव ?

सरोजिनी—हम हँसी केलिअहु है।

(पोथी नेने सुन्दरक प्रवेश)

सुन्दर—आइ बड़ गुमार छैक।

(सरोजनी बीअनि हौंकें छैन्ह)

सरोजिनी—है सखी ! तों बीअनि हँकहुन, हम दाइ लोकनिकें कथा सुनऽ ले बजा लावऽ जाइ छिऐक।

(सरलाक हाथमे पंखा दऽ कँ जाइए। सुन्दर नीचा मूह कैने पोथी देखै छथि। सरला बीअनि हौंकै छैन्ह।)

सरला—(मन मे) एहि पुरुष कें देखि हमर देह कपँए किए ? हे बैद्यनाथ ! ऐ तरहें दुःखिनीकें किए सतबै छहक ? ने एहि ठाम सँ जा होइए ने बैसने थीर रहि सकै छी। हमर आँखि एहि मुहचांद लै चकोर भेल अछि, (प्रकाश) हे बैद्यनाथ !

सुन्दर—हमरा बुझि पड़ैए जे अहांकें कोनो मन में पीड़ा अछि।

सरला—अहां कें कोना बूझि पड़ैए।

सुन्दर—अहांक बजबा सँऽ ओ मूहक चेष्टा सँऽ।

(सरला अश्रुपात पूर्वक आँखि मीड़ैत उठि जाइए)

(नेपथ्य मे गीत)

एको कथा ने हमरा अहां कान करै छी,
हम पैर पड़ै छी तँ अहां मान करै छी ॥१॥
बाजी तँ हम बताहि कहाबी विओग मे,
चुप चाप ताहि लेल तोहर ध्यान धरै छी ॥२॥
भूखो पियास गेल तोहर शपथ खाइ छी,
बैसलि फराक अपन दुःख गान करै छी ॥३॥
जीवन समर्पिह् णँय की देखी तँ अहां कें,
सन्ताप सहै छी कि सुधा पान करै छी ॥४॥

(पुनः सरलाक प्रवेश)
(बीअनि लऽक हौंकंए)

सरला—(मन मे) कादम्बरी बहिनिक कथा सँऽबा सरोजिनी सहजहि सभ तरहे कहिए देलक। दाइ, पण्डाइनि लोकनि वजै छलीहैऽ तखन गीतक बीच-बीचमे अपन ओ हिनक नाम सुनि आइ चित्तमे से दोसर किछु सोहइतहि ने अछि। (प्रकाश) अहां कैं एतेक अटकर अछि तँऽ हमरा कोंन बेगरता अहि सेहो बुझितहिं हैब।

सुन्दर—(मन मे) आब एकरा लोक कहि देलकैंक से सब चेष्टा सँऽ बूझि पड़ैए। (प्रकाश) आइ हमर चित्त नहि नींक अछि ओ भीतर किछु गर्म बूझि पड़ैए तएँ टहलबाक मन होइए। जाइत छी।

(सुन्दर जाइत छथि)
(सरोजिनी ओ कुसुमीक प्रवेश)

सरोजिनी—है सखी! पण्डित बाबू रूसि त ने गेलथुन, तोहरा बड़ उदास देखै छिअहुँ।

कुसुमी—नीक कैलैन्हि। बुढ़िया लोकनि एकट्ठा भै कँऽ बकबकं करवैत रहितैन्ह।

सरोजिनी—तों तँऽ किछु बूझतहि ने छें। सदिखन जेह ने सेह वजैत रहै छें। देख तं सखीक मुंह सुखा गेलैक।

(सरला आँखि झाँपि क बैसैत अछि)

(सरोजिनी गबैए)
(लगनी—नचारी)

विरह व्यथा अति आकुल रमनी रे,
सकल कलेवर केवल धमनी रे,
सहजहि पातरि लकलक हिय कर धकधक रे की ॥१॥

लय पुड़इनी-दल बिरचल सयने रे,
धनि कपोल कर पंकज धयने रे,
तदपि मदन जर छकछक लगइछ अकसक रे की ॥२॥

घसि चानस रस लेपिअ सजनी रे,
कोन परि युग सम खेपिअ रजनी रे,
किछु न चलइ अछि अकबक परिजन जकथक रे की ।।३।।

अरुन-कमल-दल कोमल रसना रे,
दाड़िम बीज विजय कर वसना रे,
मूक विकसित करु चकचक झलकय झकझक रे की ।।४।।

(चैत)

चढ़ल चइत ऋतुराज काज सभ बिगड़ल रे। (होर)
भय गेल अवधिक अन्त कन्त कत बिलमल रे ।।१।।

पड़लहुँ विरह अकेलि केलि सभ उसरल रे। (होर)
परिजन कुल-गुरु-गेह देह-सुधि बिसरल रे ।।२।।

अपनहुँ मन दुख देल कैल धन सञ्चित रे। (होर)
विनु परिचय पहु गेल भेल बड़ अञ्चित रे ।।३।

उठि उठि ताकल बाट खाट कर पटकल रे। (होर)
कथि लय विधि मोर प्राण आन दिस अटकल रे ।।४।।

चन्द-उदय एक ओर मोर चित चञ्चल रे। (होर)
दोसर सरस बसात कानभल अञ्चल रे ।।५।।

एकसर मधुकर-गुञ्ज कुञ्ज पुनि पिकरव रे। (होर)
सुनि हम विरह बताहि आहि अब कि करब रे ।।६।।

(सुन्दरक प्रवेश)

सुन्दर—आइ हम गाम जाइत छी। हिनका दूहू गोटाक सग महफा, कहार ओ दुइ गोट बेगार, एकटा स्त्री अवंश्य चाहिऐन्ह। कालिह सँऽ हमरा सोझाँ नहि अबैत छथि।

सरोजिनी—पण्डित भाइ! फेरि कहिआ घरि आएब? आइ सखिअहु के संग नेने अयबैक।

कुसुमी—माउगि संगे तँऽ हमही ने जाएब, थाकब तँऽ भार पर चढ़ि लेव। जँऽ भारी हेतैक तऽ एक दिशक मोटा माथपर क 'ल' लेबैक।

सरोजिनी—वेश, तों जयबे तँऽ फिरि कऽ झट दऽ कुशलो क्षेम कहबें।

कुसुमी—तँहूँ चलहऽ ने, कुशल क्षेम बूझि कऽ चल अबिहऽ।

सरला—तोहरा छाड़ि कऽ जाएब तँऽ हम जीब कोना ? हे सखी।

कुसुमी—हमरा चित्र लिखऽ अबैए ! लिखि क देबहु, तों सदच्छ न देखैत रहबहु।

सरोजिनी—इः ! हमरा बैसि कऽ तस्वीर बनबबैत बड़ लाज होइए।

कुसुमी—नहि बनबैबह तें हमरा की ? तोहरे सखी उदास होइथन।

सरला—सखीक सरूप लेऽ तँऽ थोड़ उपाय अछि, नहि बसैतीह तैओ हम लिखि लेब।

कुसुमी—से कोना ?

सरला—इजोड़िया रातिमे फुलबाड़ीमे बैसब, चन्द्रमा लिखब, ताहिमे हरिनी, एकटा सूगा, तिलकोड़ाक पाकल फड़, दुइ गोट सेवक फड़, विहुसल दाड़िमक बीआ, तकरा नीचा परबा, तकरा नीचा बेलक दुइ टा फड़, ताहिसँ नीचा सरोवर, ताहिमे सेमार रहितहि छैक, कनेक उपर कय देवैक, तखन सिंह।

कुसुमी—अगे दाइ गे दाइ ! ! ! हमरा डरक लेल दांती लगैए।

सरला—उपमा कहै छिऔ, डर कोन ? जो दोचित कऽ देलें।

कुसुमी—तखन ! तखन ! अहाहा ! बड़ कुठाम ओझरैलीह।

सरला—तखन केराक थम्ह, नव आमक दुइ गोट पल्लव, ओहि फुलवाड़ीमे एहन कोनो वस्तु नहि छैक जे देखि कऽ सखीक अङ्ग नहि बना सकी, बीच ठाम सरोवर जे कहलौ[1] ताहिमे सीढ़िऔ तीनिटा छैक, चम्पाक गाछमे माधवीलता माथ सँ पैर धरि नमरल छैक, आओर कते कहिऔ।

कुसुमी—फुलवाड़ी कथी लेऽ, ई तँ फोटो ग्रामक नानी थिकहु।

सुन्दर—तोहरा लोकनि लिखैं पढ़ैं जाह, हम कहारक उद्योगमे जाइ छी।

(सुन्दरक प्रस्थान)

सरोजिनी—तों आब जेंबे करबह ! ! ! ई हमरा नहि देखल जाइत। बरुक हम पहिनहि कतहु चल जाइ छी।

---

१. 'कहलिऔक' उचित।

कुसुमी—अन्तऽ कतऽ, चारि दिन सँऽ द्योर दरबज्जा पर बैसल छथिन।

(पण्डाइनिक प्रवेश)

पण्डाइनि—जीवथु निके रहथु दुनू जोड़ी, जाहि सँ हमरा जीवीका बढ़ै।

सरस्वती—सैह बैद्यनाथहु कें आइ कहलिऐन्हि अछि (सरलाक हाथ धऽ कँऽ) गै ! पण्डाइनि कें गोड़ लगहुन।

(पण्डाइनि कें सरला प्रणाम करैए ओ सरस्वती हाथमे किछु देबाक अभिनय करै छथि)

आब हमरा लोकनि गाम जाइ छी, महफा दरबाजा पर आएल, आशीर्वाद दिअऽ।

पण्डाइनि—अहाहा ! सरोजिनी सखीए सखी करैत गेलिए ?

(सरलाकें चुम्बा लऽ कँऽ)

अहां जनु कानी, फेरि भेंट हैत। सैह, पण्डितो काल्हिए जयताह। हुनक आचरण देखि कें कतेक लोक एतऽ नीक कहाबऽ लागल, बैद्यनाथ नीकें रखथुन्ह।

(सभक प्रस्थान)

(पर्दा खसल)

तृतीय अंक समाप्त

Scanned by CamScanner

चतुर्थ अंक

(दृश्य—तिरहुतिया भलेमानुसक घर)

(सरस्वती, सरला, कुसुमी ओ कादम्बरीक प्रवेश)

काम्बरी—दादा लोक सभ कें कहै छलथिन्हिं जे वैद्यनाथमे मिसर छलाहै से हम चिन्हा-परिचय परदेशक लेल नहि कैल। हुनके लिखल चिट्ठी फिरि कऽ गेल रहैन्ह, इएह चिट्ठी थीक—

स्वस्ति सकल तीर्थ-भूत-चरण सती शिरोमणि काँ प्रणाम-पुरःसर विज्ञप्ति जे सतत उद्विग्न रहै छलहुं परन्तु डेढ़ वर्ष पर राति स्वप्न भेल जाहि सँऽ विश्रब्ध भऽ आशा करैत छी जे शीघ्र कुशल भेटत। एतेक दिन पुरश्चरण भङ्गभिया अपन स्थिति विषय नहि लिखैत छलहुं। हम हरदत्त पण्डाक मकान श्री वैद्यनाथ मे छी। इति माघ-कृष्ण तृतीयायां चन्द्रे।

भवदीय कुशलताकाङ्क्षी।
सुन्दर शर्मा

गामक लोक बाजल जे बड़ हर्षक कहलह। ई चिट्ठी निश्चय सरस्वतीक आयल रहैन्ह। हमरा लोकनि सँऽ पूछि आपसक ठेकाना फेकन ज्यादा लिखि लेने रहए।

(कादम्बरी, कुसुमी ओ सरला धाड़ाजोड़ी मिलि कँ)

कादम्बरी—क ना छली है ? हमरा तँऽ ततेक उद्वेग लगं छले जे केओ बजै छले (तँ) किछु बुझितहि ने छलिऐकै। है ! अर्थ लै जी लागल छलहु है त से कहह जे अर्थ लगलहु ?

(सरला नीचा मूह करैए)

(सरस्वती कादम्बरी प्रणाम करैए, सरला जाइए)

सरस्वती—गै ! तोहरा बिन उदास लगै छऽलै। मधुकर भेटलाह। हर्षक कथा कहै छिऔक।

कादम्बरी—ऐ पिसिआ ऐ पिसिआ ! एं वैह छलाह ए पिसिआ ! !!

सरस्वती—दूर बताहि नहि तँऽ। अनका अनका कहलही हमरा कनेको ने बुझा देलैं, कतेक जमाइक सोझाँ चललहुँ वजलहुँ।

कादम्बरी—ऐ ! तँ की हैत ? कहू त आब कतऽ छाड़लिऐन्हि।

सरस्वती—पहिने तँ कहलैन्हि जे संगहि चलब, फेरि हमरा लोकनि कँ चहु-पाला क कँऽ विदा कऽ देलैन्हि। बजलाह जे हुनका गाम संगहि पहुँचब।

कुसुमी—सोमहि दिनुका दिन रहैन्ह, अपना गाम मंगलहि दिन पहुँचऽ दऽ कहैत रहैथि।

कादम्बरी—आइ रेल पर आएल हैताह। जाइ छिऐ दाइ लोकनि कैं कहऽ।

(सभ जाइए)

(नेपथ्यमे गीत परिछनि)

नगरी-नारी चललि परिछय पुरुष लक्षन रूप रे।
थिर करथि हिय अजिर-चत्वर उपयमन-मख यूप रे॥१॥
कतय दधि कहँ दूबि अक्षत कतय डाला सूप रे।
आन गूवा पान क्यो कर धरय महमह धूप रे॥२॥
ललित कोमल अङ्गुलीं नख शुचि रुचिरता ऊप रे।
जपा-कलिका पर तुषार कणा कतहु जनु चूप रे॥३॥
चरन अभिनव कमल-कोरक युगल गुल्फ अनूप रे।
तनु वसन परिधान जानब जानु जस अनुरूप रे॥४॥
कलित बलि वीनाह अति गम्भीर नाभी कूप रे।
बाहु-युग पुनि कुसुम भरनत सिरिस विंटप सरूप रे॥५॥
नासिका-दुहु भाग आयत दृग कपोल अपुप रे।
विजय हित जनु ध्वजा पूजथि मीन केतन भूप रे॥६॥

(गीत)

(तिरहुत)

छमिय नाथ अवगुन एक बेरि।
सपनहुँ मान करब नहि फेरि॥१॥
जौं जनितहुँ पहु एतेक देरि।
पगु धय हठ करि रखितहुँ धरि॥२॥

Scanned by CamScanner

मों ःम तोहि मिलत जग ढेरि।
मोहि एक तोंह कहिअ हम टेरि ॥३॥
बौकि बताहि बहिरि लुल्हि डेरि।
नाथ अपन पुनि तेजिअ न चेरि ॥४॥
मानस कुमुद विकासिअ हेरि।
चन्द्र-वदन जनि करिअ अन्हेरि ॥५॥

(सुन्दर ओ कादम्बरीक प्रवेश)
(पदोक आड़मे सरस्वती प्रभृति)

कादम्बरी— इः जखन सऽ सुनलैं, जी लागल छलैं। गामक पुवारिऐ कातक बाट तकैं छलीहैं। दूरहि सँ जैखन एक घोड़ा देखि पड़ल तैखन बूझल जे मधुकरे थिकाह।

कुसुमी—अहाँ तँऽ औतहि सँऽ छिनारि छी।

कादम्बरी—हैं ! ऐ ! ऐ !

कुसुमी—आहि, हम की कहलैंए ! अहाँ कें चिन्है नहि छथि ? हमरा एको आखर लटपटाओ तँऽ लाल पीयरि होइ छथि।

सरस्वती—गै ! कने पाएर धो दहुन, पुछहुन जे निकैं छलाहै ?

कादम्बरी—(पाएर धोएबाक अभियान करैए) की पुछैए लोक ? बाजि ने होइए ?

अभिरानी—गै ! बतही ! कने सुस्ताय दहुन तखन हँसी करिहौनि, एही लंगो चंगोक डरें तँऽ अबै ने छलाहै।

सुन्दर—(मुस्ते सों) अहाँ लोकनि बाजू, हम एको रती नहि थाकल छी, नहि विश्वास हो तँ परीक्षा लय लिअऽ, हुनका लोकनि तँऽ केवल मात्सर्य कहै छथि। गाम भरिक लोक एकट्ठा भेल अछि। सभके हम चिन्है नहि छिऐक। यथा योग्य कुशल सभकें पुछिऔक।

अभिरानी—एहि लोक सभकें कोन ? हुनका लोकनि निकें रहथि जाहि सँऽ सभ कें खूसी। आब ई लोक देखलक, मन जुड़यलैंक। राति बड़ बीतल आब सुतथु।

(सुन्दर कें छाड़ि सभक प्रस्थान)

Scanned by CamScanner

(सरलाक प्रवेश)

(सरला नीचा मुँह कैने भयाभिनयकरैए,
सुन्दर हाथ धरैं छथिन्ह)

(पर्दा खसैए)

(नेपथ्य मे कवित्त)

(घनाक्षरी)

सखी काँ सरापै वा हुंकरि डर कण्ठ कापैं,
किंवा मन्त्र जापै पूजि मन्मथ अमर कैं।
आवि पछतावै किंवा दुखित विलापै दुःख,
अथवा गुञ्जावै मुख-कञ्जमे भ्रमर कें।
वसन सों अङ्ग वा अनङ्ग विकार झाँपै,
छीनता देखावै हेतु नापै वा कमर कैं।
ऊँच कुच दापैं किंवा कवच परिधापैं कुश,
देहु काँ निवाहै हेतु सुरत समर कें ॥१॥

(गीत)

(राग वसन्त)

पहु एहन उचित एखन न नीक ॥
अपना हित हेतु करू धृति सभीक ॥१॥

करि हास कहति सभ सखि अधीक ।
उपहास दिवस भरि थिक अलीक ॥२॥

मृदु दीन वचन सुनि सुन्दरीक ।
प्रति वचन देथु प्रीतम अभीक ॥३॥

देखि मृदुल कान्ति अति मञ्जरीक ।
मधु लुबुध गुञ्जथि वहु चञ्चरीक ॥४॥

अवसर बसन्त खन यामिनीक ।
कूजय कुहूक मद मत्त पीक ॥५॥

तजि भीत हरिअ हठ मानहीक ।
अछि उचित समय संशय कथीक ॥६॥

Scanned by CamScanner

(पुन: करुणा-स्वर सँऽ)

(गजल)

आइ भरि मानि लिअऽ नाथ न हट जोर करू।
देहरी ठाढ़ि सखी हो न एखन कोर करू ॥१॥

हाय रे दैव ! इ ककरासँ कहू क्यो न सुनै।
सैह खिसिआइए जकरा कनेको सोर करू ॥२॥

लाथ मानै न क्यो सभ लोक करैए हँसी
बाजऽ भुकऽले जँ कनक जकर सोझ ओठ करू ॥३॥

आइ एखन न धनी एक कहल मोर करू।
आन संगोर करू एहि ठाम भोर करू ॥४॥

(विहाग)

सखि हे एतेक वचन लिअ राखि,
गुन-आगर नागर सुन्दर संग सफल जनम करू भाखि।
रूप उजागर शीलक सागर तेंहि न तजिअ अव धाखि ॥ ॥

अधर-उपर नासा उन्नत दुहू- भाग सुआयत आँखि।
से जनु पक्व बिम्ब रस पीवत शुक पसारि निज पाँखि ॥२॥

देखि वदन विधु एहन ० जग जे न होएत अभिलाखि।
समय सरस परिनत रसाल सन मानि ताहि लिअ चाखि ॥३॥

हम सहचरी कुशल तुअ चाही प्रीतम हिय रूचि राखि।
तुअ सुख निज मानिअ सत जानिअ रजनि रखै छिअ साखि ॥४॥

(गीत)

(होरी)

भाल-बिच रोरी हो, फागुन होरी बाल ॥ध्रुव॥
विग्रह करथि परस्पर दुइ नृप, जौं राखथि सभ काल।
दम्पति तनु धरनी लहि झगड़थि, दुहु मनोज नरपाल ॥१॥
सुन्दरि उझकि एक दिश लेपय, लय अबीर पिय-गाल।
प्रियतम दुहु कर सुख भरि तावत, मलथि उरोज गुलाल ॥२॥

Scanned by CamScanner

नाह-करज काज खन तीख न, जनु मनसिज करवाल।
कोन परि दोसर मनसिज बचितय, जौं न होइत कुच ढाल ।।३।।
आकुल वेश केश पुनि फूजल, मुरझल उर जयमाल।
अपन चञ्चल सरसल[1] अञ्चल, विथुरल कञ्चुक जाल ।।४।।

(कुसुमी स्वरमे)
(तिरहुति)

मोर सखि अति सुकुमारी। ऐखन वड़ि अछि बारी, समलिया ।।
किछु दिन रहिअ सम्हारी। जे किछु करिअ बिचारी, समलिया ।।
ई थिकि परम दुलारी। जानय किछु ने बेचारी, समलिया ।।
हमर कथा जनु टारी। हम ने थिकहुँ अपकारी, समलिया ।।
दिन दश रहथु अनारी। पुनि श्रम लेतिह सकार, समलिया ।।

(विहाग)

मधुकर बहुत करिअ जनि लौलि।
अपन धरोहर क्यो न उठावत लव बरक पुनि तौलि।।१।।
अतिशय विलम सरोवर उपजलि वड़ि कोमलि सहलौलि[2]।
ताहि यथा गदमत्त मतङ्गज दूरि करिअ जनि औलि ।।२।।
दिन दश हठ करती पुनि धरती रतिपति शासन मौलि।
अंकम-भरि पहु कण्ठ लगौतिह मेटते हिरदय खौलि ।।३।।
पहिल रजनि थिक पहुक समागम कुमुदिनि परम सुडोलि।
चन्द्रवदन मृदु करसों परसिअ कहिओ जाय न मौलि ।।४।।

(रथोद्धता)

देख देख खिन्न चक्रवाकिनी भोर रातिहिं नदीक पार सों।
आवि कै अहह चक्रवाकके पाँखि छुबि जगवैछ चंचु सों ।।१।।
कादम्बरी—कालिह जाइ छलि जे पड़ा पड़ा आँखि मूनि अछि ठाढ़ि से मृगी।
सींग सों कुड़िआवैत कण्ठमे हर्षमग्न मृग छै समीपमे ।।२।।

---

१. 'सरला' होयबाक चाही।
२. मुद्रित पाठ 'सहसौलि' अछि।

Scanned by CamScanner

(तिरहुति)

बहुत दिवस छल मोर मन लोभा।
आज नयन भरि देखल शोभा ॥१॥

मदनराज पाओल निज घरनी।
के लखि सक विधि-अद्भुत करनी ॥२॥

कर धय पहु बैसाओल शय्या।
हिय काँपल झाँपल तन-लज्जा ॥३॥

अँकम भरि पहु लेल समीपे।
धनि मन जतन मिझाबिय दीपे ॥४॥

युग संयुग याम व्यतीते।
कहुँ क्यो हार कतहु क्यो जीते ॥५॥

कतहु बेआपल आलस नयने।
पियतम निज भुज भरि भनि धयने ॥६॥

उठलि चेहाय देखि धनि सपना।
आन रमनि रत भेल पहु अपना ॥७॥

भन 'जीवन' कवि तखनुक मली।
बिसरल दुख परसल पुनि केली ॥८॥

सुन्दर—(सरलाक दिश देखि) एखन गाम मे बहुत काज अछि। जँ मानी तँ कालिह जाइ।

सरला—पुरुषक हृदय विधाता कथी सँ सिरजलथिन से ने जानि। एतेक दिन पर चिह्लार तौखन बझ्ने सन कथा। विदेशमे रहैए तकरा दशो दिन त ने एक ठाम रहि होइ छै। हमरा तँऽ दुइ तीन दिन सँ बूझि पड़ैए जे एहि लोकक मन फेरि अन्तऽ गेलैक।

(गीत)

उद्वेग की रहैछ न जानी जे आइ कालिह।
सन्देह एक टा जे अहाँ चल न जाइ कालिह ॥१॥

हमरा सोहाय किछु ने हिनक वियोगमे।
सप्पत खुआ लिअऽ जँ तखन पान खाइ कालिह ॥२॥

दूबर शरीर सो त बिदा प्राण होइए।
जेखन अहाँ पुछैछि जे मानी तं जाइ कालिह ॥३॥

हमरा जे एहि बेर एही ठाम छाड़ि देब।
जोरावरी सँ देव अपन जी बिदाइ कालिह ॥४॥

राखै जे लाथ कै क अहाँ काँ दुइ चारि दिन।
तकरा बना बना क खुआबी मिठाइ कालिह ॥५॥

सुन्दर—एकर एको रत्ती सन्देह जनु राखी। अहाँ संऽ फराक एको दण्ड हम नहि रहि सकै छी परन्तु यावत् माय छथि तावत् हुनका देखैत रहिऐन्हि से दुहू गोटाक धर्म थीक।

सरला—और नहि किछु, जे फेरि ओएह बरहमासा सब ने गाबक पड़ै।

सुन्दर—कोना कोना ! अहांक गीत तं होइए जे सतत काल सुनितहि रही।

सरला—छओ मासक प्रात जखन लोक बाजै जे आब नहि ओथीन तखन सँऽ कादम्बरी बहिनक संग इएह गीत सभ गबै छलहुँ।

(गीत)

(बरहमासा)

तृषित चातक एक स्वातिक बुन्द पातक आस रे।
पहु विदेश कलेश काटल भरि वरष निशि वास रे।
कातिक दीपक जगमगऽ।
विधिवश पहु मोर नहि लगऽ॥१॥

सुन। सेज विहुन प्रीतम कोन विधि रहु कामिनी।
विरहि-जन काँ परम दुःसह मास अगहन यामिनी।
अगहन प्रियतम बिछुड़लऽ।
बड़ कुठाम पगु पिछड़लऽ ॥२॥

रहिए एकसरि सहिअ कोन परि दुःख पूस विभावरी।
कन्त बिनु अन्त पाबिअ भेल कल्प बराबरी।
बारंबार जगबितहुँ।
पहु-भुज कण्ठ लगबितहुँ ॥३॥

Scanned by CamScanner

विरह दिवस अकेलि रहु केहि भेलि-विवश तपस्विनी ।
बाघ सम डर लाग अतिशय देखि माघ-तपस्विनी ।
तप निशि लागय युग समऽ ।
पास ने आयल प्रियतमऽ ॥४॥

विरहमे न अबीर अबरख रहसि पढ़िअ न होलिका ।
मास फागुन सरस लागु न प्रियतम विनु तन चोलिका ।
होरी सुनि सुनि फागुनऽ ।
बाढ़ विरह-दुख दो गुनऽ ॥५॥

एक सहजहि चैत दुःसह मास दोसर चन्द्रमा ।
उदित गगन वियोग-अन-दुखदायि लागय रवि समा ।
रवि सम लागु सुधा-निधि ।
पहु विनु वाम मोर विधि ॥६॥

मास माधव शयन साधव लाय सुमन सुमल्लिका ।
विरह व्याकुलि खिन्न पहु-विनु सतत युवति मतल्लिका ।
दखिन पवन वहू सनसन ।
पहु विनु लागय छनछन ॥७॥

कुसुम-सज्जित कयल शय्या वेसि निरखिअ वीथिनी ।
जेठ मास न कन्त आयल अधिक दुखद निशीथिनी ।
निशि किमि काटब हरिहरि ।
तप-ऋतु पहु गेल परिहरि ॥८॥

करिय कोन उपाय हम अब रहिय केहि अवलम्बिनी ।
चढ़ल मास अषाढ़ मन्थन बाढ़ लखि कादम्बिनी ।
बिनु अवलम्ब वितल निशि ।
पहु मोर रहल कोन दिशि ॥९॥

मास सावन अति भयावन जलद दमकय दामिनी ।
नाथ बिनु हम हाथ पर धय माथ खेपल यामिनि ।
यामिनी एहि विधि खेपल ।
उर-बिच चानन लेपल ॥१०॥

Scanned by CamScanner

गगन जलधर गरज बरिसय उमगि चलल तरङ्गिनी।
मास भादव दूरि यादव युवति दुर्बल-अङ्गिनी।

मदन-तरङ्ग बेयापय।
थर थर तन मोर कापय ॥११

मास आसिन धनि सुवासिनि विपिन कुसुमित मालती।
पिय न आयल तखन कोन परि अपन पतिव्रत पालती।

अवधि वरष दुख बीतल।
आवि करिअ हिअ शीतल ॥१२॥

(एजन)

रुचिर मास अषाढ़ जल शुचि परम गाढ़ वियोगमे।
देखि जलधर पटल नूतन अधिक सुख सम्भोगमे॥

सुख सम्भोग पास पति।
राख अषाढ़ मास पति ॥१॥

मास सावन दयित भावन सरित सागर गामिनी।
जलद मय नभ देखि मानव दिवस बूझय यामिनी॥

दिवसहु यामिनि बूझल।
धन तन नहि किछु सूझल ॥२॥

चढ़ल भादव मास यादव विलमि रहल विदेशमे।
नयन काजर मलिन आँचर जटा पड़ि गेल केशमे॥

भादव संकुल कादव।
कोन विधि आओत यादव ॥३॥

मास आसिन विमल पुष्कर उदित दिनकर चन्द हो।
कमलिनी सुख दिवसमे निशि कुमुदिनी आनन्द हो॥

आसिन दुसह सदागति।
निश दिन विरहिनि जागति ॥४॥

चढ़ल बहुल हुलास पहु लय चढ़ल बाहुल मास रे।
हृदय मनसिज शर प्रहारथि देखि पहु नहि पास रे॥

प्रतिखन उज्ज्वल कातिकऽ।
बढ़ उत्सव सुखरातिकऽ ॥५॥

ताप बीतल भुवन शीतल शालि संकुल मेदिनी।
जागि अगहन राति बिन तिय सुरत राग निवेदिनी॥
सतत बढ़य सुख सम्पति।
घर घर हर्षित जम्पति ॥६॥

पूस मासक यामिनी बड़ पैघ वासर फूसि रे।
करथि पहु अपराध पुनि पुनि रहथि रमनी रूसि रे॥
विविध सुरत श्रम सहि सहि।
करथि मान धनि रहि रहि ॥७॥

माघ देखिय दिवस लाघव पैघ पुष्कल यामिनी।
ससत पति संयोग चाहथि रति निबाहथि कामिनी॥
तखन शिशिर सुख शिव शिव।
पहु समाज रात्रिदिव ॥८॥

नीक लागु मास फागुन सगुन देखथि लय खड़ी।
एक बीतल अवधि दोसर कोन दिन पुनि शुभ घड़ी॥
शुभ दिन सुमुखि बिचारथि।
खन खन काग उचारथि ॥९॥

चढ़ल अब मधुमास प्रीतम पास अछि नहि सहचरी।
पुष्फ समय बितैछ करह विचार अब हम की करी॥
पिय आगमन बिचारह।
मम दुख दुसह निवारह ॥१०॥

आस छल पिय अवश आओत अबहुँ अवधिक अन्त हो
नयन जल सँ तीति अञ्चल बीति गेल वसन्त हो॥
दृगजल अञ्चल तीतल।
तदपि न हिय तल शीतल ॥११॥

चढ़ल ग्रीषम विषम देखि हारल हिय तिया।
सखी सब सन्तोष देथि अवश्य [आवत अब पिया॥

Scanned by CamScanner

आबत पिय तुअ सम्मुख।
कखनहुँ दुख कखनहुँ सुख ।।१२।।[1]

सुन्दर—धैनोऽरण्यै हविषि हुतभुक् शीतकृतो किञ्च मुग्धे
विप्रानाम्नाये घटय रसनां सत्कवित्वे यथाऽहम् ।
आद्याद्येषोऽङ्गवदवनी बाहुदण्ड मनीषा
सूत्रस्यतां वहति प्रभुनारायणः काशिराज ।।१।।

(यवनिका क्षेप)

(चतुर्थोऽङ्कः)

इति सुन्दर संयोग नामक नाटक समाप्त ।

---

१. प्रथम दुई संस्करणमे ई बरहमासा नहि छल। तेसर संस्करणमे ई सम्मिलित कयल गेल। एकर सूचना तेसर संस्करणक भूमिकामे पं० लक्ष्मण झा देने छथि।

'सुन्दर संयोगक ई तृतीय संस्करण थिक। एहि संस्करणमे ग्रन्थकारक हस्तलिखित बरहमासा उपलब्ध भेल से तथा ग्रन्थकारक भंशावली सेहो गेल अछि।'

नर्मदा-सागर

(सटीक)

Scanned by CamScanner

नर्मदा-सागर

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

जागर—नायक ।

सरोज—सागरक मित्र ।

शिशिर—सागरक मित्र ।

सुन्दर—मरलाक पिता ।

मोदन—सुन्दरक ग्रामीण ।

त्रिविक्रम ठाकुर—सरलाक पाणिग्रहणक आकांक्षी ।

विद्यार्थी—सागरक शिष्य ।

घटक

स्त्री पात्र

नर्मदा—नायिका ।

सरला—नर्मदाक माय ।

कात्यायनी—नर्मदाक माउसि ।

कौमुदी
कुन्दमाला } नर्मदाक सखी

नर्मदा-सागर

नान्दी गीत

(महेशबानी)

जय हर शङ्कर शिब गङ्गाधर।
गौरी बदन कमल मधुकर ॥ध्रु०॥

तोरहरि पदक भरोसें दुःकर काजक हम बान्हल परिकर।
एहि भव कानन भुतिअयलहुँ दया दृष्टि देह सेवक पर॥
पँच छोट गुरु लघु स्थिर जङ्गम बसइछ सभ तुअ अभ्यन्तर।
ब्रह्मा विष्णु गणेश शारदा स्वर्ग रसातल नहि बाहर॥
क्षिति जल पावक मरुत गगन यजमान यामिनी-पति दिनकर।
शर्वादिक नामहिं सौं व्यवहृत सगुण रूप देखिअ तोहर॥
कोन विधि जानि सकीय ई महीमा दशो दिशा जकरे अम्बर।
हाथ अभयवर परशु हरिणवर माथ देव-सरिता हिमकर॥
मन वच कर्म शरण तोंहीं हर जनिय नहिं परिचय अनकर।
मिथिला देश निवासी जीवन केवल करुणा पर निर्भर॥
जय सिंहेश्वर शिलानाथ जय चण्डेश्वर जय कपिलेश्वर।

नान्दीक उपरान्त—

सूत्रधार—आइ हमर अहोभाग्य जे मैथिल विद्वजन समितिकाँ यज्वालय जीवन-शर्म विरचित नर्मदासागर नाम सट्टकक अभिनय हमरे प्रयोगे देखबाक इच्छा भेलन्हि अछि से यद्यपि हमर शिखाओल शैलूष सभ उद्यते अछि तथापि हमहुँ सावधान रही से उचित (नेपथ्य दिस देखि एक व्यक्ति काँ) एह्मर तँ आबह।

(आबि कँ)

विदूषक—औ नायक ! हमरा पढ़यबा काल जहाँ कटकटैतहिं रहै छी तैयो काज पड़लें हमही दौड़ि कँ अयलौं हें।

सूत्र—हौ शिशिर ! बेर पर तँ अयलाह जौं ई कहि सकह जे कौन समाँग के अयलकै।

Scanned by CamScanner

विदू—ओ जी ! से आब केत्र ने चिन्हलाँ जाइए, घटकटा ओहनाक ओहने छथि ।

सूत्र—हो शिशिर ! यावत् ओ सभ अबैऐ ता एकटा गीत मधुर स्वरे॑ गाबह ।

विदू—एही लय हम कहैत रहै छी जे लड्डू देल करू । अम्मत दही खा कँऽ मधुर स्वरे॑ हम कोन गाउ ?

सूत्र—आब तोहरहि अधिक लड्डू देबहु ।

विदू—आः ! तखन की थिक ।

गीत दीपक राग

केव नथबै अछि नाक पूड़ा ॥ध्रु० ॥
फकरहु केव आगाँ बैसोले॑ थकड़ि बन्है अछि जूड़ा ।
झट झट गट गट घटक गिड़ै छथि राब दही साँग-चूड़ा ॥

सूत्र—हाँ हाँ ! चुप रहह ! पण्डितक सभा मे॑ दही चूड़ाक गीत क' उठोलह ?

विदू—ओ नायक ! एक आखर अवर गायब दी तँ बिन लेसलहिँ दीप बरि जाय ।

सूत्र—(आत्मगत) गबैए तेहने । (प्रकाश) हो शिशिर ! सभामे॑ खएबाक चर्चा नहिँ करिए । कतेक गीत सिखौले॑ छिअहु से गाबह ।

विदू—हमरा भूख लगैए तखन खएबे मन पड़ैए ।

(फेरि गबैए)

दुइ एक बेरि पानि दै मलि मलि कात पसौलन्हि गूड़ा ।
घड़ि एक बिछलन्हि पुनि अगुतैला सह सह करइछ सूड़ा ॥

सूत्र—हो शिशिर ! हटले॑ आवर बताह भ जाइ छह ।

विदू—ओ नायक ! ई फराठी लेब ?

नेपथ्य—ओ नेना छल केहन उकाठी ।
उचकि पढ़ायल हमर फराठी ॥

विदू—ओ नायक ! फराठी लेब तँ लिय ने तो॑ घटक छिनिए लेताह ।

सूत्र—घटकक फराठी चोरा लेलहुन्हि॑ ? हा ! ! ! एहना ठाम हम ने रहबे।

विदू—सेह हमरो विचार ।

(दुनु गेल)

प्रस्तावना

(तलमलाइत आबि कय)

घटक—

ओ नेना छल केहुन उकाठी ।
उचकि पड़ायल हमर फराठी ।।
बीतल वयस वर्ष थिक साठी ।
पैर न सोझ पड़य बिन लाठी ।।
जौं जनितहुँ एहि गामक ढाठी ।
तौं (न)[1] आबि भसिअइतहुँ भाठी ।।
हाय बनावत मिलि सहपाठी ।
हमर फराठी जारन काठी ।।

(विद्यार्थी प्रवेश कय)

विद्यार्थी— औ यहीं घटक थिकहुँ ?

घटक—

हमरा बिन कहले उपराग ।
चीन्हल वटुक सैह बड़ भाग ।।

विद्यार्थी—

जैखन देखल लटपट पाग ।
धोती तौनी नोसिक दाग ।।
कयलक लोक गाम घर त्याग ।
हमरा हृदय भेल अनुराग ।।
बैसू आउ नहाउ तड़ाग ।
जुरै से खाउ कन्द वा साग ।।

घटक—औ बटुक ! हम भोजन कयलें छी, केवल 'सागर बाबू' सँ भेंट करक आयल छलहुँ से सुनै छी जे एखन धरि विद्यार्थीए पढ़बै छथि ।

विद्यार्थी—औ घटक ! ओहि ठाम चलबा क्षति की ?

घटक—औ बटुक ! लोक कें पढ़ैत वा पढ़बैत देखि कय हमरा प्रभाक्षय होइए ।

---

१. मूल में 'न' क अभाव ।

विद्यार्थी—औ घटक ! अहाँक पढ़ल किछु ने थिके

घटक—हां ! हां ! औ वटुक ! से किए पुछै छी ?

गुरु अहाँक पढ़ा जनम भरि निज दुखावथु घाड़ ।
हम चिन्है छी गाम गामक व्यक्ति व्यक्ति हाड़ ॥
अखिल मैथिल बंश पञ्जी लिखि धरथु पजियाड़ ।
हाथ हमरा कुञ्जिका अछि जते भवन केवाड़ ॥
हमहिं झाँपिय दोष गुण पुनि हमहिं करिय उघाड़ ।
वचन हमर प्रमाण पूछिय ऊँच नीच बिचाड़ ॥
एहन मैथिल वंश जनमी सुत न सोर उपाड़ ।
करय जे स्वच्छन्द परिणय घटक दृष्टिक आड़ ॥

(आबि कय)

सरोज—कतय छी ? औ घटक ? कतेक कठिने अहाँक फराठी हम उपर कयलय ।

घटक—औ बलाँ ! वड़ उपकार कयल, कतेक ठाम जयत्राक अछि । एखन हम जाइ छी, आव कोनो अनध्यायमे आयब तखन विवक्षित कथा कहब ।

सरोज—औ घटक एकटा त ने सुनलें हयबे ।

घटक—कोन कथा ?

सरोज—दैवी घटना ।

पावन पावि कार्तिकी पर्व । कमला पहुँचल सुकृति सर्व ॥
देवनगर वासी नर नारि । आइलि सङ्ग एक सुकुमारि ॥
अनुपम कान्ति नर्मदा नाम । शील स्वभाव शरीर ललाम ॥
अवला जनक अचेत संगोड़ । सहजहि कमला धारक तोड़ ॥
मज्जन हेतु पइसलिह पानि । डुबइत ककरहु पड़ल न जानि ॥
गेलि वराकी वड़ि वड़ दूरि । ता छन सागर ताकल धूरि ॥
साहस कय अति सत्वर जाय । अवश उबाड़ल पीठी चढ़ाय ॥
स्त्रीजन द्वारा कय सम्मान । डेरा पूछि लगाय ठेकान ॥

आनल जतय हुनक सभ लोक। आकुल परम करै छल शोक ।।
कन्या पावल जनमी तात। यहि चर्चामे कयल परात ।।
जौं कन्याकां विधि अनुकुल। जौं पुनि हुनक यथोचित मूल ।।
अथवा करथि वचन स्वीकार। जौं (हो)[1]सदृश लोक व्यवहार ।।
तौं नर्मदा उपर जे कैल। से वर निश्चय मन हम धैल ।।
आबि ओतयसौं पण्डितराज। सागर जननी भगिनि समाज ।।
पुछलहुँ नहि बाजथिभरि राति। केवल कहलन्हि ब्राह्मण जाति ।।
सुनि सबहिक मन भेल उछाह। वर सम कन्या दिव्य विवाह ।।
सागर परिजन पहुँचल अत्र। देवनगरसौं आयल पत्र ।।

घटक—(स्वगत) पत्रो पठा चुकल। (प्रकाश) कहू कहू, ओहि चीठीमे की छलैक !

सरोज—सुनू, से कहितहि तँ अबै छी।

स्वस्ति श्रीयुत पण्डितवर्य। जनु पढ़ि पत्र करब आश्चर्य ।।
जौं निज मन मानिय नहिंरोष। जौं निज, बान्धव देथि न दोष ।।
जौं निज हितकां पड़य विचार। जौं पुनि कहथि घटक पजियाड़ ।।

घटक—ओ जी ! एहना ठाम घटक जे हयत से लगले कोना विचार देत ? पजियाड़के जे इच्छा होइन्ह से बूझि लै जाउ।

सरोज—तौं हमरा सबहिक अभिलाष। धर्मक विषय करिय नहि बाप।
पत्र लिखल अछि निश्चय मानि। आबि वरिय मम कन्या-पानि ।।
पूर करब एतबा सङ्कल्प। पण्डित बूझि लिखल अछि अल्प ।।

घटक--ओ बलां ! ई तँ बूझल परञ्च ओहांलोकनिके स्वीकार भेल वा नहिँ से तँ कहू।

सरोज

ई कहि सागर भेला मौन। क्यौ एहि पत्रक उत्तर दौन ।।
एते कथा परसल भरि गाम। कतय न सुन्दर मिश्रक नाम ।।
सभठां गोटे बसै अछि दुष्ट। आबि सभा बाजल से रुष्ट ।।

---

[1]. छन्दक अनुरोधें दुइ मात्रा अपेक्षित छल।

घटक—

से के तनिक नाम तँ कहू। अब हम बूझल सभ चुप रहू॥
सागर कहथि निरन्तर मित्र। जकरा तकर हृदय अपवित्र॥
करब तथापि सकल उद्योग। आगाँ जेहन हयत संयोग॥
एहिमे पड़त अधिक व्यय कौड़ि। से हमही निपटायब दौड़ि॥
(स्वगत) मुँगवा लड़य तँ बुनिया झड़ै। (प्रकाश)-तखन सागर बाबूक भेटक हमरा आइ कोनो काज ने परन्तु जहाँ हमरा परिश्रमक साक्षी रहब।

सरोज—हँऽ हँऽ अहाँक श्रम त सुफल होओ[1], हम साक्षिए छी।

विद्यार्थी—घटक मन देताह, ई काज हैत; केवल "श्रेयांसि बहुविघ्नानि" जे सुनैत छी से सत्ते।

(सभक प्रस्थान)

इति विष्कम्भक।

[दृश्य, कान्तारक मध्य (बीच वन) में गाछ तर ठाढ़ि कौमुदी, नर्मदा ओ कुन्दमाला]

कौमुदी—हय सखी ! आब तँ लोको सब पछुआ गेल, तखन एहना पाँतर मे लाजे ककर ? एकटा बटगमनी गाबह।

कुन्दमाला—हँ हय बहिनि ! तोरा मुहक गीत सुनलाँ बहुत दिन भेल।

नर्मदा—हय ! ता तोहरहि लोकनि गाबह, एखन हमरा एकोटा गीत मन ने पड़ैये।

कौमुदी—हय सखी ! तोरा कहलैं हम गबै छी। जे कतहु अलट-विलट होयै तँ कहि कहि दिहह।

खञ्जन गञ्जन लोचन सजनी रोचन बिन्दु ललाटे।
करति के भाविनि दोसरि स० ती-सरि सुषमा हाटे॥

---

१. 'होअय' उचित होइत।

Scanned by CamScanner

तनु-परिमल भरि कानन स० चानन सौरभ-पाटे ।
चिकुर निकरि जेहि अन्वग सल पन्नग रुचि उदघाटे ।
चरन-सरोज दुहू पर स० नूपुर-मिष रस चाटे ।
उर संशय बड़ हमरा स० भमरा कतहु न काटे ॥
प्रतिपद नीचहिँ ताकब स० थाकब कतवो वाटे ।
अतिशय मृदुल चरन-तल स० वन-थल कुश-दल काँटे ॥

कुन्दमाला—हय सङ्गी ! तोँ बहिनिक[1] बाहर मनक गीत गौंतऽ है, आब हम भीतरक बात खोलि दै छियहु ।

तिरहुति ।

किय ? सखि ! रहय वहुत खन. हे मन योहर उदासे ।
नयन कमल-युग जल वहु, हे रहि घरिय निसासे ॥
शङ्कित मानस अनु दिन, हे बिन हेतु तरासे ।
मलिन वसन कच रुख-सुख, हे मुख तेजल हासे ॥
छाड़ल सकल हहरि हिय, हे किय विषय विलासे ।
करतल निहित सतत मुख, हे सुख जिय न हुलासे ॥
कीं तोँह कहु ! मृगलोचनि, हे बन्हि प्रेमक फाँसे ।
सहचरि जनहुँ न जानिय, हे मानिय उदबासे ॥

नर्मदा—हय सखी ! हमरा गबैत लाज होइए ।

कुन्दमाला—हय ! गीत तँ लोक पँघहुक सोझां गवितहिँ ने अछि, तखन हमरा लोकनिक कोन लाज ?

नर्मदा—की करू ? नहिँ मानबह तँ गबै छी (गबैए)

तिरहुति ।

पड़लहु बिरह-पयोधि अथाहे,
भवन भौर मन धैरज कच्छप मनसिज मकर गराहे ॥ध्रु०॥
चिकुर निकर तन पसरल शैबल वड़वानल उर दाहे ।
मुकता विद्रुम विविध रयत पुनि भूषन-भार पसाहे ॥

---

१. मूल मे एहि ठाम टिप्पणी अछि 'बाह्य चेष्टाक'
२. मूलमे एहिठाम टिप्पणी अछि—'अन्तरक चेष्टाक वर्णन ।

उदित-सुधानिधि देखि बढ़य निशि लोचन जल परवाहे
सलिल तुषार शीत उपचारहुँ परम विपुल परिणाहे।
मलयानिल बहि लहरि उठाबय कोन परि करि अवगाहे।
पहुक समागम अबधि सुक्ला पार गमन उत्साहे ॥
प्रियतम नेह निबिड़ नाका निज सहचरि निपुन मलाहे।
अपन शील गुरु-जन धर्मोचित कुल मर्याद निवाहे ॥

कुन्दमाला—(जनान्तिक) आगे माँ! बहिनिक तरह तँ सत्ये कोना दँऽ भऽ रहलैन्हे। (प्रकाश) हय सङ्गी! जा लोक अबैये त एकटा और गीत गबै छी।

बटगवनी

पहु-मुख शरद-सुधाकर सजनी चाकर चौरस भाल।
देखि विकल गज गामिनि स० कामिनि भलि ततकाल ॥
बिम्ब अरुन रद-अञ्चल स० चञ्चल नयन विशाल ॥
शुचि अपाङ्ग-शर योजन स० भ्रू-धनु मदन अराल ॥
पाटलि सुरभि-निशासा स० नासा तूनी लाल।
करज पञ्चसर-सायक स० दायक उर-क्षत जाल ॥
पहुक चरण-युग मिस लय स० किसलय लेल रसाल।
करतल अमल कमल सम स० अनुगम बाहु मृढ़ाल ॥

कौमुदी—(जनान्तिक) हय सङ्ग। अःव एखन आन कोनो चर्चा उठावह। सखीक मन एहि चर्चा सँ और कोना दऽ भेल जाइ छन्हि। (प्रकाश) हय सखी! ओ महेशवानी तोहरा अबै छहु?

कुन्दमाला—हय कोन गीत एहन छैक जे तोहरा अबै छहु आ बहिन कें नहिं अबै छन्हि?

कौमुदी—(जनान्तिक) हय सङ्गी! एहि गीतक अन्तिम अन्तरा सुनि कँऽ बड़ करुणा होइअय परन्तु शक्य कोन? हाय रे कुलकन्याक ब्रत अथवा हमरा सखीक स्वभाव। (सचकितोत्कण्ठित) हमरा लोकनिक कतेक आगाँ चलि अबैत गेलहुं। (हाथ उठा कँ) गामक लोक एखन ओतहि अवैत अछि।

(पटीक्षेपें बाट पर ठाढ़ सागर ओ शिशिर देखि पड़थि)

सागर—हौ मित्र शिशिर! गीत स्वर सुनि जहिना ई हरिण सभ कान ठाढ़

Scanned by CamScanner

कयने स्तब्ध अछि तहिना हमरो मन मोहित भेल अछि।

शिशिर--तहिना हमरा भूखें मुँह दुखाइए।

कुन्दमाला—है सङ्गी ! बाट पर दु टा पुरुष गाछक दोगे देखि पड़ै अछि। (सुन्दर जकाँ देखि) है ई तँ चिन्हारे जकाँ बुझि पड़ै छथि।

कौमुदी—(जनान्तिक) हँ है सङ्गी, ई कमलाक घार सँ जे सखी कैं बाहर कैलथीन्ह सैह थिकाह परन्तु एखन सखी कैं जनु कहहून्ह (प्रकाश) आइ कतेक लोक महादेवक दर्शन करय जाइअय, जेना हमरा लोकनि देवनगरक मनुष्यक बाट तकै छी तहिना अपना-अपना गामक लोकक प्रतीक्षा करैत होयत क्यो।

सागर—(अकानि कँ) हौ शिशिर ! ई सभ देवनगर वासी कोनो भलमानुसक कन्हा बूझि पड़ैए।

शिशिर—औ जी हमरा भेल जे वनमानुषक कन्या, ताहि डरें पड़ाय लागल छलहुँ।

सागर—यावत् एहि सभक समाज ने अबैक ता हमरा उचित थीक जे एही ठाम ठाढ़ रही।

शिशिर—जहाँ एही सभमे ततेक विलमब यावत हाटमें लड्डुए बिका जायत।

सागर—बहुत विलम्ब ने हेते, बड़ निक तावत एकटा महेशवानी सुनह।

अब नहि झाँखब शिव शिव भाषब राखब हर हे रसना टेक।
ताप विमोचन भजब त्रिलोचन शोच न हर हे करब ततेक॥
तुअ श्रुत गायक[1] थिकथि विनायक दायक हर हे बुद्धि विवेक।
जे रहि आगत तुअ शरनागत लागत हर हे कलुग न एक॥
दर्शन पायब नयन जुड़ायब गायब हर हे सुयश गोटेक।
भव सुख लूटब दोषहुं छूटब टूटब हर हे बन्ध जतेक॥
निज कर निर्मल भरि सुरसरि जल शीतल हर हे करि अभिषेक।[2]
ककरहु सम्पति ककरहु निजमति मम गति हर हे तोह गोटेक॥

---

१. मूलमे 'नायक' छपल छैक। २. मूल मे 'अविवेक' मुद्रित छैक। कविवर जीवन झा स्वयं एहि अशुद्धि दिस ध्यानाकर्षण करैत म०म० मुरलीधर झा कें पत्र लिखने छलथिन। ओ पत्र प्रथम अंकक अन्तमे (मिथिला मोदमे) मुद्रित भेल छल। ई पाठ शुद्धि ओही पत्रक आधार पर कयल गेल अछि।

शिशिर—औ पण्डितजी ! गीत तीत तँ गावल परन्तु हमरा भूख तेहन लागल अछि जे कान दुखाइए (एड़ी अलगा कें ताकि) पड़ाउ पड़ाउ। ओहि वन सँ हरिण कें खेहाड़नें बड़का बाघ एम्हरहि दौलड़ अबैए, दैव रौ दैव ! आब कोना बाचब ?

सागर—(साकाङक्ष देखि) हौ शिशिर ! एतेक कोलाहल जनु करह, ओ स्त्रीगण सभ सूनति तँ व्याकुल भय जाइति, बाघ नहिँ थिक, ई चीता थिक। एकर एतेक कोन डर, केवल एहि हरिण कें मारय में उद्यत अछि, देखह तँऽ—

सूति ऊठल अछि बुभुक्षित अनपराधहुँ क्रोध।
हिनक सिरजल भक्ष्य मृग विधि के करत अवरोध॥
वेग सों धरती कपै अछि तत उड़ै अछि धूल।
समटि गात कराल दौड़ल पीठि धय लाङ्गूल॥

(उच्च स्वरें दबाड़ि)

देखऽ हम एकरा हटबै छी।

शिशिर—औ जी ! जहाँ हमरहि लग रहू, ई बाघ दाँत खिसोटनें इम्हरहि चल अबैए।

सागर—हौ शिशिर ! भला एहि हरिणक प्राण त बचलैक। ओकर पाछु छाड़ि देलक तँऽ ई चीता एम्हर आबि कें की कय सकत ? देखऽ तँ हरिणक चेष्टा।

कौषन चकित करय चित त्रास।
कौषन निहुड़ि चरै अछि घास॥
तैखन चपल अबै अछि[1] पास।
तैखन कूदि लगैछ अकास॥

(सोत्प्रेक्ष देखि)

ओ चीता हमरा लोकनिक डरें वा तोहरहि घिघिऐने पाँछा फिरल जाइअय।

---

१. मूलमे मुद्रित—'खै अछि'।

शिशिर—(चीता कें पड़ायल देखि) हा सार बाघ । हमरा दिश ने फिरि ताकह, पड़यलाह किए ?

नर्मदा—(अपनहि अपन) हा ! हम ककरा मूहें गीत सुनै छी ।

(दोहा)

श्रवन, सुनह सुचरित सखी वचन सुखद परिनाम ।
जनि त्वँह पर पुरुषक मुहें सरस रामहुक नाम ॥

(सागरक दिस देखि)

हाय ! हम आइ बताहि तँ ने भेलहुँऐं (आँखि मूँदि)

(दोहा)

लोचन, छह केवल बाँकट बाट बचाबक हेतु ।
जनि त्वँह पीतु अनियुक्त नर देखी उखाड़ह सेतु ॥

हरे हरे ! हे हमर हृदय ! ककरा पर तों एतेक लुब्ध छह ?

(दोहा)

कुल-तिय-हिय हो कूप सन दुराधर्ष गम्भीर ।
नहिं उतान डाबर जकाँ सकल सुलभ निज नीर ॥

(विचारक चेष्टा कय)

नहिं नहिं, ओहना अनुचित विषयें सन्निकर्ष हमरा हयत किए ? अथवा ई सुशील सुखी दुनू ओहना कें सापेक्ष देखति वा ऐं रीतिऐ ठाढ़ि किए रहति ?

(आँखि उघाड़ि)

ई तँ वैह थिकाह जनिका लय हमर माय बाप देवाराधन करै छथि । (गद्गद स्वरें प्रकाश)है सखी ! गामक लोक कते दूर अछि ।

कौमुदी—है सखी ! यावत् हमरा लोकनि बाघक डरें संधर्म भ कें कपै छलहुँ तावत् तँ त्वह डरैलीहै ने, आब एतेक कपै छह ?

कुन्दमाला—है सङ्गी ! जहिना बाघ देखलें हमरा रोमाञ्च होइ छल तहिना बहिनिक आँङ आब काँटो काँट भेल जाइ छन्हि ।

सागर—हौं शिशिर ! देखऽ तँ लोक सभ लग आयल हो तँ आगाँ चली ।

Scanned by CamScanner

शिशिर—ओ पण्डितजी चलू ओहि पलाशक गाछ पर चढ़ि कँऽ लोकहु कँ देखि देव आ अपना पूजा योग पातो तोड़ब, नीचाँ सँ हमरा बाधक डर होइए।

(दुनूक प्रस्थान)

कौमुदी—हे सखी! हमरहि सभक भागेँ ई युवा पुरूष एहि ठाम ठाढ़ भेलाह, ने तँऽ स्त्रीगणक कयल कोन उपाय सधैत?

कुन्दमाला—हेँ हे सङ्गी! सभ सँऽ अधिक तोँही[1] डरैलीह, तोहरहुसौं बढ़ि ओ अलबटहा बटुक घिघियालय। बहिनि तँ हमरहुँ सौँ थोड़ डरैलीह।

नर्मदा—किछु ने देखैलैक[2] तँ डरैतहुँ कथी सौँ?

(दोहा)

जकरा रक्षा कारणेँ प्रियतम सम्मुख ठाढ़।
तखन तकर अन्त:करण पड़त कोन दुख गाढ़॥

कुन्दमाला—हे सङ्गी! से सत्ये कहै छह।

दोहा

प्रिय सङ्गक अभिलाप सौँ भीरु करथि अभिसार।
बूझथि मन्दिर वन सूपथ कुपथ इजोत अन्हार।

नर्मदा—तोहरा लोकनि कँ सतत येह सभ रहै छहु, आव चलै चलह, हमरा गाछ तर उखम लगैअय। (विरहाति चेष्टा कय) हमरा वचावह।

कुन्दमाला—(गबैए)

लगनी।

पहिल सिनेह विशेष विरहिनी रे।
करथि न सखिहुक अनुनय कहिनी रे॥
अपनहि हेरथि अपन धन, परिजन धन सन रे की।
मदन दहन तप तनु दिन रजनी रे।
बचतिह कोन विध अभिनव सजनी रे॥
मलयानिल वह सनसन नगइन्ह छनछन रे की॥

---

१. मूलमे मुद्रित—'तोहो'। २. मूलमे मुद्रित–'देखलैक'

Scanned by CamScanner

चरण मृदुल जनु नवनरु छदने रे रे।
साहस जनि करु चलु वरु सदने रे॥

त्वहँ जेहि अरजब तनमन, थिक सेह जन धन रे की॥
सुमुखि निरखि तुअ देह रुचिरता रे॥
रहय न ककरहु मानस थिरता रे।

सुर नर पननाशन-गन, आरत खन खन रे की॥

कौमुदी—(जनान्तिक) हे सङ्ग ! हिनक दशा असह्य भेल जाइ छन्हि, आब आन कथा उठाबह (प्रकाश) वैह अपना गामक लोक अबैअय, हमरालोकनि वाट सौं कात छी, एहन ने हो जे संग छुटि जाय।

कुन्दमाला—हँ है सङ्ग ! यावत् बाट पर चलै चलवह तावत ओहो लोक आवत।

(सभ बहरायल)

प्रथम अङ्क समाप्त॥

Scanned by CamScanner

(कपिलेश्वरक बहि:प्रवेशमे मोदन झा ओ सागर मिश्र देखि पड़ै छथि)

मोदन—नमस्कार औ महाशय !

सागर—नमस्कार !

मोदन—धन्यभाग जे पुन: अपनेक दर्शन भेल ।

सागर—से निश्चय, कमलाक तटमे ठाढ़े ठाढ़ भेट भेल छल, तकरा आइ चारिम मास थिक ।

मोदन—हमरा लोकनि पत्र लिखल तकर उत्तर किएक ने देल ?

सागर—एहि कथाक उत्तर हम कोना लिखू वा पत्रहुमे छलैक जे "जौं पुन कहथि घटक पजियाड़" अथवा ओहना पण्डिक निर्दिष्ट विषय असम्मते ककरा हयतैक ।

मोदन—अपनहुँ अयलाहअय, भेट हयते !

सागर—हम तँऽ ऐखन अयलहुँ अछि, आज्ञा दी तँऽ शिव दर्शन करी ।

मोदन—अवश्य अवश्य, परन्तु पुन: कृपा कए भेट देब ।

(सागरक प्रस्थान सुन्दर मिश्र ओ घटकक प्रवेश)

मोदन औ पण्डितजी ! अहाँ काँ बड़ विलम्ब भेल !!

सुन्दर—हो ! घटक एक गोटा सोँ गप्प करऽ लगलाह, हमरा हिनका सौ काज छल तेँ ठाढ़ छलहुँ ।

मोदन—सागर मिश्र ऐखन महादेवक दर्शन करय गेलाहय ।

सुन्दर—बड़ उत्तम, तखन भेंट हयते ।

घटक—औ पण्डितजी ! भेंट हयत परन्तु सा……

(नेपथ्यमे गीत)

श्रद्धाऽभिधाय नाम नमश्चन्द्रमौलये ।
तिष्ठेदनुत्तमं न तमश्चन्द्रमौलय ।।
याचे भुजङ्गहारमुदारं मनोरथम् ।
रोचेत हन्त कामदमश्चन्द्रमौलये ।।

Scanned by CamScanner

सेवे तमेव पर्वताधि राज-कन्यका।
भूमौ समुन्नति स गतो दृश्यतेतराम्।
यो जायते हि नमश्चंद्रमौलये।
धाता हरिस्तथैव जलेशो धनाधिपः।
शक्रो बलि जहार यमश्चंद्रमौलये॥

सुन्दर—औ घटक ! कहै छलहुँ से कथा पुन कहू, मन्दिरमे क्यो कपिलेश्वर स्तुति गबै छलय तें हम ने सुनलें।

घटक—यैह कहै छलहुँ जे सागर मिश्र सौं त्रिविक्रम ठाकुरक उतेढ उत्कृष्ट।

मोदन—औ पण्डितजी ! हमरे विचाड़ें ई कथा अण्डा दिया कियेक तँऽ-

(कवित्त)

कुलहीन जमाय अधीन कुलीन सुता अनुताप सदा लहती।
बसि नीच मनुष्यक बीच तथोचित नीच कथा कहती सुनती॥
पठियार अगार अचार विचार विचारि विचारि व्यथा सहती।
परिदार समान जहाँ न तहाँ भरिजन्म कोना सुख सौं रहती॥

सुन्दर—हौ मोदन ! एतेक अगुताइ किए छह !! सागर मिश्रक परिचय त्रिविक्रम ठाकुर सौं न्यून कि हमरहु सौं ?

घटक—नहि नहि कन्याक उतेढ सौं तँऽ समै।

मोदन—मे तँऽ पजियाड़ो कहलन्हि, परन्तु अल्पव्ययमे यदि पँच काज हो से करी ने किए ?

सुन्दर—हौ मोदन ! कन्यादान विषयमे हमर मत सुनह।

(कवित्त)

उत्तम जाति जमाय असङ्गत कष्ट सुता सभकाल जनाउति।
सासु दयादिनि आदि अनादर वाद कथें कुल छोट गनाउति॥
जीठति जौं सहि गारि कदाचित् मातृ-पिता हितबन्धु कनाउति।
ई असमञ्जस हैत निरर्थक ऊंचक सङ्ग ज नीच बनाउति॥

और सुनह—

(दोहा)

सतत प्रशंसित सबहि कौं सङ्गत अपन सजाति।
के कहि सकत पिपीलिका गुरु वा लघु निज पाँति॥

Scanned by CamScanner

(दोहा)

सम समाज बसि विश्व मँ ककरो ह्वँछ न ह्रास।
छोट बनै छथि बट बलहुँ कय तारक तर वास॥

मोदन—औ पण्डितजी ! ई निश्चिते छल तखन घटकके व्यर्थ श्रम देलैन्हि[१] ! !

सुन्दर—हौ ! घटकक विचार व्यतिरेक सामर मिश्र हमरा सकुटुम्ब कोना निर्णीत होइतथि ?

घटक—बड़ उत्तम कहल जाइए, काजो तऽ हमर एतबय, आँगा अपना जे इष्ट हो।

मोदन—से यथार्थ।

सुन्दर—औ घटक ! एक तँ "दैवी घटकना" से पुनः शास्त्रानुरुद्ध गोत्र, तत्रापि समान कुल इत्यादि अभिलाषोपनीत बूझि हमरा बड़ आल्हाद भेल। जहाँ ई लियऽ (देबाक अभिनय कय) आब हम अपना गामक लोक केँ देखी जे आयल वा नहि।

(सुन्दर मिश्र जाइत छथि, त्रिविक्रम ठाकुर अबैत छथि)

घटक—आउ, अपनेक हेतु हम बहुत उद्योग कयल परन्तु काज सिद्ध नहि भेल।

मोदन—से निश्चय, हमहु यत्न कयल तथापि निरुत्तर कय देलन्हि।

त्रिविक्रम—कोन कारणेँ निषेध कयलन्हि से बुझितहुँ।

मोदन—"उत्तम जाति जमाय" इत्यादि तीनू पद्य सुनाय ओ निश्चय कयलन्हि जें कन्यादान सम्बन्ध समान जातिमे उत्तमोदर्क होइत छैक।

त्रिविक्रम—हँ बूझल (स्वगत) हो धिक्कार एहि उत्कर्षकत्र जे मनोरथ भङ्गलक (प्रकाश) औ घटक ! रुपैयाक चर्चा कयल कि नहि ?

(नेपथ्यमे गीत)

हरक चरण हम गहि गहि। माइ गे धनदहु सेवब नहि नहि॥१॥
पर सम्पति लय डहि डहि। माइ गे माथ दुखायब नहि नहि॥२॥

---

१. 'देलिएन्हि' उचित।

कुलुष पयोनिधि बहि बहि। माइ गे धर्म बिगाड़ब नहि नहि ॥३॥
निज परिजन वश रहि रहि। माइ गे हास करायब नहि नहि ॥४॥
अकथ अपन दुख कहि कहि। माइ गे मान गमायब नहि नहि ॥५॥
एहन मनुज तनु लहि लहि। माइ गे व्यर्थ वितायब नहि नहि ॥६॥
कुसुम विशिख शर गहि गहि। माइ गे पर मुख देखब नहि नहि ॥७॥
हृदय बिचाड़ल महि महि। माइ गे आन अपन इब नहि नहि ॥८॥

घटक—औ बाबू ! यद्यपि अपनेक उतेढ़ विचारलें टाकाक चर्चो करब उचित नहि छल तथापि हम अहाँक स्वरसें अभिप्राय सूचित कयलि-ऐन्ह परन्तु कहय लगलाह जे से करबाक रहैत तँ हुनका पँघ कँऽ लय अबितिऐन्ह, द्रव्य लेबाक कोन सम्भव—

(दोहा)

पिता आनि बर कन्यका वसन-विभूषण-युक्त।
सादर अर्पय मन्त्रवत से बिवाह विधियुक्त ॥

ई बाजि हमरा एतेक टाका (निर्देशपूर्वक) दय स्त्रीगणकेँ कपिले-श्वरक दर्शन कराबय गेल रहथि, आब अबैत हयताह। गीतक समाप्ति सँ बुझलौं जाइए जे मन्दिरसँ लोक बाहर भेल, वा हुनका सँ भेटक काजे कोन ? अहाँ कञ एहू सँ महोत्तम विवाह अनायास भइ सकैऐ। ई तँ केवल दैवानुरोधें विघटित भेल।

त्रिविक्रम—औ घटक ! से निश्चय,

(दोहा)

बुद्धिक बल केवल अहाँ कते करब करतूति।
अघटित घटना पटु जखन कमला देवी दूति ॥

(स्वगत) हे हृदयङ्गम सुन्दरि ! अहाँक अनुरूप वरलाभें कि हमरा ईर्ष्या भय सकैए ? नहि नहि परम हर्ष होइए—

(दोहा)

क्यो नहि ककरो मित्र जग क्यो नहि ककरो दुष्ट।
जकरा जकर सिनेह से तकरा तोँषे तुष्ट ॥

ओहना पवित्र हृदय काँ हम कृत्रिम प्रीति सँ कलुषित कयलें होइ तँ

Scanned by CamScanner

क्षमा करब। (प्रकाश) औ घटक ! एतटा पण्डितक विचार विश्वजनीने हयत। अतएव हमहुँ आब हुनके मतानुमोदन करै छिय।

घटक—बड़ उत्तम बिचाड़।

(पुनि नेपथ्य स्त्री गीत)

(प्रथम महेशवाणी वा चैत)

पावन पुरहर नाम वाम नहि कहतिह। (चैत) हो होरे।
जलनिधि-सम संसार पार कत लहतिह।।
पाबिहुँ पति वृषकेतु खेत नहि चहतिह।
केवल मुख विधुरेख निरेखि निबहति।।
अप्पन पुरहर लाँघद, पटकत लहतिह।
अन्नहु वस्त्रक हानि कानि दुख सहतिह।।
मेना होउ न बौरि गौरि गुन गहतिह।
सबहि अभय वरदान समान बिलहतिह।।

(द्वितीय चैत)

भेलहुँ शरण विनीत शीतकर भूषण हो हो रे।
हमर मनोरथ पूरि दूरि करु दूषण हो।।
केहन हयत परिणाम आम तरु मञ्जर हो हो रे।
बलहुँ बिरह संग्राम काम शर पञ्जर हो।।
दुर्गम देश दिगन्त कन्त गेल परिहरि हो हो रे।
कतेक सहब सन्ताप जाप कय हरि हरि हो।।
देखि विकल मन मोर कोरकित कानन हो हो रे।
चित चल चैतक चान आन पति आनन हो।।

(त्रिविक्रम जाइ छथि, सुन्दर मिश्र अबै छथि)

घटक—आयल जाओ, अपनेक भेंटक हेतु त्रिविक्रम बाबू कतेक काल बैसि ऐखन गेला हय।

सुन्दर—हँ थोड़ेक हमरा विलम्ब भय गेल, स्त्रीगणकेँ देवतामेँ जेहन श्रद्धा होइ छैक से बुझले अछि, ओँहीं सँ भेंट भेलैन्हि, सम वृत्तान्त वुझनहि हयताह।

Scanned by CamScanner

घटक—ओ पण्डितजी ! जेहने पँचलोक तेहने बुद्धिमानो छथि । अन्ततो-गत्वा अपनेक विचार कउ निश्छल अभिनन्दित कएलन्हि । आब हमहु जाइ छी, कन्यादानक उत्सवमे भेट करब ।

सुन्दर—अवश्य ।

(घटक जाइ छथि । कतिपय स्त्रीगण सहित नर्मदाक प्रवेश)

सुन्दर—(स्वागत) नेनिआ लोकनिक संग आनो गामक स्त्रीगण बुझि पड़ै-अय, तखन एहि ठाम हमर रहब अनुचित थिक । (प्रकाश)तोहरा लोकनि स्थिर होइ जाह, यावत् हम गामक लोकसँ भेँट कय चलबाक सङोड़ करै छिय ।

(सुन्दर मिश्रक प्रस्यान)

सरला—(कत्यायनी दिश देखि नर्मदाक प्रति) गै दाइ ई मौसी होइथुन्ह । हिनका गोड़ लगहुन्ह ।

नर्मदा—(जनान्तिक) अय माँ ! हिनकहि दँ कहैत रहै छी जे बड़ ज्ञानिनी छथि ? (प्रणामक अभिनय कय) अय मौसी ! कपिलेश्वरक समान अहाँक दर्शन भेल । आब लालसा जे किछु उपदेश कथा अहाँक मूहेँ सुनितहुँ ।

कत्यायनी—घर वर समुचित भेटहु । जोँ उपदेश सुनबाक कौतुक छहु तँ सावधान भऽ कऽ सुनह ।

(दोहा)

पालय पिताँ कुमारिकेँ भर्ता यौवन दन्द ।
वृद्धावस्था पर तनय नारि न हो स्वच्छन्द ।।

(नर्मदा प्रतिपाठ सुनबै अछि)

कात्यायनी—ई त कहलहु[1] परन्तु आगाँ सुनह ।

(दोहा)

पुरुषक रक्ष नारि नहि राखत जाथु कदापि ।
राखल चाहथि नारि जोँ अपना कउ नहि आपि ।।

---

१. 'कहलिअहु' उचित ।

Scanned by CamScanner

नर्मदा—अय मौसी ! तखन तकरो उपाय कहू ।

कात्यायनी— (दोहा)

मद्यपान पर्य्यटन पुनि तन्द्रा पति पर रोष ।
दुर्जन सङ्ग प्रवास येह छवटा नारिक दोष ।।

नर्मदा—बुझल जे एहि दोष सँ बाँचल रहिअ ।

कात्यायनी—हँ एहि दोष सँ बाँचि कैऽ ।

(दोहा)

काय वचन मन सों सदा जौं नहि चाहव अन्य ।
भेटत ओहू लोक पति एतहु कहाएव धन्य ।।

एकरहु मन रखिह । हमरा तोहरा लोकनिकें देखबाक छल से देखलहु । आव एखन जाइ छिय । कपिलेश्वर सँ आश रखै छी जे फेरि शीघ्र भेट हो ।

(कात्यायनीक प्रस्थान)

नर्मदा—हे सखी ! मौसीक सिखावल दोहा सभ तोहरा लोकनिकें अयलहु की नहिं ?

कुन्दमाला—ई सभ झट तोहरहि अबै छहु, भेलहु आव एकटा गीत गावह ।

नर्मदा—सुनह ।

(चैत)

नख मल्ली अनुबन्ध गन्ध वह मह मह रे ।होरे।
रहथ न सुनि मन धीर कीर पिक चह चह रे
उपवन सरस रसाल बाल तहँ मजरल रे ।होरे।
विरहि जनक हिय लागि आगि जनु पजरल रे ।।
जों अलियुग मधुपान गान कय नाचत रे ।होरे।
तों विरहिक मधुराति जाति नहि बाँचत रे ।।
नहिं थिक विमल तडाग राग भरि सरसिज रे ।होरे।
कय विरहिक अवदान बान सजु मनसिज रे ।।

Scanned by CamScanner

(नेपथ्यमे गीत-मेघ मल्लार)

सरस पवन बह शीतल, तीतल चीर निचोल।
हम पहु सँग वन झुलितहु, झुलितहुँ बैसि हिंडोल॥
घन ऋतु भूपति राजय, बाजय गर्जित ढोल।
आतप ऋतु रिपु जीतल, बीतल दुख भूगोल॥
रिम-झिम वरषय जलधर, हरषय हलधर टोल।
कुहुकि कतहु शिखि नाचय, माचय चहु दिशि घोल॥
लागय अधिक भयावन, सावन गहि सुकपोल।
करतल पर भरि यामिनि, कामिनि करथि कलोल॥

(कजरी)

कोन परि खेपब वरषा दुरदिन बालम हमर बसय परदेश।
बिजुली चमकै दामिनि दमकै झमकै पानि सुरेश॥
योगिनि बनि धनि चललि वियोगिनि सोहरय फूजल केश।
वन-वन धावय कतहु न पावय अपना पहुक उदेश॥
जागल मनसिज त्यागल परिजन दैवक लागल ठेश।
जौँ एहि जींवन पहु नहि भेटत भेटत कोना कलेश॥

(कजरी)

जौँ हम बारि वयसमे छाड़ि खेडि सभ आखर सिखितौँ ना।
तौँ पुनि अपन मनोरथ पहुकञ अपनहिँ लिखितौँ ना॥
जौँ हम गुनमन्ती नारी तौँ चित्रो सिखितौँ ना।
तौँ पुनि अपन प्रान-पति मूरति अपना बाँहिमे लिखितौँ ना॥
जौँ सामुद्रिक विद्या बालापनमें सिखितौँ ना।
तौँ पुनि अपना प्रिय आगमन सगुन हम अपनहि लिखितौँ ना॥
जौँ म गनक बजाय गनित परिपाटी सिखितौँ ना।
तौँ पुनि अपनहि सुदिन बनाय पहुक प्रति अपनहि लिखितौँ ना॥

(कजरी

सखि कोर पहु सँग मनक हुलास गेल
विषय विलास गेल ना॥

Scanned by CamScanner

ऐहि दिन सौं आबह तौंह मारुत,
एहि दिश पहु परवास गेल ।विषय—।।
भूषन वसन देह नहि भावै
षटरस (।।।) विसयागेल विषय—।।
कुल परिजन अरिजन सम लागय
सहचरि स-रभस हास भेल ।विषय—।।
बलहुँ लाज कय काज बिगाड़ल
कनेक लै बलम उदास भेल ।विषय।।
धिक धिक यौवन धिक सुन्दरता
जौं पहु आनक पास गेल ।विषय—।।
वायस बैस उचरि मोर आँगन
आबय पुनि हिय आस गेल ।विषय—।।

(मल्लार)

बीतत कोन विधि वरषा ।।गे सहिया।।ध्रु०।।
बरिसय घनरस पित भेल परबस। हमरा मन अपकरषा ।।गे सहिया ।।
जलधर रिमझिम तनु भेल सिमसिम। बाढ़ल अन्तर तरषा ।गे सहिया ।।
जौं पहु पायब दिवस गमायब। काटब घर वरु चरषा ।।गे सहिया ।।
मुग्ध विरहिनि रे कहिय न कहिनी रे। तदपि पयोद अमरषा ।।गे सहिया ।।
जाया पति जन से थिक घनघन। जे निबहय निज काषा ।।गे सहिया ।।
होथि वियोगिनि घन श्रृतु रोगिनि। संयोगिनि मन हरषा ।।गे सहिया ।।
कत परतारब मन बहटारब। रहल न अब उर घरषा ।।गे सहिया ।।
तनु भेल छकछक हिय करु धकधक। विरहानल उतकरषा ।।गे सहिया ।।

बीतत कोन विधि बरषा ।।

कविवर

जीवन झाक स्फुट गीत

Scanned by CamScanner

स्फुट गीत

(१)

विहाग ।

दिन पुन करह भुवनेशी, तोहरे वश सभ देशी ।।ध्रुव।।

तनु सुषमा अनुहरय देखि तुव, प्रात भानु परिवेशी ।
व्यापल रूप सकल महिमण्डल, सौम्य मनुज अपदेशी ।।१।।

तारा निकर चारु चूड़ामणि, लसित गगनमय केशी ।
शारद शुचि अष्टमी कलानिधि, रुचि शिर मुकुट निवेशी ।।२।।

मिथिला देश बसय भूवनहि बिच, तोँहु थिकिहु भुवनेशी ।
तोँकत मिथिला देश निवासी, मानव एहन कलेशी ।।३।।

वर मुदा कहिया धरि उगहव, कोमल हाथ-निवेशी ।
वेरिहुँ पर तोँ अपन भक्त कँ, अभिलाषा अनुदेशी ।।४।।

तेना हाथ निज धरिय माथ पर, मम अमियाभिनिवेशी ।
यहि कराल कलि अन्धकारि पथ, हम ने यथा अब ठेशी ।।५।।

शुम्भ-निशुम्भ सदृश दुर्जन कँ, छाड़िय जनि लव लेशी ।
मारिय अदय अवश्य चण्डिके ! पाश कण्ठ बिच पेशी ।।६।।

Scanned by CamScanner

चढ़ि मनुष्य अज्ञान मतङ्गज, पर अछि पापावेशी ।
तकर उपाय हाथ तुअ अङ्कुश, धर्मक पथ निर्देशी ॥७॥
यदि करुणाकय भक्तवत्सले ! कुशल बुद्धि उपदेशी ।
तौं सिनेहमय दीप हमहुँ प्रति, मानव पिय गृह लेशी ॥८॥[1]

(२)

तनु-रुचि तप्त कनकहुँ निन्द, सकल सुख-कुरुविन्द ॥ध्रु०॥
सुमिरि मन दारिद्रय नाशन, जाहि सुमिरथि पाकशासन ।
क्षीर सिन्धु-सुताक आसन, अरुण-दल अरविन्द ॥
तेज-बल विकसित अनुक्षन, करथि सौरभ लोभ धए मन ।
वेदपाठक छलें घन घन, चतुर्वदन मिलिन्द ॥
सतत रक्षा हेतु पासा, राखि मानस जनिक आशा ।
भुजग-फणतर करथि वासा, सुख-शयित गोविन्द ॥
कर अभय वर कमल युग धरु बनु अमृतघट सतत शुचितर ।
क्षौम पहिरिए जीवनहु घर, करिअ अपद अलिन्द ॥[2]

(३)

गीत—राग सोरठा ।

मोर प्रभु हयत कखन धरि भोर ॥ध्रु०॥
कल्प समान राति नहि बीतय तीतय तनु दृग-नोर ।
फिरि करवट पाँजर दुख तारा गनि दुख आंगुरि पोर ॥१॥

१, मिथिला-गीताञ्जलि. सम्पादक, यदुनाथ झा 'यदुवर', १९२६, पृ० ३९-४० । मिथिलामोद, उद्गार ९, वर्ष १, सन १३१३, पृ० १२-१३

२, मैथिली-पद्य-संग्रह, सम्पादक-रमानाथ झा, १९४१, पृ०-७० ।

अन्धकार में बूझि पड़य नहि के श्यामल के गोर।
प्राण हरय पर और वृत्त अछि लूटि अन्न-धन चोर ॥२॥

बड़द बेची प्रतिवेशी सुतला काहि करिय अब शोर।
दूबर देह गेहमे भयवश ससरय डांड़क डोर ॥३॥

दय दर्शन हर हरिय निविड़तम हर्षय नयन चकोर।
भालचन्द्र प्रतिपालब जीवन काल बितै अति घोर ॥४॥

(४)

गीत—वसन्त राग। एकताली ताल।

हे हरि मयूर पिच्छावतंस,
हित करब रमेश्वरसिंह वंश ॥ध्रु०॥

तोह यथा मुदित हति पाप-कंस।
जातक तथैव करु अरिक ध्वंश ॥१॥

सन्तमस टारि जस उदित हंस।
तस बढ़थु सतत विदलित-नृशंस ॥२॥

जल पय विवेक कर यथा हंस।
से नीति करथु सें जगप्रशंस ॥३॥

मन जीवन नृप थिक विष्ण अंश।
मोचथु सुर-नर-पितु-दुःख फँस ॥४॥

१, मिथिलामोद, उद्गार, २५-२६,

Scanned by CamScanner

(५)

सवैया

भेल भला मिथिलामहि 'किङ्क' रमेश्वर सिंह के औरस लाला।
जागल भाग कङ्गालक भाल अरातिक आनन लागल काला ॥
गाबल से मुँह माङल पावल पीत पटम्बर लाल दोसाला।
जीवन वित्त यथा रुचि लूटल पावल छूटल कोशक ताला ॥१॥

Scanned by CamScanner

मैथिली अकादमी, पटनाक

किछु महत्वपूर्ण एकांकी, नाटकक प्रकाशन

(मूल्य रूपैयामे अछि : ऊपर अजिल्द, नीचाँ सजिल्द)

एकांकी-संग्रह	
प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' (सं०)	12.00
मणिपद्म (,,)	15.00
श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी (,,)	
उत्तर रामचरित्र	6.00
मुन्शी रघुनन्दन दास (अनु०)	8.00
झुमकी	
ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'	4.00
सावित्री सत्यवान	6.00
महाकविलाल दास	8.00
पहिल सांझ	6.00
श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी	8.00
वरदान	5.00
श्री गौरी कान्त चौधरी 'कान्त'	
चरैवेति (काव्यं नाटिका)	10.00
श्री सोमदेव	12.50
दिग्विजय	5.00
श्री काशीनाथ मिश्र	
मणि मंजरी	8.00
सं० डा० चन्द्रधर झा	10.50
परिजात हरण	8.00
सं० प्रो० जयदेव मिश्र, योगानन्द झा, डा० मदनेश्वर मिश्र	11.00

आवरण मुद्रक : श्री जानकी प्रिंटिंग प्रेस, भिखना पहाड़ी, पटना—४

• कविवर जीवन झा रचनावली •

Scanned by CamScanner